आज़ादी का अमृत महोत्सव

महानदी

''नराकास'' भिलाई–दुर्ग की गृह पत्रिका

2021

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विशेषांक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भिलाई – दुर्ग (छ.ग.)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

: संरक्षक :

श्री अनिर्बान दासगुप्ता

निदेशक प्रभारी
भिलाई इस्पात संयंत्र एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग (छ.ग़.)

: मार्गदर्शक :

श्री के.के. सिंह

कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन)
भिलाई इस्पात संयंत्र

: संपादक :

श्री सौमिक डे

उप महाप्रबंधक (संपर्क व प्रशासन एवं प्रभारी राजभाषा)
भिलाई इस्पात संयंत्र एवं
सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग (छ.ग़.)

: संपादक मंडल :

श्री भारत भूषण वर्मा

महाप्रबंधक
भारत संचार निगम लिमिटेड, दुर्ग

श्री एस के राजा

महाप्रबंधक
सेल सेट, भिलाई

श्री पंच राम साहू

वरीय सांख्यिकी अधिकारी
राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, दुर्ग

श्रीमती अनुराधा धनांक

उप मंडल अभियंता
भारत संचार निगम लिमिटेड, दुर्ग

श्रीमती भावना चाँदवानी

वरिष्ठ प्रबंधक
यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कं. लि. भिलाई

श्री जितेन्द्र दास मानिकपुरी

सहायक प्रबंधक (संपर्क व प्रशासन – राजभाषा)
भिलाई इस्पात संयंत्र

मुख्यपृष्ठ अभिकल्पन

वी.के. सोनी
शिवि कार्मिशयल, दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 9174834444

संपादन सहयोग
नराकास सचिवालय के अधिकारी एवं कार्मिक

महानदी

राजभाषा गृह पत्रिका–वर्ष 2022
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई – दुर्ग (छ.ग.)

आज़ादी का अमृत महोत्सव विशेषांक अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	नाम	पृष्ठ नं.
1	जागृत युवा-उत्तिष्ठ भारत	प्रशांत तिवारी	7
2	उलझन	कुणाल झाड़े	8
3	शब्द	डॉ. श्वेता चौबे मधुलिका	9
4	सुरक्षा आह्वान	अभिषेक साहू	9
5	पर्यावरण	नीलकंठ साहू	10
6	फिर लौट आया बचपन	शीतला प्रसाद	10
7	आज़ादी का अमृत महोत्सव	अखिलेश कुमार ठाकुर	11
8	पहली बारिश	पारमिता महान्ति	11
9	अनमोल बूँद	देवकी बिष्ट	12
10	मज़दूर हूँ मैं	डॉ. मृदुला चतुर्वेदी	12
11	कोरोना की विभीषिका	श्रीमती अनुराधा धनांक	13
12	हमारी राजभाषा हिंदी	छगन लाल नागवंशी	14
13	कहानी, महुआ	–	16
14	स्वाभाविक बनें	रानिनी गुरव	18
15	मैं बेचारा हूँ	पी.आर. साहू	20
16	कीप क्वाइट (शांत रहें)	–	20
17	गीता का योग दर्शन	एस.के. राजा	21
18	पेड़ का दुःख	राजू कुमार शाह	22
19	मेरे प्रिय कवि ''निराला''	नैन्सी प्रसाद	23
20	जल संरक्षण में मानव एवं संयंत्र की भूमिका	मनोज कुमार	25
21	करा लें क्यों है हमारी सोच में अंतर ?	श्रीमती इंदरजीत कौर	26
22	कोविड 19 का भारत में पर्यावरणीय प्रभाव	नेहा साहू	31
23	रक्षक और भक्षक	रितेश कुमार कसारे	33
24	सीनियर	प्रवीण कुमार रघुवंशी	34
25	स्वामी दयानन्द के स्वतंत्रता विषयक विचार	डॉ. थानसिंह हिरवानी	35
26	आज़ादी की मशाल जलाने वाले संत	डॉ. अजय आर्य	37
27	क्रैश हेल्मेट	विजय कुमार वर्मा	41
28	राजभाषा हिंदी के विकास बिन	सौरभ सिंह	41
29	हिंदी है - राजभाषा हमारी	राकेश श्रीवास्तव	42
30	आसान है सरकारी कर्मी को, भ्रष्ट बोल देना	–	43
31	पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव	–	44
32	मौन सब, फिर शोर क्यों है ?	–	46
33	कोविड 19 का भारत में तकनीकी प्रभाव	शिवम् कृष्णात्रेय	47
34	शाम हो चली है।	अलंकार समद्दार	50
35	जनगणमन हम सब मिलकर समवेत स्वर में गाएँ	छगन लाल नागवंशी	50
36	भिलाई औद्योगिक विकास का अद्भुत संगम	शिवम् कृष्णात्रेय	51
37	छत्तीसगढ़ी संस्कृति एवं आम लोक जीवन	पुरेन्द्र कुमार ठाकुर	53

टिप्पणी :

पत्रिका की रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। मौलिकता एवं अन्य विवादों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपर्क सूत्र :

राजभाषा विभाग–313–ए, तीसरा तल, इस्पात भवन,
भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई नगर (छ.ग.) – 490 001

हरीश सिंह चौहान
सहायक निर्देशक (कार्यान्वयन)
एवं कार्यालयाध्यक्ष
HARISH SINGH CHAUHAN
ASSTT.DIRECTOR (IMPLEMENTATION)

भारत सरकार

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य)
निर्माण सदन 52ए, अरेरा हिल्स,
कमरा नं. 206, भोपाल (म.प्र.)
462011
फोन : 0755-2553149

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि, आपकी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति हिंदी पत्रिका ''महानदी'' का ''आज़ादी अमृत महोत्सव'' विशेषांक प्रकाशित करने जा रही है। मुझे प्रसन्नता है कि, आपकी समिति मात्र औपचारिकता का निर्वहन नहीं करती अपितु राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु नियमित रूप से पूरे वर्ष भर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन भी करती है। यह कहते हुए भी मैं गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ कि, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के प्रतिनिधियों में यह विशिष्ट ऊर्जा भरपूर मात्रा में उपलब्ध है एवं यह निरन्तर बनी रहनी चाहिए।

विश्व में भारत भूमि में सर्वप्रथम सभ्यता एवं संस्कृति का उदगम हुआ, ऐसे देश की भाषाओं की जड़ें कितनी गहरी एवं समृद्ध हो सकती है। भारत सरकार के सभी सरकारी कार्यालयों में सरकारी कामकाज में सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग किया जाए, ताकि यह सभी के लिए इनका प्रयोग बहुआयामी हो सके। हिंदी एक विश्व भाषा है और ज़रूरत इस बात की है कि, हिंदी में अधिकाधिक मौलिक, रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्य हों।

हिंदी में कार्य करने का यह अर्थ नहीं है कि, दूसरी भाषाओं की उपेक्षा हो। हम दूसरी भाषा सीखें, अच्छी बात है परन्तु राजभाषा में काम कर गर्व की अनुभूति करें। मैं अपनी ओर से आपकी समिति को बधाई देता हूँ कि हिंदी के कार्यान्वयन में लगातार प्रयासरत है और इस पत्रिका के माध्यम से पाठकों को राजभाषा संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर रही है।

''आज़ादी का अमृत महोत्सव'' के उपलक्ष्य में इस विशेषांक को प्रकाशित करने के लिए मैं सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए आग्रह करता हूँ कि, वे आपकी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को पूर्व की भांति ही सहयोग प्रदान करते हुए राजभाषा का अनवरत प्रवाह बनाए रखें। पत्रिका के अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

13.1.22

(हरीश सिंह चौहान)

अनिर्बान दासगुप्ता
निर्देशक प्रभारी
ANIRBAN DASGUPTA
Director In-charge

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

''नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग'' की पत्रिका 'महानदी' का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। नराकास, संस्थानों के सदस्यगण की लेखनी से उपजी रचनाएँ उनके हृदय के उद्‌गार हैं। महानदी के ''आज़ादी का अमृत महोत्सव'' विशेषांक में प्रकाशित रचनाएँ न केवल भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य के विषय में रचनाकारों के विचारों को प्रतिबिंबित करती है, वरन देश के प्रति उनके आत्मिक जुड़ाव, भारत भूमि के प्रति उनके लगाव और समर्पण के साथ ही साथ राष्ट्र के प्रति उनके गहन चिंतन को भी परिलक्षित करती हैं।

भाषा की क्षमता समस्त प्राणियों में केवल मनुष्य के पास है, और अपनी भाषा के माध्यम से अपनी मातृभूमि के विषय में अपने विचार प्रकट करना गौरव की अनुभूति देता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि, ''आज़ादी का अमृत महोत्सव'' विशेषांक के माध्यम से रचनाकारों और पाठकों के हृदय में भारत माता के प्रति समर्पण की भावना का न केवल संपोषण होगा वरन राष्ट्र के प्रति उनके चिंतन को भी एक नई ऊर्जा एवं दिशा मिलेगी ।

राजभाषा हिंदी के प्रति हम सभी का यह अनुराग लेखनी के माध्यम से सदैव प्रस्फुटित होता रहे इन्हीं शुभकामनाओं के साथ..... जय हिंद, जय हिंदी।

(अनिर्बान दासगुप्ता)

के.के. सिंह
कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन)
भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

लेखन एक बौद्धिक कार्य है, जिसके माध्यम से विचारों को अभिव्यक्ति मिलती है, और जब यह लेखन राष्ट्र के विषय में हो, तब स्वतः ही मनोमस्तिष्क में महान विचार आने लगते हैं। पूर्ण विश्वास है कि, "आज़ादी का अमृत महोत्सव" विशेषांक में समाहित रचनाएँ पाठकों के हृदय में राष्ट्र के प्रति नवीन चिंतन जागृत करने के साथ ही साथ स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के त्याग व बलिदान का पावन स्मरण करने तथा देश के प्रति निष्ठा व समर्पण का भाव जागृत करने में अवश्य ही सफल होंगी।

पत्रिका 'महानदी' केवल एक पत्रिका ही नहीं है, वरन यह "नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग" के समस्त सदस्य संस्थानों के मध्य अपनापन व सौहार्द को सशक्त बनाने वाली एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी है। विभिन्न संस्थानों में कार्यरत साथियों के विचारों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है पत्रिका 'महानदी'।

"नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग" के प्रकाशनों में सदैव ही उत्कृष्टता की गौरवशाली परंपरा रही है, आशा है कि, पत्रिका 'महानदी' का यह अंक भी उत्कृष्ट एवं संग्रहणीय होगा।

शुभकामनाएँ।

के के सिंह
(के.के. सिंह)

सौमिक डे
उप. महाप्रबंधक
(संपर्क, प्रशासन एवं राजभाषा प्रभारी)
Soumik Dey
DGM (L & A) I/c Rajbhasha

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

भाषा ही वह माध्यम है, जिसकी सहायता से हम अपने भावों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं, संवाद व संप्रेषण करते हैं। भाषा हमारी जितनी परिष्कृत शुद्ध व प्रभावी होती है, संवाद व संप्रेषण में हमें उतनी ही सरलता होती है। लेखनी के माध्यम से विचारों को व्यक्त करने से ही साहित्य का सृजन होता है और जब साहित्य सृजन राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत हो तो यह साहित्य स्वयमेव उत्कृष्ट हो जाता है।

आज हम सब भारतवासी देश को स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वें वर्ष के उपलक्ष्य में ''आज़ादी का अमृत महोत्सव'' के उल्लास से सराबोर हैं, ऐसे में देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले अमर बलिदानियों का पावन स्मरण करना, त्याग व संघर्ष के माध्यम से अपना जीवन होम कर देने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद करना और आने वाले समय में उनके त्याग बलिदान और संघर्ष को व्यर्थ न जाने देने के संकल्प के साथ राष्ट्र निर्माण के लिए प्रतिबद्धता के साथ संकल्प लेना आज समय की मांग है।

''आज़ादी का अमृत महोत्सव'' विशेषांक में सम्मिलित रचनाओं के माध्यम से हमने यही प्रयास किया है कि, हम ना केवल भारत माता के अमर सपूतों का पावन स्मरण करें वरन देश की गौरव पताका को और अधिक ऊँचाईयों तक ले जाने के लिए दृढ़ संकल्पित हों।

राजभाषा हिंदी देश की उन्नति में सहायक है, हिंदी के माध्यम से कार्य सरल, सुगम और सहज हो जाते हैं। हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन के क्रम में ''नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग'' की पत्रिका महानदी का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कड़ी है। साहित्य सृजन करने से रचनाकारों को लेखन के द्वारा हिंदी भाषा को बेहतर बनाने का अवसर प्राप्त होता है। आशा है कि, 'महानदी' का ''आज़ादी का अमृत महोत्सव'' अंक अपने समस्त उद्देश्यों में सफल सिद्ध होगा।

(सौमिक डे)

जितेन्द्र दास मानिकपुरी
सहायक प्रबंधक
(संपर्क व प्रशासन-राजभाषा)
भिलाई इस्पात संयंत्र

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संपादकीय

भारत को स्वाधीनता दिलाने में हिंदी की बहुत ही महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय भूमिका रही है। क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने अपने संदेशों के आदान–प्रदान के लिए अधिकांशतः हिंदी को ही चुना, ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा,'' ''स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'' जैसे राष्ट्रव्यापी, क्रांतिकारी नारे हिंदी की अखिल भारतीय स्तर पर व्यापकता और स्वीकार्यता को प्रमाणित करते हैं।

स्वातंत्रयोत्तर काल में भी ''जय जवान, जय किसान'' जैसे उद्घोष हिंदी में किए गए। हिंदी में संवाद व कार्यव्यवहार सरल है, हिंदी के परिमार्जन में लेखन सदैव ही सहायक सिद्ध होता है। ''नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग'' की पत्रिका महानदी में प्रकाशनार्थ साहित्य लेखन से रचनाकारों के हृदय में हिंदी के प्रति अनुराग उत्पन्न हो एवं हिंदी भाषा में पढ़ने से पाठकों को हिंदी समझने में आसानी हो, यह तो उद्देश्य है ही, साथ ही स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्षो बाद जनमानस की विचारधारा व राष्ट्र के प्रति चिंतन को पाठकों तक पहुँचाना भी एक उद्देश्य है।

आशा है कि, पाठकों व रचनाकारों के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना के साथ हिंदी के प्रति प्रेम जागृत करने में पत्रिका अवश्य ही सफल होगी ।

शुभकामनाओं सहित।

जितेन्द्र

(जितेन्द्र दास मानिकपुरी)

जागृत युवा – उत्तिष्ठ भारत

आप आए इस जगत में, जगत हँसे तुम रोय।

ऐसी करनी कर चलो, आप हँसे जग रोय।

उपरोक्त पंक्तियों को चरितार्थ कर आज का युवा अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुऐ सकारात्मक भूमिका के साथ राष्ट्र के पुनर्निर्माण हेतु तत्पर है। आज यह युवा मन, वायु के समान प्रचंड ऊर्जावान व दृढ़ निश्चयी होकर आशावादी विचारों के साथ समाज में अपनी नई पहचान कायम करना चाहता है। जिससे भारत को वह विश्व गुरू के रूप में पुनः स्थापित कर सके। वर्तमान में यह जागृत युवा पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त कर मज़बूत कदम के साथ सफलता का वरण करते हुये इन पंक्तियों का अनुसरण कर रहा है:–

कई जीत बाकी हैं, कई हार बाकी हैं, अभी तो ज़िंन्दगी का सार बाकी है।

जिन्द़गी की असली उड़ान अभी बाकी है, जिंन्दगी के कई इम्तहान अभी बाकी है।।

अभी तो नापी है मुट्ठी भर ज़मीं हमने, अभी तो सारा आसमां बाकी है।

यहाँ से चले हैं नयी मंजिल के लिए, ये एक पन्ना था, अभी तो किताब बाकी है।।

सफलता प्राप्ति के मार्ग में बाधाएँ आएंगी ही, क्योंकि सोना भी आग में तपकर ही दमकता है, अतएव कवि की ये पंक्तियाँ हमें प्रेरित करती है :–

वह पथ क्या पथिक परीक्षा क्या, जिस पथ पर पग–पग शूल न हो।

उस नाविक की धैर्य परीक्षा क्या, जब धाराएँ प्रतिकूल न हों।।

इन पंक्तियों से प्रेरित एक उदाहरण अहमदाबाद के तीन दृष्टिहीन दोस्तों की हैं, जिन्होंने आत्मविश्वास के दम पर खुद की राह बनाने की ठान ली इन तीनों दृष्टिहीन दोस्तों ने कॉल सेंटर की नौकरी रूपये 6000/– के मासिक एवं बमुश्किल दो साल अनुभव के बाद नौकरी छोड़ अपनी खुद की कंपनी बनाने का फैसला कर लिया। अहमदाबाद के ये नयन पटेल, सोनार एवं इरशाद मंसूरी तीनों ने मिलकर कंपनी 'विराट कम्यूनिकेशन' स्थापित की, जो टेलीकम्यूनिकेशन का काम करती है। जो दो ही महीने में दो लाख रूपये आवक के साथ 15 दृष्टिहीन कर्मचारियों के स्टाफ की कंपनी बन गई है। इनका इरादा 60 लोगों की टीम बनाने का है। इस प्रकार इन युवाओं के पास भले ही दृष्टि नहीं हैं पर विज़न तो है कि खुद को सक्षमकर देश में अग्रणी रहना है।

ऐसे ही सफल युवा उद्यमी जिन्होंने लोगों को प्रेरित किया है, जिनमें 'फ्लिप कार्ट' के श्री सचिन बंसल एवं बिन्नी बंसल, जिन्होंने ऑनलाइन शॉपिंग को नई पहचान दी है। इसी तरह 'पेटीएम' के श्री विजय शेखर शर्मा जो यू.पी. के छोटे से कस्बे से हैं, ने 'कैश लेस' इंडिया के लिए नए डिजिटल कैश की अवधारणा को जन्म दिया और युवाओं को कैरियर की नई राह दिखाई। इसी प्रकार 'स्नैपडील' के श्री कुणाल बहल, रोहित बंसल तथा 'इनमोबी' के संस्थापक श्री नवीन तिवारी और 'ओला कैब्स' के श्री भाविश अग्रवाल जैसे युवा उद्यमियों ने भारत को विश्व में एक नई ऊँचाई और पहचान दी है।

इसी प्रकार भारत ऐसे ही कर्मवीर युवाओं के प्रयत्न से निरंतर आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक प्रगति की ओर अग्रसर है। विश्व में भारतीय युवाओं का लोहा सभी स्वीकार करने लगे हैं। इस प्रकार संसाधनों की कमी को अपने कठिन परिश्रम द्वारा आज का युवा प्रतिकूलताओं को अनुकूलताओं में परिवर्तन करने का साहस रखता है। वह भागीरथी प्रयास द्वारा लक्ष्य को हासिल कर लेता है तथा सफलता का वरण करता है।

आज भारत 'आन्तरिक कार्यक्रम' में एक साथ सर्वाधिक 104 सेटेलाइट प्रक्षेपित कर विश्व में नए रिकार्ड के साथ वर्ल्ड लीडर की भूमिका में प्रतिष्ठित हुआ है। साथ ही साथ भारत ने 'योग एवं आध्यात्म' द्वारा विश्व गुरू बनकर सभी देशों को शांति का मार्ग प्रशस्त कर आतंक रहित एक नए वैचारिक क्रांति को जन्म दिया है। भारत ने विश्व को मूल्यविहीन विकास के स्थान पर मूल्यपरक, भेदभाव रहित सभ्य समाज के साथ विकास की अवधारणा को समझाया है। पूज्यनीय दीनदयाल उपाध्यायजी के 'एकात्म मानव वाद' के दर्शन अर्थात समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास हो तथा पर्यावरण की सुरक्षा और उसका संतुलन सही बना रहे, विश्व में इसे अपनाने पर ज़ोर दिया है। इसी कड़ी में ऐसा भी सतत प्रयास जारी है, जिससे समूचे विश्व में प्राकृतिक पर्यावरण संतुलन के साथ जलवायु में पवित्रता बनी रहे ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ जल और शुद्ध हवा निर्बाध रूप से मिलती रहे।

इस प्रकार भारत के युवाओं ने, विश्व के अन्य देशों में भी अपने देश के गौरव और मान–सम्मान को बढ़ाया है तथा अपनी अग्रणी पहचान बनाई है।

युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत स्वामी विवेकानंद जी की इन पंक्तियों को आज के युवाओं ने अब चरितार्थ कर लिया है कि :– 'उठो, जागो, और तब तक मत रूको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो'।

सच में आज युवाओं का जागृति ने उत्तिष्ठ भारत की संकल्पना और विकास की अवधारणा को नई पहचान दी है तथा दृढ़ संकल्प के साथ सकारात्मक होकर सफलता के नए आयाम लिख रही है। विचारों को समाहित करते हुए :– ''क्या हार में क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत मैं।''

कर्तव्य पथ पर जो भी मिला, यह भी सही वह भी सही

वरदान नहीं मांगूगा, मैं हार नहीं मानूंगा। अब हार को पराजित कर जीत का वरण करना सीख लिया है।

वंदे मातरम।। जय हिन्द।।

उलझन

कुछ कहना भी गुस्ताखी,
कुछ न कहना भी गुस्ताखी,
कहें या ना कहें, बड़ी उलझन है।
कुछ ना काम है कुछ सरे आम है,
सन्नाटा भी है आहट भी है,
समझाइश है, फरमाइश है, नुमाइश है, कभी कभी आजमाइश है
खामोशी है, रुदाली है, सुकून भी है, बदहाली भी है
ज़ोर है, पुरज़ोर है, पर कभी–कभी लगता है, कि कमज़ोर है।
ख़्वाब है कि हकीकत है, या न जाने कौन सी मुसीबत है
प्रयास है, या अनायास है, या सिर्फ आभास है
क्या कहें, शायद हम ही बदहवास हैं।

प्रशांत तिवारी,
वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक,
शाखा विक्रय कार्यालय,
भिलाई (छ.ग.)

कुणाल झाड़े
इंजीनियर
राइट्स लिमिटेड
मध्य क्षेत्र निरीक्षण कार्यालय, भिलाई
मोबाइलः 9179172454

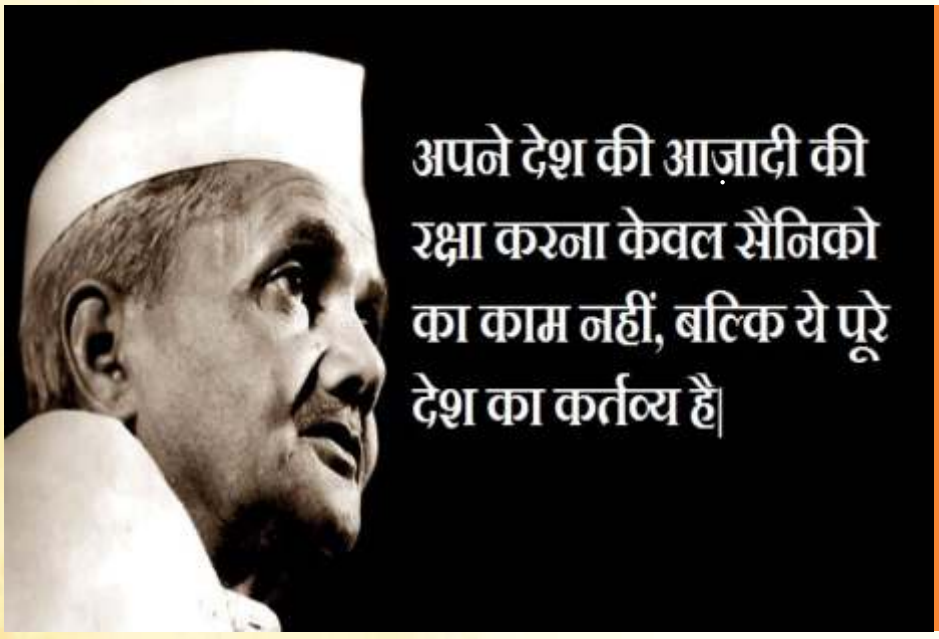

ना भूलो तुम जलियाँवाला बाग
ना भूलो तुम चौरी-चौरा,
इस स्वतंत्रता दिवस
पर याद करो उनको
ज़िन्होंने देश के
लिए न्यौछावर कर दिया
अपना ज़ीवन पूरा ।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

शब्द

शब्द शब्द से होते अविरल
शब्द शब्द से खोते हैं,
शब्द शब्द में छुपी कहनी
शब्दों से ही चलती है।

शब्द एक, रूप अनेक
शब्दों की हेरा – फेरी है,
कोई शब्द घायल करे
कोई अपनत्व की ढेली है।

शब्द बाण से चले निरंतर
समझ न पाते नैना कुंडल,
कभी निःशब्द भी कह जाते हैं
सूखे नैनों में बहते सागर।

समझ समझ के इस फेरे को
जो न समझे वो अकेली है
परंतु शब्द शब्दों से ज्यादा
व्याकुल मन की पहेली है

कुछ पहेली हल हो जाती
कुछ तो समझ से दूर ही है,
बिन शब्दों के निःशब्द बाण से
मन की धरा उकेरी है।

कुछ शब्दों में छिपा हुआ है
कुछ तो खोया है उन्हीं शब्दों में
देखे कौन उत्तर देता है
और कैसे कैसे शब्दों मे ।

डॉ श्वेता चौबे मधुलिका
सेट, सेल, भिलाई

सुरक्षा आह्वान

आओ संयंत्र के उत्पादन में
निभाएँ सुरक्षा के वादे सारे,
उत्पादन के हर लक्ष्य को
भेदें सुरक्षा के सहारे
हेलमेट दस्ताना जूता यह सारे,
सदैव रहते सुरक्षा के दीवाने।
इस से ऊपर उठकर भी,
ड्रोन बनाते सुरक्षा कवच हमारे।
इससे मिलते अनेकों फ़ायदे,
होते हम सबके वारे न्यारे।
आओ संयंत्र के उत्पादन में
निभाएँ सुरक्षा के वादे सारे
सुरक्षा है हम सबकी जिम्मेदारी
हो हम सबकी इसमें भागीदारी,
एसओपी/एसएमपी को अपनाकर
बने उच्च मानक के अधिकारी।
आओ संयंत्र के उत्पादन में
निभाएँ सुरक्षा के वादे सारे
लेकर सुरक्षा कवच घर से
प्लांट तक आएँ सुरक्षा के सहारे
दें अपने परिवार को उपहार
रखकर सही सलामत खुद को हर बार
आओ संयंत्र के उत्पादन में
निभाएँ सुरक्षा के वादे सारे।

अभिषेक साहू
ओ.सी.टी., बार एवं रॉड मिल
भिलाई इस्पात संयंत्र

पर्यावरण

प्रकृति हमारी माँ है,
इस पर रहने वाले सब भाई।
इसकी रक्षा में ही है,
हम सब की भलाई।
पेड–पौधे देते हमें प्राणवायु,
रोको।.....इन सबकी कटाई।
प्राणवायु के संग देते हैं भरपूर पानी,
ये बात हम नहीं कहते, कहते हैं ज्ञानी।
अपने पैरों पर न मारो कुल्हाड़ी,
यह भूल सुधारो भाई ।
पर्यावरण के इस चक्र को मत तोड़ो,
नहीं तो जीवन होगा दुखदाई।
अब बंजर जमीन पर पेड़ लगा कर,
इस कमी की कर दो भरपाई।
नहीं तो अभी तक सिर्फ मानव है,
कल प्रकृति हो जायेगी हरजाई।
अपनी भूल सुधारो भाई ।
अपनी भूल सुधारो भाई ।

नीलकंठ साहू
वै.सं. – 154128
आर एंड एम, कोक ओवन
भिलाई इस्पात संयंत्र
मो. नं. – 9407987139

फिर लौट आया बचपन

मैं जी उठा, फिर जी उठा, फिर से जीवन का पुर्नजन्म
दो नन्हें कदमों पे चलकर , फिर लौट आया मेरा बचपन,
नन्ही, गुड़िया रानी, मासूम परी मेरी बिटिया
ने गुंजाया मेरे घर में , फिर से खुशियों का एक गुंजन
दो नन्हें कदमों पे चलकर, फिर लौट आया मेरा बचपन।।

दफ्तर से शाम ढले घर पर, दरवाजे पर जब जाता हूँ
मेरी आहट सुन, खिल खिल कर, उसको मुस्काता पाता हूँ
दो नन्हें हाथ उठाए मेरी, गोद में जब वो आती है
जैसे बाँहें हो कोई घर, और वो घर का सुंदर आँगन
दो नन्हें कदमों पे चलकर, फिर लौट आया मेरा बचपन।।

नयनों की नैया में सवार, निकले विहार पर फिर सपने
मन में खग बन आनंदित हो, जैसे पर खोले फिर अपने
धुँधले अतीत में रंग भरा, पतझड़ जैसे हो फिर निखरा
फिर से अबोध की उँगली पर, नाचे घर के कोने कण कण
दो नन्हें कदमों पे चलकर, फिर लौट आया मेरा बचपन। ।

लग जाए हमारी उम्र तुम्हें, आशीष हमारा प्यार तुम्हें
मेरा संसार सजाने का, मासूम परी आभार तुम्हें
संगीत तोतली बोली से, जो मीठा मीठा गाती हो
हर सुबह झूमने लगती है, हर दिन हो जाता है नूतन ।
दो नन्हे कदमों पे चलकर, फिर लौट आया मेरा बचपन।।

शीतला प्रसाद
क. अभियंता, दुर्ग (मेडेसरा) उपकेंद्र
पावरग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
मो. नं. – 9340017686

हम सिर्फ अपने लिए नही बल्कि समस्त विश्व के लिए शांति और शांतिपूर्ण विकास में विश्वास रखते है।

– लाल बहादुर शास्त्री

आज़ादी का अमृत महोत्सव

''आज़ादी का अमृत महोत्सव'' एक ऐसा विषय है, जिसका विश्लेषण करना सागर से अमृत मंथन के तुल्य है। जिस प्रकार सागर मंथन में देव एवं राक्षसों द्वारा किए गए मंथन से उन्हें विष और अमृत प्राप्त हुआ था। उसी प्रकार से आजादी के इस महोत्सव को मनाने के लिए हमारे पूर्वजों ने कितना विष और अमृत का पान किया है। इसे कल्पना करना हिम पर्वत के आरोहण के तुल्य होगा। हम लोगों ने कुछ देशभक्तों एवं शहीदों की गाथा कई किताबों में पढ़ा और जाना। पर ऐसे भी कई शहीद और देशभक्त हैं तथा उनके परिवारों की गाथा न किसी किताबों में उल्लेख है। न ही कोई तथ्य उपलब्ध है। हमें इस महोत्सव को मनाने से पहले उन्हें स्मरण करना आवश्यक है।

हम आज़ादी के 75 वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। लेकिन इस 75 वर्षों में हम लोगों ने कितना इस आज़ादी का सही उपयोग किया है। इसकी व्याख्या करना कठिन है। कुछ लोगों ने आज़ादी के मंथन से निकले विष को अमृत के सामान उपयोग किया है, जिसमें भ्रष्टाचार सबसे प्रमुख है। यह एक आज़ाद भारत के लिए विष के समान है, जिसे लोग अमृत समझ रहे हैं और ये अमृत धीरे–धीरे हमारे समाज एवं देश को अपनी जकड़ में लेता जा रहा है। जिसे समाज एक आचरण के समान उपयोग कर रहा है और ये हमारे देश के लिए एक कर्क रोग के समान हो गया है, पर नामुमकिन नहीं है।

ये युवाओं का देश है और युवा चाहे तो किसी भी रोग की जड़ से समाप्त कर सकता है और हमारे देश के युवा देश को विश्व मंच में नए रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। यदि वह चाहें तो इस भ्रष्टाचार को समाप्त कर सकते हैं और यदि हमारा देश इस बुराई से बाहर निकलता है तो हमारे आज़ाद देश के लिए अमृत के समान होगा और तभी हम इस देश में ''आज़ादी का अमृत महोत्सव'' मना सकेंगे।

अखिलेश कुमार ठाकुर
कोक ओवन एवं सी.सी.डी
भिलाई इस्पात संयंत्र
वै.सं.: 405212
मो.नं.: 9531594696

पहली बारिश

पहली बारिश टिप–टिप फिर टप–टप,
शुष्क उष्ण धरा पर सावन की पद चाप,
शीतल बूँदों की जलतरंगी सरगम,
हरी पत्तियों पर रूपहली छम छम,
तप्त कम्पित काया पर जैसे कोई मरहम,
स्मृतियों के पटल पर दस्तक देता मौसम।

एक छतरी के नीचे आधे भीगे दो मन,
सौदामिनी से लिपटे चकित जैसे दो नयन,
सुरमई काजल से कजरारे बादल,
झिझकता सकुचाता सिहरता एक आँचल।

चुनरी में सहेजे यौवन की अदाएँ,
घुमड़ते केशों की काली घटाएँ,
नर्म होठों पर मोती झरे हँसी,
कितनी दूर फिर भी पास, उफ बेबसी।

आज फिर हुई है, पहली ही बारिश,
फुहारों से भीगी अनगिनत ख्वाहिशें,
बूदों की टिप–टिप और खेत सब्ज हरे,
पर कहाँ मौसम में वह चाहत के नजारे।

बूँदों से नहाई शीशे की खिड़की,
देती है जैसे मुझे प्यार की झिड़की,
सफेद बाल और अनगिनत झुर्रियाँ,
बीते हुए सालों की लम्बी वह दूरियाँ।

बढ़ाए हाथ फिर पहली बारिश में,
ढूंढ़ रहा हूँ उसे बूँदों के शहर में,
वर्षा जल है या अश्रु गोले गालों पर,
खोज रहा हूँ किसे नित दिन हर पहर।

पहली बारिश फिर टिप–टिप और टप–टप,
भीगी धरती पर सावन की पद चाप।

पारमिता महान्ति
उप महाप्रबंधक तथा राजभाषा अधिकारी
सेल–सेट, भिलाई

अनमोल बूँद

मोती के लिए मिले ना जल,
वो अनमोल बूँद, वो अनमोल बूँद ।
सूरज से पहले प्रभात में
उठा लायी विशुद्ध ओस,
मोती न बनी ओस बूँद।
वो अनमोल बूँद, वो अनमोल बूँद।
पलक का आँसू भी लाई
सीप के गर्भ में न ठहरी,
मोती न बनी अश्रु बूँद।
वो अनमोल बूँद, वो अनमोल बूँद।
भटकी तेज धूप में,
मृगजल के पीछे,
हाथ न लगा पानी।
एक बूँद टपकी पसीने की,
बदल गई मोती में।
वे अनमोल बूँद वो अनमोल बूँद।।

देवकी बिष्ट
वरीय निजी सचिव
कार्मिक–प्रशासन एवं राजभाषा विभाग
सेल रिफैक्ट्री यूनिट, भिलाई

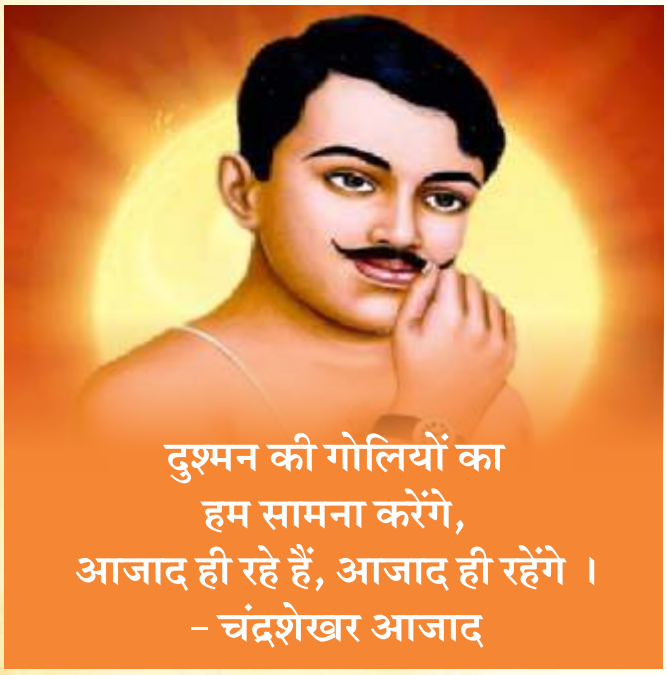

मज़दूर हूँ मैं

हाँ मज़दूर हूँ मैं, बहुत मजबूर हूँ मैं,
कभी मकान बनाता हूँ,
कभी दुकान बनाता हूँ,
कभी लोगों के अरमान सजाता हूँ,
फिर भी छत के लिए मजबूर हूँ मैं,
हाँ मज़दूर हूँ मैं, बहुत मजबूर हूँ मैं।

कभी हल चलाता हूँ,
कभी खेत काटता हूँ,
कभी बोरी उठाता हूँ,
फिर भी रोटी के लिए मजबूर हूँ मैं,
हाँ मज़दूर हूँ मैं, बहुत मजबूर हूँ मैं।

कभी बारिश में भीगता हूँ,
कभी ठण्ड में काँपता हूँ,
कभी गर्मी में तपता हूँ,
फिर भी दुनियाँ का नूर हूँ मैं,
हाँ मज़दूर हूँ मैं, बहुत मजबूर हूँ मैं।

कभी कल पुर्जे बनाता हूँ,
कभी मशीन चलाता हूँ,
कभी कारखाने में काम करता हूँ,
फिर भी पैसे के लिए मजबूर हूँ मैं,
हाँ मज़दूर हूँ मैं, बहुत मजबूर हूँ मैं।

डॉ. मृदुला चतुर्वेदी
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

कोरोना की विभीषिका

"कल रात कोरोना मेरे स्वप्न में आया!
आकर मुझे बुरी तरह धमकाया !!

बोला, मैं कोरोना हूँ मेरी विभीषिका को तुमने बहुत हल्के में लिया!
असमय काल के गाल में समाती ज़िन्दगियों का रक्त मैंने ही पिया!!

उसकी अतृप्त प्यास का अगला वार मैं बन गई!
उसके क्रूर अट्टाहास से मेरी आत्मा भीतर तक काँप गई!!

अगली सुबह जाकर आरटीपीसीआर का टेस्ट कराया!
रिपोर्ट आने तक हर पल मृत्यु को अपने समीप पाया!!

मेरा अपना फ़लसफ़ा, मेरे अपने जज़्बात!
कमबख़्त कोरोना कहाँ समझता है, दिल के हालात!!

मुझे हमेशा लगता मास्क लगाना उलझन है!
उसकी डोरियों से मेरी बड़ी अनबन है!!
लेकिन अब कोरोना का लहराया परचम है!!!

सामाजिक दूरी ग़ैर ज़रूरी है!
अपनों को गले लगाना हमेशा ज़रूरी है!!
अब हुई सबसे लंबी दूरी है!!!

सैनिटाइज़र में बहुत बदबू है!
आज खुशबू को तरसती मेरी रुह है!!
क्योंकि आज करोना की फैली बू है!!!

काढ़ा तो बहुत कड़वा और बेस्वाद है!
लेकिन आज मेरी जुबाँ पर कहाँ स्वाद है?
अब फीकी चाय ही कोरोना का प्रसाद है!!!

दूध में हल्दी हो तो उल्टी आती है!
आज हलक से उतरती हर चीज़ पानी नज़र आती है!!
आज मुई करोना बहुत सताती है!!!

मेरे पास बहुत काम है, इतना समय कहाँ, कि बार–बार हाथ धोएँ?
कमरे में क़ैद, आज समय ही समय है, कोई काम नहीं
अब क्या खोएँ!!
बस जरा ग़ैर ज़िम्मेदाराना हरकत पर रोएँ!!!

मैं बाहर घूमूंगी, मैं ना किसी की सुनूंगी, हाथ धरे कानों पर!
अब बूढ़ी माँ से सेवा करवाती हूँ, लानत है ऐसी जिन्दगी पर!!
क्योंकि मैं कोरोना पॉज़िटिव हूँ!!!

साँसों की वर्जिश मैं क्यों करूँ ?
मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ, मैं क्यूँ डरुँ ?
आज अपनों को हर साँस के लिए संघर्ष करते देखा है!!
क्योंकि आज वो कोरोना पॉज़िटिव हैं!!!

कोरोना तूने जिन्दगी को क्या से क्या बना दिया!
मुझे भी झुका कर जीना सिखा दिया!!

ज़िन्दगी थी मेरी कितनी खूबसूरत तराना!
अब मैंने परिवार के प्यार को पहचाना!!

रिश्तों और दोस्तों की दुआओं का असर जाना!
फ़िक्रमंदो की अहमियत को माना!!

ऐहतियात बरतने की क़ीमत को पहचाना!
और कोरोना को बुरी तरह हराने की ठाना!!

अनु की कविता का मकसद ही है, आप सबको जगाना!
क्योंकि हम सबको मिलकर है वैक्सीन लगवाना !!
और सबको मिलकर है कोरोना को हराना!!!

श्रीमती अनुराधा धनांक
उपमंडल अधिकारी (राजभाषा)
बी.एस.एन.एल. दुर्ग

हमारी राजभाषा हिंदी

संपूर्ण विश्व में लगभग 50 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं। हिंदी भाषा को समझने वाले लोगों की कुल संख्या करीब 90 करोड़ है। हिंदी भाषा का मूल प्राचीन संस्कृत भाषा में हैं। इस भाषा ने अपना वर्तमान स्वरूप कई शताब्दियों के पश्चात् हासिल किया है। हिंदी की लिपि देवनागरी है, जो कि कई भारतीय भाषाओं के लिए प्रयुक्त है। हिंदी के अधिकतम शब्द संस्कृत से आए हैं। इसके व्याकरण की भी संस्कृत भाषा के साथ समानता है। हिंदी भारत की राजभाषा है।

भारत के संविधान में देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। हिंदी की गणना भारत के संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी तमिल, तेलुगू, नेपाल, पंजाबी, बांग्ला, बोड़ो, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, मैथिली, संथाली, संस्कृत, सिंधी भाषाओं में की जाती है। भारतीय संविधान में व्यवस्था है कि, केन्द्र सरकार की पत्राचार की भाषा हिंदी और अंग्रेजी होगी। हमारी राष्ट्रीय भाषा की अत्यधिक लोकप्रियता और बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय महत्व के साथ साथ हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में भी जबर्दस्त प्रगति हुई है। केन्द्र सरकार, राज्य सरकार (हिंदी भाषी राज्यों में) के विभिन्न विभागों में हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य है। केन्द्र सरकार/राज्य सरकार के विभिन्न विभागों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, प्रबंधक (राजभाषा) जैसे विभिन्न पद हैं। निजी टीवी और रेडियो चैनलों की शुरूआत और स्थापित पत्रिकाओं/समाचार–पत्रों के हिंदी रूपान्तर आने से रोजगार के अवसरों में कई गुणा वृद्धि हुई है। हिंदी मीडिया के क्षेत्र में संपादकों, संवाददाताओं, रिपोर्टरों, न्यूजरीडर्स, उप–संपादकों, प्रूफ रीडरों, रेडियो जॉकी, एंकर आदि की बहुत आवश्यकता है। इसमें रोज़गार की इच्छा रखने वालों के लिए पत्रकारिता–जन संचार में डिप्लोमा के साथ–साथ हिंदी में अकादमिक योग्यता रखना महत्वपूर्ण है।

इसमें प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के कार्यों का हिंदी में अनुवाद तथा हिंदी लेखकों की कृतियों का अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवाद कार्य करना भी सम्मिलित होता है। फिल्मों की स्क्रिप्टों / विज्ञापनों को हिंदी/अंग्रेजी में अनुवाद करने का कार्य भी होता है। हिंदी भाषी में स्नातकोत्तर, विशेषकर जिन्होंने अपनी पीएच.डी. पूरी कर ली है, के लिए विदेशों में भी रोजगार के अवसर हैं। कुछ देशों द्वारा हिंदी को बिजनेस की भाषा स्वीकार किऐ जाने के फलस्वरूप विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा और भाषा विज्ञान के शिक्षण की जबर्दस्त मांग बढ़ी।

प्रत्येक राष्ट्र में एक ऐसी भाषा होती है, जो राष्ट्र के सभी व्यापारों के लिए सर्वमान्य हो। इसी भाषा के द्वारा राष्ट्र के सब कार्य–व्यवहार चलते हैं। सरकारी कार्यालयों, न्यायालयों आदि में इसी भाषा का प्रयोग होता है। हिंदी को राष्ट्र की राजभाषा कहा जाता है। वास्तव में राजभाषा राष्ट्र का प्राण होती है। इसी के आधार पर देश का उत्थान एवं पतन निर्भर करता है। इस भाषा में राष्ट्र की भावना व्यक्त होती है। इसी के द्वारा राष्ट्र के नागरिकों में ज्ञान का संचार होता है।

सन 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान का निर्माण हुआ। हमारे संविधान निर्माताओं के सामने एक विचारणीय प्रश्न था कि किस भारतीय भाषा को राजभाषा के पद पर सुशोभित किया जाये। भारत एक विशाल देश है। यहाँ के भिन्न–भिन्न प्रान्तों में भिन्न–भिन्न भाषाएँ बोली जाती है। उनमें से किसको यह महत्व दिया जाए ? यह एक गंभीर समस्या थी। विचारवान संविधान निर्माताओं ने इस विषय में गंभीर विचार किया और वे इस निर्णय पर पहुँचे कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो सर्वथा राजभाषा के महत्वपूर्ण पद पर अंलकृत होने की क्षमता रखती है। अब यह प्रश्न आता है कि, हिंदी को ही क्यों, यह महत्वपूर्ण पद प्रदान किया जाऐ, भारत में अन्य भाषाएँ भी बोली जाती हैं, यहाँ यह विचार कर लेना आवश्यक है कि, राजभाषा होने के लिए किसी भाषा में किन–किन गुणों का होना आवश्यक है।

किसी भाषा को राजभाषा बनाने के लिए निम्नांकित विशेषताओं का होना आवश्यक है :–

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जो देश की सबसे अधिकाधिक लोगों द्वारा बोली जाती है, आम जनमानस की बोलचाल की भाषा है। हिंदी भाषा में ऐसी योग्यता है कि वह अन्य प्रान्तीय भाषाओं को अपने सन्निकट लाने की क्षमता रखती हैं, तथा हिंदी भाषा को भारत के सभी प्रान्तों के लोग आसानी से सीख सकते हैं। हिंदी भाषा के पास एक विशाल तथा उन्नत समृद्ध साहित्य का विपुल भंडार उपलब्ध है। हिंदी भाषा देश के नागरिकों के कर्तव्य, आचार–व्यवहार तथा संस्कृति को अभिव्यक्त करती है। हिंदी भाषा के पास एक विशाल शब्दकोष है, जिससे वह दूसरी भाषाओं के ज्ञान विज्ञान तथा विविध विषयों को सरलता से व्यक्त कर सकती है। हिंदी में राजभाषा की योग्यता है। हमारे संविधान निर्माताओं ने यह निर्णय लिया क्योंकि राजभाषा का दर्जा दिऐ जाने के संबंध में हिंदी में उपर्युक्त सभी गुण पाये जाते हैं। हिंदी देश के सर्वाधिक भूभाग में बोली जाती है। हिंदी उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली जैसे अनेकों राज्यों

में आम बोलचाल की भाषा हैं। हिंदी भाषा के बोलने वालों की संख्या हमारे देश में सबसे ज्यादा है। दूसरी बात यह है कि, हिंदी भारत के अन्य राज्यों के भाषाओं को निकट लाने में समर्थ है। हिंदी के पास एक विस्तृत तथा समुन्नत साहित्य है और संस्कृत की उत्तराधिकारिणी होने के कारण यह भारतीय धर्म, संस्कृति तथा आचार–व्यवहार आदि को अभिव्यक्त करने में समर्थ है। इसके अलावा हिंदी के पास एक विशाल शब्दकोष है। दूसरी प्रान्तीय भाषाओं के शब्दों को भी अपने में समाहित कर सकती है। आत्मसात कर सकती है। हिंदी का संबंध संस्कृत से हैं और संस्कृत शब्दकोष संसार की सब भाषाओं से अधिक विस्तृत तथा समृद्ध है। अतः हिंदी संस्कृत से जितने चाहे शब्द ग्रहण कर सकती है। अन्य किसी भी भारतीय भाषा में ये सब गुण इतनी मात्रा में तथा एक साथ नहीं पाऐ जाते हैं, अतः हिंदी को ही भारत की राजभाषा होने के लिए सर्वथा उपयुक्त पाया गया।

एक बात और है कि, हिंदी में देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता है और देवनागरी लिपि सबसे अधिक वैज्ञानिक तथा सरल है अतः संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। सभी राज्यों के लोग हिंदी से प्रेम करते हैं। अन्य भारतीय भाषा–भाषी राज्यों में भी हिंदी के अच्छे विद्वान तथा हिंदी प्रेमी लोग हुए हैं। गाइगिल, काका कालेलकर तथा के.एम.मुंशी आदि का नाम उदाहरण के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है। वैज्ञानिक साहित्य का हिंदी अनुवाद हो सकता है। हिंदी के विकास और उसे राष्ट्रभाषा के पद प्रतिष्ठित करने के लिए केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में नियुक्त करने से पूर्व हिंदी का ज्ञान अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए। जिले में न्यायालयीन सारी कार्यवाही हिंदी या राज्य की भाषाओं में ही की जाये और धीरे–धीरे कुछ समय पश्चात् उच्च और सर्वोच्च न्यायालयों में हिंदी का भी प्रवेश हो। हिंदी भाषी राज्यों की राज्य सरकारों आदि में परस्पर राजकीय पत्र व्यवहार केवल हिंदी में होना चाहिए। केन्द्र के सब सरकारी कार्यालयों की नाम पट्टिकाएँ हिंदी में लिखी जानी चाहिए, जहाँ अनिवार्य आवश्यकता हो वहाँ कोष्ठक में अंग्रेज़ी नाम देने में कोई हानि नहीं है। हिंदी को अधिकाधिक सरल, सहज, सुबोध एवं सुगम और प्रचलित करने के लिए यह आवश्यक है कि शब्दों के पारिभाषिक पर्याय रूपों का शीघ्र ही निश्चय कर लेना चाहिए। क्षेत्रीय भाषाओं को एक–दूसरों के निकट लाने के लिए यह आवश्यक है, कि सभी क्षेत्रीय भाषाओं की लिपि देवनागरी हो। सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य हिंदी भाषी और हिंदी प्रेमियों का है ।

हम भारत देश के एक स्वतंत्र निवासी हैं हम विदेशीपन के इस प्रवाह में अधिक दिन तक नहीं बहेंगें। अब समय आ गया है और भारत ने अपने आत्मगौरव का ध्यान करना प्रारंभ कर दिया है। भाषा की दृष्टि से भी हमें इस विदेशीपन को दूर करना होगा। हिंदी हमारी अपनी मातृभाषा है। उसे पूर्ण अधिकार के साथ राष्ट्रभाषा पद पर आरूढ़ होना ही चाहिए और वह होकर ही रहेगी। वह समय अब दूर नहीं है कि हिंदी से भारतीय ही नहीं विदेशी भी प्रेम करेंगे और हिंदी के माध्यम से विश्व को विश्व–शांति का उपदेश देंगे। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण के शब्दों में राष्ट्र की हार्दिक कामना इस प्रकार व्यक्त हुई है– ''मानस–भवन में आर्यजन जिसकी उतारे आरती। भगवान भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।। हो भव्य भावोन्मेषिनी वह भारती हे सुरपते। सीतापते। गीता मते गीता मते।।''

भारत में हर काग़ज़ पर जब हिंदी लिखी जाएगी, तभी हिंदी राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के लिए संघ सरकार द्वारा दिया गया निर्धारित पावन लक्ष्य पूरा होगा, भारतवासी समवेत स्वर में कहेंगे कि, एकता की जान है, हिंदी देश की शान है। हिंदी का सम्मान, देश का सम्मान है। हिंदी का विकास, देश का विकास।। हिंदी भारत माता की बिंदी। हिंदी है, मेरे हिंद की धड़कन। हिंदी अपनाओ, देश का मान बढ़ाओ। जो राष्ट्रप्रेमी हो, वह राजभाषा प्रेमी हो। हिंदी ही हिंद का नारा है, प्रवाहित हिंदी धारा है। जय हिंद.....जय हिंदी। हिंदी हैं हम, वतन है, हिंदुस्तान हमारा।।

छगन लाल नागवंशी
राजभाषा अधिकारी
फ़ेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड,
पंजीकृत कार्यालय, इक्विपमेंट चौक,
सेन्ट्रल एवेन्यू, भिलाई, दुर्ग (छ.ग.)

आज़ादी की कीमत हमेशा ऊँची होती है और इसे पाने के लिए एक रास्ता तो हमें कभी नहीं चुनना चाहिए, वह है आत्मसर्पण और अनुरोध का रास्ता...

– सुभाष चंद्र बोस

कहानी, महुआ

केशकाल घाटी प्रारंभ करने पर सुंदर पहाड़ियों और हरे–भरे घने जंगलों और मन को मोहित करने वाले उंचे पेड़ पौधों खूबसूरत धुमावदार सड़क और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध केशकाल घाटी। केशकाल घाटी में घुमावदार मोड़ के सामने दीवारों पर आदिवासी कलाओं का सुंदर मनमोहक नयनाभिराम अंकित चित्र सुंदरता का अदभूत नमूना प्रस्तुत कर रहा है। बारह भाँवर (घुमाव) केशकाल घाटी में तेलिन सती माता और बंजारिन माता तथा निकट विराजमान भंगाराम माई जो न्याय की देवी का पवित्र स्थल है, हमारी कार दस मिनट के लिए रूकी। कार में मैं, मेरी पत्नी मीना, बेटी कंचन, आराधना और बेटा हिमांशु था । हम लोग इस्पात नगरी भिलाई से प्रत्येक महीने के द्वितीय एवं चतुर्थ शनिवार को घूमने निकल पड़ते थे, क्योंकि उक्त दिवसों में कार्यालयीन अवकाश होता था। छत्तीसगढ़ राज्य के सुदूर वनांचल या किसी प्रसिद्ध स्थान के सैर–सपाटे के लिए निकल जाते थे। तलिन सती माता, बंजारिन माता तथा भंगाराम माई जी के दर्शन करने कार से हम सब लोग नीचे उतर गए।

हिमांशु ने घड़ी में समय देखा, रात के आठ बजकर तीस मिनट हो चुके थे। सबने देवी माता को प्रणाम किया और पुनः कार में बैठ गए। राष्ट्रीय राजपथ छोड़ नारायणपुर की ओर रूख कर लिया। नाम मात्र की पक्की सड़क पर कार हिचकोले खाती हुई आगे बढ़ रही थी। इस मार्ग पर रात के नौ बजे भी आने–जाने मे लोग डरते हैं।

कार की हेडलाइट के तीव्र प्रकाश में उँचे साल–सागौन, बीजा, हर्रा–बहेड़ा के बीच सर्पिल सड़क पर काफी दूर तक सब कुछ साफ–साफ दिख रहा था । मेरा बेटा हिमांशु कहने लगा तीजेश भैया का घर नजदीक हैं वहीं रात्रि विश्राम करेंगे । घर का खाना, घर जैसा स्वाद, घर की तरह के सुखद अहसास देने वाले फैमिली होटलों के नाम रास्ते में कही लिखे नहीं मिल रहे थे, कंचन और आराधना बार–बार याद दिला रही थी कि हम जब भी बाहर का ज़ायका ले लेते हैं, बड़ा आनंद आता है, उनकी माँ मीना ने कहा– उससे अच्छा या स्वादिष्ट होने का मापदंड घर का स्वाद ही होता है, घर का खाना यानि हमारे बचपन के दिनों के सारे स्वाद जो अम्मा, दादी, नानी के हाथों से होते हुए हम तक आए हैं।

मैं ''रति रस चुए महुआ की डारि'', राजेन्द्र मिश्र 'अभिराज' के गीत की यह पंक्ति गुनगुनाने लगा जो मैंने अपने महाविद्यालयीन अध्ययन–अध्यापन के दिनों में जब युवावस्था में था पढ़ी थी, वह गीत मेरे मन में यूँ ही रस घोल रहा था, मैंने बच्चों को कार चलाते चलाते यूँ ही बताने लगा ये जो जंगल की वादियों में महुआ का पेड़ देख रहे हैं वह सैकड़ों वर्षों तक फलता–फूलता रहता है। फाल्गुन–चैत्र के महीने में इसकी सभी पत्तियाँ झड़ जाती हैं। नई कोपलों के फूटने से पहले डालियाँ फूलों से लदने लगती हैं। इसके बाद फूल जब पूर्ण यौवन पर होते हैं, तब इसमें से मदमस्त करने वाली मीठी–मीठी सुगंध चारों तरफ वातावरण में परसने लगती थी। उसकी मदमाती महक आस–पास रहने वाले जीव–जंतुओं को अपनी तरफ आकर्षित कर मदहोश कर रही थी । महुए का फूल बहुत ही रसीला और मीठा होता है। इनके रसों को चूसने के लिए कीट–पतंगों में भी होड़ लगी हुई थी । इसके फूल 'फोटोट्रॉपिक' होते हैं, अर्थात् सूर्य की स्वर्णिम रोशनी में ही खिलते हैं। बिहनिया (सूर्योदय) होते ही इसके फूल एक–एक कर टपकने लगते हैं। मझनिया (दोपहर) तक इनका टपकना तकरीबन बंद हो जाता है। यह क्रम महीनों तक चलता रहता है। जमीन पर टपक कर बिखरे हुए महुआ के फूलों का नज़ारा ऐसा दिखता है कि मानों सफेद मोती के गलीचे बिछे हों। कीट–पतंग न केवल इन फूलों से अपनी भूख मिटाते हैं, बल्कि बदले में ये पतंग परागण जैसा महत्वपूर्ण कार्य भी करते हैं। यह प्रकृति के अजीब निराले कार्य हैं। परिवार की सहमति बनी, सुबह तीजेश के साथ नारायणपुर अबूझमाड़ के घने जंगलों में जाकर महुआ को करीब से देखेंगे रात्रि में तीजेश के यहॉ खाना खाकर सभी सो गए।

बड़े बिहनिया (प्रातः) हम लोग कार से अबूझमाड़ के उँघते अनमने जंगलों की ओर रूख कर गए । मैंने बताया आयुर्वेद के अनुसार महुए के पेड़ में मौजूद कई औषधीय गुण है, जो असंख्य बीमारियों के इलाज करने में सहायक हैं। महुए के छाल का इस्तेमाल क्रानिक बोंकाइटिस, डायबिटीज़ आदि में किया जाता है। महुए की पत्तियों का प्रयोग गठिया, बवासीर, दस्त, बुखार, सूजन आदि के लिए बहुत ही असरदार होता है। महुआ के फूल के रस का प्रयोग कई तरह के त्वचा रोगों के लिए किया जाता है। महुआ गुणकारी और धातुवर्धक होता है। इसका फूल प्रकृति में नम, शीतल और शुष्क, गर्म वात–पित्त शामक, नाडी, बल प्रदायक, शक्तिप्रद, मादक आदि गुणों से परिपूर्ण होता है। फूलों के साथ–साथ इसके पेड़ के छाल, बीज का तेल आदि तीन भागों का प्रयोग विभिन्न प्रकार से किया जाता है।

बच्चों ने महुआ पर कोई पौराणिक कथा बताने की जिद की फिर सबके आग्रह को स्वीकार करते हुए मैंने महुआ से संबंधित एक पौराणिक लोकगाथा विस्तार पर्वूक बताई। किसी गाँव में एक मुखिया जी रहते थे। वे अपने अतिथियों का बहुत आदर सत्कार किया करते थे ताकि अतिथि उनके द्वार से बहुत प्रसन्न होकर जाएँ। कई अतिथि उनके घर आए और गए, किन्तु कोई भी उनके घर में खाए भोजन की प्रशंसा उस तरह से प्रसन्न होकर नहीं करता था जिस तरह से मुखिया जी चाहते थे। प्रतिदिन मुखिया जंगल में घूमने के लिए जाते थे और

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अतिथियों के लिए अच्छे–अच्छे फल व कंदमूल लेकर आते थे, जिससे कि वे अतिथियों का स्वागत सत्कार कर सके। मुखिया का बेटा भी अपने पिता की तरह ही अतिथि सत्कार करने में पारंगत था।

एक दिन उनके घर में एक ऐसे मेहमान आए जो पहले भी उनके यहाँ आ चुके थे। दोनों पिता और पुत्र ने मिलकर फल–कंदमूल से मेहमान का अच्छी तरह से आदर सत्कार किया। मेहमान बड़े प्रेम से प्रसन्न होकर खा रहे थे। खाते–खाते उन्होंने पूछा, क्या इस जंगल में एक ही तरह का फल–कंदमूल मिलता है। हमारे यहाँ के जंगल में तो विभिन्न प्रकार के फल मिलते हैं । मेहमान की बातों को सुनकर मुखिया का बेटा मुखिया की तरफ देखने लगा। मुखिया जी बोले हम तो जंगल में हमेशा घूमते रहते हैं कि, कुछ नए किस्म का फल मिले लेकिन यहाँ केवल यही मिलता है। अतिथि बोले–''चाहे जो भी हो मुझे तो आपके द्वारा किया गया अतिथि सत्कार सबसे बेहतर लगता है। इतने आदर–भाव से तो काई भी भोजन नहीं कराता है।'' अतिथि की बात सुनकर मुखिया को अच्छा लगा किन्तु प्रसन्नता नहीं हुई। दूसरे दिन मुखिया का बेटा जंगल में कुछ नया ढूँढने के लिए निकला। कुछ समय के बाद जगल में घूमते–घूमते वह बहुत थक गया । एक पेड़ के नीचे के बैठकर वह आराम करने लगा तभी उसने देखा कि महुए के पेड़ के नीचे गड्ढों का पानी पीकर चिड़ियाँ बहुत ही फुदक–फुदक कर चहचहा रही थी और खेल रही थीं। उसने देखा कि सभी चिड़ियाँ बहुत ही प्रसन्न थी। उसने सोचा इस पानी में कुछ है। उसने देखा कि पानी में महुए के फल–फूल गिरे हुए हैं, जिसे पीकर सभी चिड़ियाँ प्रसन्न हैं। मुखिया के बेटे उस गड्ढे का पानी निकालकर पी लिया। पानी पीने के बाद वह भी झूमने लगा। उसने महुए का ढेर सारा फल इकट्ठा किया और घर ले आया। उस दिन मुखिया के घर तीन मेहमान आऐ हुए थे। मुखिया अतिथियों को बहुत प्यार से खिला रहा था और बार–बार अपनी पत्नी की ओर देख भी रहा था, उन मेहमानों को भी वही पानी पिलाया। उस दिन अतिथि झूमते हुए प्रसन्न होकर गए। अब जो भी अतिथि आते मुखिया वहीं पानी पिला देते थे। अतिथिगण प्रसन्न होकर झूमते जाते थे। अब मुखिया बहुत ही गदगद थे।

हिमांशु ने महुए के बारे में और जानने की जिज्ञासा से और कुछ बताने कहा। पिता ने हामी भर दी और बताया कि, महुआ बहुपयोगी आय के स्त्रोत का साधन है। प्रकति के पुजारी जो इन जंगलों निवास करते हैं, उन आदिवासियों के लिय देव वृक्ष है वे लोग इसकी पूजा भी करते हैं और इसे महुआ पेन कहते हैं।

कंचन, आराधना, हिमांशु और मेरी पत्नी मीना सबने महुए के फूल को सुबह–सुबह बीनने का कार्य कर कार की डिक्की में रखी टोकरी में रखने लगे, घर के आँगन से लेकर दूर–दूर डोंगरी पहाड़ तक अनगिनत महुआ के पेड़, जो दूर–दूर तक महुए की मीठी–मीठी महक भर रही थी। सबने महुआ बीनने का आनंद उठाया। आसपास के गाँव पारा, मोहल्ला के महिला–पुरूष महुआ बीनने के लिए निकल पड़े थे बड़ा आनंद आ रहा था ।

हिमांशु ने पूछा कि क्या केवल महुआ के फूल ही आदिवासी अंचल के लोगों के आय का साधन है, मैंने बताया बेटा–वनों में निवासरत आदिवासियों के लिए वनों से उत्पादित वन उपजों की खरीद एमएसपी पर छत्तीसगढ़ शासन वन विभाग करती है जैसे–साल बीज, हर्रा, इमली बीज, शाल, चिरौजी गुठली, महुआ बीज, कुसुमी लाख, रंगीनी लाख, कालमेघ, बहेड़ा, नागरमोथा, कुल्लू गोंद, पुवाड़, बेल गूदा, शहद तथा फूल झाड़ू, महुआ फूल (सूखा) आदि है।

रविवार को हमने सपरिवार तीजेश से विदा लेकर कार से सड़क मार्ग होते हुए नारायणपुर से प्रस्थान किया । रास्ते में कंचन ने जिज्ञासावश पूछ ही लिया क्या पापा जी आज देश जब 75वॉं स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहा है। देश के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने वाले वीर सपूतों के साथ बस्तर के कुछ ऐसे लोग भी रहे होंगे जो ज्ञात अज्ञात हो जिनको आज़ादी का अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर भुलाया नहीं जा सके।

मैंने बताया इतिहास कभी भुलाया नहीं जा सकता। ऐसे ही एक वीर क्रांतिकारी का नाम है शहीद गुंडाधूर छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर के एक छोटे से गाँव में पले–बढ़े गुंडाधूर ने अंग्रेजों को इस कदर परेशान किया था कि, कुछ समय के लिए अग्रेज़ों को गुफाओं में छिपना पड़ा था। अंग्रेज़ों के दाँत खटटे करने वाले ये क्रांतिकारी वीर आज भी बस्तर के लोगों के दिलो में ज़िंदा हैं। रियासतकालीन वैभव से भरे–पूरे बस्तर का इतिहास काफी समृद्धशाली रहा है, यहाँ की परंपराएँ, रीति–रिवाज और संस्कृति अपने आप में खास है। देश का ऐसा कोई कोना नहीं होगा जो बस्तर की वैभव संपदा को नहीं जानता होगा।

आराधना ने बताया चालुक्य और मराठा राजवंशों के शासनकाल से लेकर अंग्रेज़ों के शासनकाल की दास्तान इतिहास के पन्नों में आज भी दर्ज़ है। इन्हीं इतिहास के पन्नों में यह नाम भी आता है, जिसने बस्तर को एक अलग पहचान दिलाई, बस्तर के महान क्रांतिकारी शहीद गुंडाधूर को लोग आज भी बड़े आदर और सम्मान के साथ स्मरण करते हैं, अब हमारी कार भिलाई इस्पात संयंत्र के कच्चा लौह अयस्क भंडार क्षेत्र रावघाट एवं दल्लीराजहरा की सुंदर पहाड़ियों को पार करती हुई तांदुला नदी को स्पर्श करती बालोद से होकर कब इस्पात नगरी भिलाई पहुँच गई थी पता ही नहीं चला।

छगन लाल नागवंशी
राजभाषा अधिकारी
पंजीकृत कार्यालय, इक्विपमेंट चौक,
सेन्ट्रल एवेन्यू, भिलाई, दुर्ग (छ.ग.)

स्वाभाविक बनें

अभी एक फिल्म देख रही थी, ''चाली चैप्लिन की सर्कस'', इसमें वह गलती से सर्कस में घुस जाता है और उसकी गुदगुदाने वाली गलतियाँ दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करती है।

अब सर्कस का मालिक चाहता है कि वो हमारे सर्कस में फन मैन का किरदार निभाए, फिर वो उसे ट्रेनिंग देना शुरू करता है, लेकिन चार्ली चैंपलिन का किरदार अपने स्वभाववश यहाँ भी गलतियाँ करता है, अब उसका मालिक गुस्सा होता हैं, ये हँसा क्यों नहीं पा रहा है ?

इसी तरह की एक और फिल्म हैं ''सीता और गीता'' –

इसमें सीता को देखने लड़के वाले आते हैं, सीता की मामी नहीं चाहती कि हाथ से सोने की मुर्गी निकल जाए, परन्तु लड़की दिखाना भी ज़रूरी था, वह उसे जबरन तैयार करती है और उसे मुस्कुराने को कहती है, लगातार के अत्याचारों से परेशान सीता हँसना भूल चुकी है, लेकिन मामी के ड़र से वो हँसती हैं, लेकिन उसका ह्रदय रो रहा है। उसकी मामी उसे डॉटती हैं, उस पर चिल्लाती हैं, हँस–हँस और वो हँसने की एक्टिंग करती हैं।

ये दोंनो घटनाएँ तो मैंने फिल्मों से उठाई हैं, लेकिन वास्तविक ज़िन्दगी में भी ये कई बार होता हैं, इंसान अंदर से कुछ और है और उसे दिखाया और बनाया कुछ और जाता हैं, जिससे उसका नैसर्गिक विकास रूक जाता है और होता क्या है ? वो अपनी नैंसर्गिक प्रतिभा भी भूल जाता है, और लगातार कन्फ्यूज़ रहता है।

स्वाभाविक बनें –

प्राकृतिक रहें, प्रकृति के साथ चले, हर जीव में ये क्षमता होती हैं कि वह अपना रास्ता स्वयं ढूँढ सके, हाँ उसे पथप्रदर्शक की आवश्यकता जरूर होती है, परन्तु रास्ता तो उसे स्वयं ही चुनना होगा, समय सबका आता है किसी का जल्दी, किसी का बाद में।

आज महामारी भी संभवतः यही सिखा रही है, इंसान जितना प्रकृति से सामंजस्य बिठाएगा उतना ही सुखी रहेगा तथा शांत रहेगा।

प्रकृति के साथ खिलखिलाना सीख लें।

सब कुछ मिलेगा प्रकृति से उसके साथ कदम मिलाना सीख लें।

जो जैसा है वैसा ही स्वीकार करो,

प्रतिभा का संकुचन नहीं उसका विस्तार करो।

याद रखिए जीवन में सहज रहना ही सबसे मुश्किल है, वरना दिखावे की ज़िंदगी तो हर कोई जी लेता है।

ज़िन्दगी

कभी ठहरती,

कभी फिसलती,

कभी रेंगती,

कभी सिसकती,

कभी मुस्कुराती,

कभी कलपती,

ज़िन्दगी ही तो है,

कभी हार नहीं मानती,

जब मिलती है फुर्सत, तो तलाशती है काम,

और जब थकन होती हैं तो तलाशती है विश्राम।

काम, थकान और विश्राम के गिर्द डगमगाती है ज़िन्दगी।

जाने किन–किन ख़्वाबों के ताने–बाने सुलझाती और कभी उलझाती है ज़िन्दगी।

जी हाँ ज़िन्दगी ही तो है

कभी हार नहीं मानती ज़िन्दगी

सोना तो है हर किसी को गहरी नींद एक दिन,

पर

नींद के पहले, आशाओं के हर द्वार ठक–ठकाती है ज़िन्दगी

जी हाँ हार नहीं मानती हैं ज़िन्दगी

हार नहीं मानती है ज़िन्दगी।

मासूम मुस्कान

अच्छी तरह से समझा बुझा कर रोमा एक बच्चे के पास बैठ गई,अब बारी बच्चों की थी, अपना काम पूरा कर वे मैम से कॉपी चेक कराने आ जाएँ कुछ तो बड़ी जल्दी ही ले आए, मगर कुछ अभी भी पेंसिल छीलने में, तो कुछ अपना सिर खुजाने में व्यस्त थे।

कुछ को फ़िकर थी कि, मुझे देर ना हो जाए, फिर मैम दूसरे को बड़ा वाला गुड दे देंगी।

खैर, रोमा लगी हुई थी एक एक के पास जाकर सुधार कार्य में,किसी को गुड मिलता किसी को 'ए' किसी को 'बी' ग्रेड देती। हाँ नंबर नहीं देना है नहीं तो छोटे बच्चों में कोई ग्रंथि ना बैठ जाए।

अभी वासुदेव आया, मैम ने उसका काम देखा, समझता तो सब है पर राइटिंग में कच्चा है, कोई बात नहीं, प्यार से मैम ने समझाया, इसे एक बार और लिखना है, और मैम ने उसे बैट दिया, पर वासुदेव अड़ गया मैम मुझे भी एप्पल चाहिए।

ऐपल

हाँ मैम, मुझे भी ऐपल दो ना।

बेटा आपने राइटिंग ऊपर नीचे लिखी ना ,इसलिए आज आप बैट ले लो फिर आप अच्छी राइटिंग में लिख कर लाओगे तो आपको एप्पल भी देंगे, ठीक है।

पर वासुदेव सन्तुष्ट नहीं था उसे तो ऐपल ही चाहिए,मेम को मन ही मन हँसी आ रही है, लेकिन वो भी मनुहार कर रहा है,मैया मोरी माखन दे दो ना। मैम मुझे ऐपल दे दो ना, उसी समय बगल से एक वरिष्ठ शिक्षिका मालती मैम गुज़री ,रोमा ने उन्हें आवाज लगाई ,मेम ये तो बिना ऐपल के नहीं मान रहा, फिर मालती मैम ने भी समझाया बेटा बैट भी अच्छा होता है उसी से तो हम क्रिकेट खेलते हैं,है ना , और भी ना जाने क्या क्या। आखिर वासुदेव बड़ी निराशा से माना लेकिन साथ ही पूछे बिना नहीं रहा, अगर मैं कल बहुत सुंदर लिख़ कर दूंगा तो मुझे आप ऐपल देंगी ना, मैम ने प्रॉमिस किया पक्का।

और दूसरे दिन वासुदेव ने प्रार्थना सभा में ही मैम को खुशखबरी दे दी, मैम मैंने सुंदर राइटिंग में लिखा है, आज मुझे ऐपल दीजिऐगा।

हाँ, उतनी सुंदर तो नहीं लेकिन कोशिश ज़रूर की थी, पट्ठे ने, आखिर मैम ने मुस्कुराते हुए ऐपल दे दिया पर उस नन्हें बालक की खुशी देखते ही बनती थी, जैसे उसने कोई बड़ा किला फ़तह कर लिया हो।

ऐसी छोटी–छोटी कहानियों से रोज़ दो चार होती रोमा। अभी उस दिन दीवाली के पहले अरेंजमेंट पीरियड में उसने सोचा चलो आज बच्चों से रंगोली बनवाई जाए, दीये वाली रंगोली क्योंकि बचपन में रोमा ने भी सबसे पहले यही रंगोली सीखी थी। बच्चों के लिए रोमा ने ब्लैकबोर्ड में ये रंगोली बनाई, बच्चों के लिए सीधी लाइन में बिन्दु डालना ही बड़ी चुनौती थी, पर बच्चों ने बनाना शुरू किया। कुछ तो बड़ी जल्दी ले आये, कुछ ने बड़े सुंदर रंग भी भर दिए, लेकिन कुछ अभी भी चुनौती पार करने में लगे हुए थे, रोमा एक–एक के पास जाती किसी को हाथ पकड़ कर, किसी को पेंसिल पकड़ कर सिखाती, कोई दिया तो बना लेता, पर कलर करते वक्त उसका दिया ही गायब हो जाता। खैर, ऐसे ही एक बच्चे के पास आकर बैठ गई रोमा, उस बच्चे से रंगोली नहीं बन पा रही थी। रंगोली तो रोमा ने चॉक से उसके टेबल में बना कर दिखाया, अब इतने पास देख कर उस बच्चे ने भी बना लिया, रोमा ने अपने हाथों से वो टेबल की रंगोली मिटा दी। बच्चे ने बड़ी ही मासूमियत से अपना बड़ा सा रूमाल निकला और कहा मैम हाथ से मत मिटाओ, ये लीजिऐ और उसने तत्काल ही रोमा का हाथ पोछ दिया। अब तो रोमा को भी मजा आने लगा, उसने एक और छोटी सी रंगोली उसके बेंच में बना दी और उसे मिटाने के बाद उसे फिर से अपने हाथ बच्चे के सामने रख दिया। बच्चे ने भी बिना देर किए तुरन्त मेम का हाथ साफ कर दिया, बच्चे को मैम का काम करने में गर्व का अनुभव हो रहा था। देखते ही देखते उसने रंगोली बनाकर रोमा को दिखा दिया। आस – पास कुछ और भी बच्चे आ गए थे। अपनी कॉपी चैक करवाने वे भी मेम को अपने साथ बैठा हुआ देखकर बेहद प्रसन्न हो गए, उनमें से एक बच्चे ने कहा मैम आप बहुत अच्छी है रोमा मुस्कुरा उठी बस यही तो पल चाहिए उसे। यही तो सबसे बड़ा प्रसाद है, ''ज्ञान होना एक और बात है छोटे बच्चों के साथ अपने ज्ञान को एक तरफ रखकर उनके साथ खुद बच्चा बन जाना एक और बात।'', यही तो सबसे बड़ी चुनौती होती है, एक प्राथमिक शिक्षक के लिए और इसके बदले में मिलती हैं, उसे निश्छल मुस्कान।

रागिनी गुरव
शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

सफलता हमेशा असफलता के स्तंभ पर खड़ी होती है । इसलिए किसी को भी असफलता से घबराना नहीं चाहिए । – सुभाष चंद्र बोस

मैं बेचारा हूँ

एक ने मुझसे कहा–क्या ऐसे ही खाते हो ?
विवाह नहीं करते, क्या पैसा बचाते हो ?

मैंने कहा–क्या करोगे यार, चलाना ही पडता है ?
जो भी बने खाना ही पड़ता है ।
क्योंकि मैं अकेला हूँ ।
दुख बहुत झेला हूँ ।।

पत्नी रहती तो कुछ अच्छा बनाती ।
आग्रह करके मुझे खिलाती ।।

मैं मज़े से खाता, आराम फरमाता ।
खुशी से अपनी ज़िन्दगी बिताता ।।

मैं बच्चों के साथ खेल भी लेता,
श्रीमती जी की कड़वाहट को झेल लेता ।
वो रुठ भी जाती, मैं मनाया भी करता ।।

पर क्या करोगे, मेरी पत्नी नहीं है ।
छत तो है पर, सीढ़ी नहीं है ।।

कोई लड़की मुझसे विवाह करना ही नहीं चाहती ।
क्योंकि मुझे 'कवि' बनता देखना नहीं चाहती ।।

वो सोचती है कि विवाह के बाद भूल जाएंगे ।
मुझे अकेले छोड़कर कवि–सम्मेलन में जाएंगे ।
लेकिन मैं ऐसा कवि नहीं हूँ,

एक पत्थर से दो चिडियाँ मार गिराउंगा ।
पत्नी को साथ लेकर कवि–सम्मेलन में जाउंगा ।।

वो फिर भी नहीं मानती,
मेरी महानता नहीं जानती ।

क्योंकि मैं नहीं जानता, कि क्या अनुबंध भरने पड़ते हैं ।
शादी करवाने के लिए क्या–क्या पापड़ बेलने पड़ते हैं ।।

इसीलिए तो मैं अभी तक कुँवारा हूँ ।
क्योंकि मैं सीधा–सादा, बिल्कुल बेचारा हूँ ।।

कीप क्वाइट (शांत रहें)

अस्पताल में एक आदमी आया,
आते ही बुदबुदाया।
आपके स्वास्थ्य का सूरज कब ढला,
हमें तो पता ही नहीं चला।
पहले मैं काँप गया,
उसके चेहरे को देखकर भाँप गया।
मैंने उत्तर दिया अच्छा हूँ,
भगवान का भक्त सच्चा हूँ।
उसने सभी मरीजों को देखा और मुस्कराया,
फिर जोर से ठहाका लगाया।
हमने सुना तो बहुत खला,
आपका बीमार पड़ना वाकई पता नहीं चला।
मौसमी फलों की डलिया को टेबल पर रखवाया,
और खाने के लिए बार–बार समझाया।
इतने में सभी माहौल के रंग भरने लगे।
नर्स के आने का इंतजार करने लगे,
वो आई तो तंग करने लगे।
झुँझलाकर डॉक्टर ने कहा,
हमने अभी तक सहा।
आपने बौद्धिकता का पाठ सीखा है,
देखो! दीवार पर क्या लिखा है ?
जो भी बोलो ब्लैक या व्हाइट,
किंतु कीप क्वाइट–कीप क्वाइट।
अगली बार किसी मरीज़ को देखने जाएँ,
तो पी.आर.साहू की याद लेकर जाएँ।
धीरे–धीरे बात करें, आँखों–आँखों में समझाएँ।
मन से समझाएँ, दिलोदिमाग से समझाएँ।।

पी.आर.साहू
वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी
राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्या.(क्षेत्र संकार्य प्रभाग),
भारत सरकार, उप क्षेत्रीय कार्यालय,
दुर्ग (छ.ग.)

गीता का योग दर्शन

गीता को धार्मिक ग्रंथ के रूप में तो मान्यता प्राप्त है, परन्तु योग की पाठ्य पुस्तक के रूप में उसे गंभीरता से नहीं लिया जाता है। वस्तुतः योग परम सत्ता के समीप पहुँचने का एक मार्ग है, इस दृष्टि से गीता योग की सबसे पुरानी पुस्तक मानी जा सकती है। इसके केन्द्र में एक ऐसी कहानी है, जो इस जटिल विषय को काफी सरल बना देती है। मुख्यपात्र अर्जुन हैं, जो दुविधा में है, उसे दो में किसी एक कार्य का चयन करना है। पहला – युद्ध करना जिसका उद्देश्य है, धर्म की अधर्म पर विजय एवं दूसरा – युद्ध नहीं करना, खासकर वैसा युद्ध जिसमें उसे अपने ही संबंधियों के विरूद्ध लड़ना हैं, अर्जुन के लिए यह जो समस्या है, वह कमोबेश सभी मनुष्यों के जीवन में लागू होती है।

दरअसल जीवन चुनावों की एक लंबी फ़ेहरिस्त हैं, और जो भी कर्म हम करते हैं, उससे यह निर्धारित होता है, कि हमारी चेतना का उत्थान होगा या उसका पतन होगा। चयन करने की इस परेशानी से निपटने के लिए श्री कृष्ण ने 18 वें अध्याय के अंत में एक सूत्र दिया है – सभी धर्मों का त्याग करो एवं केवल मेरी शरण में आ जाओ (18.66)। यहाँ धर्म से अभिप्राय है, शास्त्रों में विनिर्दिष्ट आचरण एवं कर्म करना तथा शरण में आने से अभिप्राय है, अपनी व्यक्तिगत इच्छा का त्याग करके प्रभु की इच्छानुसार कार्य करना। अधिकांश मनुष्य अर्जुन के समान सौभाग्यशाली नहीं हैं, जिन्हें साक्षात् ईश्वर से परामर्श करने का मौका मिला। अतः हमें अपने अन्दर जाना होगा, हमारे अंदर भी ईश्वरीय तत्व हैं, जिसे आत्मा कहते हैं, हमें उस आत्मा से मार्गदर्शन लेना होगा, परन्तु यह इतनी सुलभ भी नहीं है। इसकी तैयारी करने की विधि गीता के प्रारंभ के सत्रह अध्यायों में बताई गई है, परम सत्ता के नजदीक पहुँचने के मुख्यतः तीन मार्ग बताए गए हैं – यही योग की मूल अवधारणा है।

ये तीन मार्ग हैं – कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग, अपनी क्षमता, स्वभाव एवं परिस्थिति के अनुसार योग का विद्यार्थी इन तीनों में से किसी एक मार्ग से शुरूआत कर सकता है, वह परम सत्ता की सेवा अपने कर्म के द्वारा कर सकता है या अपने दिमाग द्वारा उसे जानने की कोशिश कर सकता है, अथवा ह्रदय द्वारा उसे प्रेम कर सकता है। किसी एक मार्ग पर धैर्यपूर्वक चलने से आप आगे चलकर तीनों मार्गों पर चलने लगते हैं, अंत में आपको सभी स्थापित धर्माचरणों से मुक्ति मिल जाती है और परमात्मा से सीधा मार्गदर्शन प्राप्त होता है। इसी विधि से श्री कृष्ण ने अर्जुन को आत्मबोध कराया। अर्जुन एक कर्म प्रधान व्यक्ति था, इसलिए श्री कृष्ण ने पहले उसे कर्मयोग की शिक्षा दी। जब अर्जुन को ज्ञान की प्यास लगी और वह ज्ञान प्राप्त करने के योग्य हुआ तो श्रीकृष्ण ने उसे शब्दों के द्वारा ज्ञान दिया और अंत में अपने विराट रूप का अनुभव कराया। जब अर्जुन भक्त बन गया तो श्री कृष्ण ने उसे भक्तियोग की शिक्षा दी। श्री कृष्ण ने भक्तों के चार प्रकार बताए हैं – 1. आर्त 2. अर्थ चाहनेवाला 3. जिज्ञासु और 4. ज्ञानी 7.16) ईश्वर ने बताया कि ये चारों भक्त उन्हें प्रिय हैं। गीता में अंतिम लक्ष्य (आत्मा का परमात्मा में मिलना) पर अधिक जोर नहीं दिया गया, इस यात्रा में हरेक कदम को महत्वपूर्ण बताया गया है।

यह आवश्यक नहीं हैं कि साधक कर्म मार्ग फिर ज्ञान मार्ग और अंत में भक्ति का मार्ग – इसी क्रम में आगे बढ़े। अगर कोई साधक ज्ञान प्रधान है तो उसे ज्ञान के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए, ज्ञान उसमें भक्ति का संचार करेगा। उसके बाद साधक सोचेगा कि भक्ति का कोई औचित्य नहीं जब तक वह अपने दृष्टि के लिए कुछ करता नहीं हैं, इस प्रकार उसके द्वारा कर्म होगा। सारांश यह है कि, हरेक साधक को अपने स्वभाव एवं झुकाव के अनुसार इन तीन मार्गों में से किसी एक मार्ग से शुरूआत करनी चाहिएं, अगर वह ईमानदारी से एवं लम्बे समय तक अपने चुने गए मार्ग पर चलता है तो एक दिन वह तीनों मार्ग का अभ्यासी बन जायेगा।

गीता का योग आपसे सांसारिक जीवन को त्यागने के लिए नहीं कहता है, इसके विपरीत यह अपने कर्म में पूर्णतः को योग की एक शाखा बतलाता है (2.50)। सांसारिक जीवन जीते हुए योग के मार्ग पर चलने के लिए गीता से बढ़िया पथ प्रदर्शक कोई नहीं है। भारत में गीता द्वारा बताया गया अध्यात्म पिछले एक हज़ार वर्षों में लुप्त हो गया है। भारतीय मानस पर एक विरोधाभास हावी है – आध्यात्मिक एवं सांसारिक जीवन के बीच, इस कारण से सांसारिक जीवन में काफी गिरावट आई है।, विगत काल में स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और श्री अरविंदो जैसे लोगों ने अध्यात्मिकता को सांसारिक जीवन में लाने की पुरज़ोर कोशिश की परन्तु हमारा समाज उनके सपनों के आदर्श समाज से आज भी कोसों दूर हैं–

गीता में दिए गए सन्देशों का सार्वभौमिक अपील है। श्री अरविंदो कहते हैं कि, सभी धर्मग्रथों में दो तरह के संदेश होते है – पहला सामयिक जो अपने स्थान एवं कालखंड के लिए ही प्रासंगिक है, तथा दूसरा–चिरस्थायी जिसकी महत्ता सदैव बनी रहती है। गीता में सामयिक तत्व बहुत कम हैं, यह सनातन तत्व से भरा हुआ है। अर्जुन जिस उलझन से जूझ रहा है–युद्ध करूँ, या ना करूँ–ऐसा द्वंद हमारे दैनिक जीवन में हमेशा आता है। एक विद्यार्थी के सामने दुविधा है कि वह अश्लील सामग्री देखे या नहीं। एक महिला का संघर्ष है कि, वह अपने बीमार बच्चे को देखे या कार्य पर जाए,, एक दम्पति की उलझन है कि वह तलाक लें या बच्चों की खातिर साथ रहें। गीता में इन सभी के लिए समाधान प्रस्तुत है, ऐसी स्थिति में लोग गीता को काफी आशा के साथ पढ़ते हैं, उन्हें इससे समाधान नहीं तो कम से कम शांति एवं संतोष अवश्य प्राप्त होता है। इस प्रकार गीता ने शायद अवसाद दूर करने में किसी मनोचिकित्सक से अधिक कार्य किया है।

एस. के. राजा
महाप्रबंधक
सेट, सेल, भिलाई

पेड़ का दुःख

पेड़ अकुलाया हुआ था। विचारों के भाव अंदर से खींचकर कुछ निकाल रहे थे। मुर्दन सा होने के कारण ऊपर से तो कुछ न लग रहा था। हाँ ! डूबे हुए केंद्र में कोई खलबली हो तो कोई कैसे बता सकता है !

पास में ही प्रस्फुटित हो रही गुठली का कोमल अंकुरण अपने आराध्य की विक्षिप्तता को जानने को उत्प्रेरित हो उठा। उम्र का तजुरबा हो न हो, नौनिहाल भी समझ ही जाता है कि, मुख कांति की आभा धूमिल है, तो वजह कोई न कोई तो होगी ही।

पेड़ पर लदे फल की वजह से डालियाँ झुक भले ही जाती हों, लेकिन इससे पेड़ को तकलीफ नहीं होती। पेड़ के फल को तोड़ने के लिए कोई पत्थर मार भी दे, तो पेड़ इसे अपना सौभाग्य ही समझता है। भूख की कीमत तो भूख मिटाने वाला ही जानता है, जो बदले में एक आने के मोल की अपेक्षा भी भूखे से न रखता हो।

फल देने के उपरांत पेड़ की डालियाँ क्षत–विक्षत हो जाती हैं। एक–एक पत्ते को रौंदकर फल तोड़ लिया जाता है। मानव की कोई भी जाति, छूत–अछूत, रेंगने वाले कीड़े–मकोड़ों के अलावा चलने वाले चार–पाया, सबका कष्ट सहर्ष स्वीकार करने वाला पेड़ आज दुःखी है ।

पेड़ ने अपने मन की पीड़ा गुठली को अनमने ढंग से बताया, कल किसी को पेड़ ने कहते हुए सुना था, कि उसका कोई बटाई–दार आ गया है। उसके फलों का संरक्षक। किंतु सही मायने में ऐसा हकदार जिसने न वह पेड़ लगाया, न उसे सींचा और न ही उसने उसकी देखभाल की, फिर भी पेड़ के फलों का सौ फीसदी खुद ही रख लेने वाला।

उसने देखा है अपने पूर्वजों के जीवन को। चिलचिलाती धूप–दोपहरी में अपनी ही जिजीविषा से धरती माँ के डर से पानी की एक – एक बूँद चूसकर अपनी प्यास मिटाते, जब तपती हुई धरा की गोद में पानी का एक कतरा नहीं होता था, जब उनकी टहनियाँ सूखकर काँटा हो चुकी होती थी,, पत्तों का समूल ही गर्मी से नष्ट हो चुका होता था, कंठ कई–कई महीने रेत की उड़ती धूल फाँका करते थे, तब पेड़ के तने में कोई जल के कुछ कलर डालने भी नहीं आते। किंतु जब फल लगे हों चींटियों के दल जैसे जाने कहाँ से पेड़ का माँस निचोड़ने चले आते हैं।

पेड़ को शिकायत इससे भी नहीं हैं, यदि उसके फल का उपयोग उनके लिए हो जिनके पेट वास्तव में खाली और भूखे हैं, और यदि भूख मिटाने के बहाने मोल न लिए जाते हों। पर दुख तो यही है कि, उसके फल का दुरूपयोग जो ये बटाई–दार करते हैं उसी से।

कच्चे–फल को अमूमन कोई पेड़ से नहीं तोड़ता क्योंकि कच्चे फल किसी का भूखा पेट नहीं भरते। पर ओह ! लालची ! निर्दयी ! बटाई–दार का कच्चे फल को तोड़कर जाने किस आग में फल की जवानी झुलसा देते हैं। रस का क्या ? उनकी झूली हुई चमड़ी को देखकर ही कोई बात दे कि, ये फल बेवजह डाल से तोड़ दिए गए हैं।, उनमें स्वाद क्या मिलेगा ? उसके आगे और यह कि, फल भले ही थालियों में भरकर किसी वातानुकूलित घर में लाऐ जाते हों, लेकिन उनका उपभोग करने वाले का मन उन फलों को खाकर कितना तृप्त होता है, कौन जाने। लेकिन धूप में थके राहगीर के लिए पेड़ एक फल गिराकर और बिना मोल उसके पेट में जाकर जो आनंद प्राप्त करता है, वैसा आनंद वातानुकूलित पेट वालों के अंदर जाकर तो कतई महसूस नहीं करता होगा।

और अब तो बटाई–दार की लालची निगाहें उस पर चौबीसों घंटे बनी रहेंगीं। झूमती हवाओं से पककर धरती पर टपक जाने का आनंद पेड़ के फल को, कहाँ मिलेगा। अब तो उसे सावधानी से जाल में फँसाकर तोड़ा जाएगा। सँभालकर रखा जाएगा। और कभी–कभी तो इस तरह की अपनी ही जमात के भार में दबकर वह सड़ – गल जाएगा। अब तो पेड़ की डाल पर बच्चों की खोजती निगाहें नहीं होगीं। अब तो उनके पैरों की कोमलता का अहसास न होगा। अब तो हवा में लहराकर गिरने का आनंद न होगा। अब तो उसके इर्द – गिर्द खिलखिलाती भीड़ न होगी, जो पके फल को तोड़ने के लिए चहकेगी। और अब तो शायद पेड़ का वजूद भी न होगा।

राजू कुमार शाह
ओ.सी.टी., कोक ओवन
इंस्ट्रूमेंटेशन

मेरे जीवन के अनुभवों में एक यह भी है।
मुझे आशा है की कोई न कोई
किरण उबार लेती है
और जीवन से दूर भटकने नहीं देती है ।
– सुभाष चंद्र बोस

मेरे प्रिय कवि ''निराला''

हिंदी कविता के छायावादी युग के चार स्तंभो में से एक माने जाते हैं। वे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के साथ हिंदी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उन्होनें कई कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं किन्तु उनकी ख्याति विशेष रुप से कविता रूप के कारण ही है। इनका जन्म बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में हुआ था। उनके पिता पंडित रामसहाय तिवारी उन्नाव के रहने वाले थे और महिषादल में सिपाही की नौकरी करते थे। निराला की शिक्षा हाई स्कूल तक हुई। बाद में हिंदी और बांग्ला का स्वतंत्र अध्ययन किया। पिता की छोटी सी नौकरी की असुविधाओं और मान अपमान का परिचय निराला को आरंभ में ही प्राप्त हुआ। उन्होने दलित–शोषित किसान के साथ हमदर्दी का संस्कार अपने अबोध मन से ही अर्जित किया। तीन वर्ष की अवस्था में माता का और बीस वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत हो गया। अपने बच्चों को अलावा संयुक्त परिवार का बोझ इन पर पड़ा। पहले महायुद्ध के बाद जो महामारी फैली उसमें न सिर्फ पत्नी मनोहरा देवी का बल्कि चाचा, भाई, और भाभी का भी देहांत हो गया। शेष कुनबे का बोझ उठाने में महिषादल की नौकरी अपर्याप्त थी। इसके बाद उनका सारा जीवन संघर्ष में बीता । निराला के जीवन की सबसे विशेष बात यह रही कि, कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने सिद्धांत त्यागकर समझौते का रास्ता नहीं अपनाया, संघर्ष का साहस नहीं गॅवाया। जीवन का उतरार्द्ध इलाहाबाद में बीता।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की पहली नियुक्ति महिषादल राज्य में ही हुई। उन्होंने 1918 से 1922 तक यह नौकरी की। उसके बाद संपादन, स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य की ओर प्रवृत्त हुए। 1922 से 1923 के दौरान कोलकाता से प्रकाशित 'समन्वय' का संपादन किया,1923 के अगस्त से मतवाला के संपादक मंडल में कार्य किया। इसके बाद लखनऊ में गंगा पुस्तक माला कार्यालय में उनकी नियुक्ति हुई जहाँ वे संस्था की मासिक पत्रिका 'सुधा' से 1935 के मध्य तक संबद्ध रहे। उनकी पहली कविता 'जन्मभूमि प्रभा' नामक मासिक पत्र में जून 1920 में, पहली कविता संग्रह 1923 में 'अनामिका' नाम से, तथा पहला निबंध बंगभाषा का उच्चारण अक्टूबर 1920 में मासिक पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुआ।

अपने समकालीन अन्य कवियों से अलग उन्होंने कविता में कल्पना का सहारा बहुत कम लिया है और यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है । वे हिंदी में मुक्तक छंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। 1930 में प्रकाशित अपने काव्य संग्रह परिमल की भूमिका में उन्होंने लिखा है–

> मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी
>
> मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्म के
>
> बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति
>
> छंदों के शासन से अलग हो जाना है।

निराला ने 1920 ई. के आसपास से लेखन कार्य आरंभ किया। उनकी पहली रचना 'जन्मभूमि' पर लिखा गया। एक गीत था। लंबे समय तक निराला की प्रथम रचना के रुप में प्रसिद्ध 'जूही की कली' शीर्षक कविता, रूप 1923 ई. में पहली बार प्रकाशित हुई थी। कविता के अतिरिक्त कथासाहित्य तथा गद्य की अन्य विधाओं में भी निराला ने प्रचुर मात्रा में लिखा है। इनके द्वारा प्रकाशित कृतियों में अनामिका, परिमल,गीतिका, अनामिका–द्वितीय(इसी संग्रह में सरोज स्मृति और राम की शक्तिपूजा जैसी प्रसिद्ध कविताओं का संकलन है), तुलसीदास, कुकरमुत्ता आदि जैसे काव्यसंग्रह, अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा, चोटी की पकड़ जैसे उपन्यास, लिली, सुखी, सुकुल की बीवी, चतुरी चमार जैसे कहानी संग्रह शामिल है।

जीवन में जब भी कभी मैं हतोत्साहित हुई तो मुझे निराला की 'ध्वनि' कविता मार्गदर्शित किया करती है जिसकी पक्तियाँ इस प्रकार हैं :–

अभी न होगा मेरा अंत,

अभी–अभी ही तो आया है,

मेरे जीवन में मृदुल वसंत,

अभी न होगा मेरा अंत।

संपूर्ण भारत में अंधकार रुपी अज्ञानता हटाने एवं ज्ञान रुपी ज्योति फैलाने हेतु माँ सरस्वती से अपनी कविता 'वर दे वीणावादिनी वर दे' के माध्यम से यह आह्वाहन करते हैं कि.....

"वर दे, वीणावादिनि वर दे¬!

प्रिय स्वतंत्र–रव अमृत–मंत्र नव

भारत में भर दे!

काट अंध–उर के बंधन–स्तर

बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,

कलुष–भेद तम हर प्रकाश भर

जगमग जग कर दे!"

वर दे, वीणावादिनि वर दे।

निराला की सबसे लम्बी कविता 'सरोज स्मृति' उनकी पुत्री के मृत्यु के पश्चात् उन्होने लिखी जिसकी पंक्तियाँ इस प्रकार है–

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,

कुछ भी तेरे हित न कर सका।

जाना तो अर्थागमोपाय,

पर रहा सदा संकुचित काय।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की काव्यकला की सबसे बड़ी विशेषता है चित्रण–कौशल। आंतरिक भाव हो या रंग और गंध, सजीव चित्रण–कौशल। आंतरिक भाव हो या बाह्य जगत के दृश्य रुप, संगीतात्मक ध्वनियाँ हो या रंग और गंध, सजीव चरित्र हों या प्राकृतिक दृश्य, सभी अलग–अलग लगनेवाले तत्वों को घुला–मिलाकर निराला ऐसा जीवंत चित्र उपस्थित करते हैं कि, पढ़ने वाला उन चित्रों के माध्यम से ही निराला के मर्म तक पहुँच सकता है। निराला के चित्रों में उनका भावबोध ही नहीं, उनका चिंतन भी समाहित रहता है। इसलिए उनकी बहुत–सी कविताओं में दार्शनिक गहराई उत्पन्न हो जाती है। इस नए चित्रण दृश्य कौशल और दार्शनिक गहराई के कारण अक्सर निराला की कविताएँ कुछ जटिल हो जाती हैं, जिसे न समझने के नाते विचारक लोग उन पर दुरूहता आदि का आरोप लगाते हैं। उनके किसान–बोध ने ही उन्हें छायावाद की भूमि से आगे बढ़कर यथार्थवाद की नई भूमि निर्मित करने की प्रेरणा दी। विशेष स्थितियों, चरित्रों और दृश्यों को देखते हुए इनके मर्म को पहचाना और उन विशिष्ट वस्तुओं को ही चित्रण का विषय बनाना, निराला के यथार्थवाद की एक उल्लेखनीय विशेषता है।

निराला पर अध्यात्मवाद और रहस्यवाद जैसी जीवन–विमुख प्रवृतियों का भी असर है। इस असर के चलते वे बहुत बार चमत्कारों से विजय प्राप्त करने और संघर्षों का अंत करने का सपना देखते है। निराला की शक्ति यह है कि वे चमत्कार के भरोसे अकर्मण्य नहीं बैठ जाते और संघर्ष की वास्तविक चुनौती से आँखें नहीं चुराते। कहीं कहीं रहस्यवाद के फेर में निराला वास्तविक जीवन–अनुभवों के विपरीत चलते हैं। हर ओर प्रकाश फैला है, जीवन आलोकमय महासागर में डूब गया है, इत्यादि ऐसी ही बातें हैं। लेकिन यह रहस्यवाद निराला के भावबोध में स्थायी नहीं रहता, वह क्षणभंगुर ही साबित होता है। अनेक बार निराला शब्दों , ध्वनियों आदि को लेकर खिलवाड़ करते हैं। इन खिलवाड़ों को कला की संज्ञा देना कठिन काम है। लेकिन सामान्यतः वे इन खिलवाड़ों के माध्यम से बड़े चमत्कारपूर्ण कलात्मक प्रयोग करते हैं। इन प्रयोगों की विशेषता यह है कि वे विषय या भाव को अधिक प्रभावशाली रुप में व्यक्त करने में सहायक होते हैं। निराला के प्रयोगों में एक विशेष प्रकार के साहस और सजगता के दर्शन होते हैं। यह साहस और सहजगता ही निराला को अपने युग के कवियों में अलग और विशिष्ट बनाती है।

नैन्सी प्रसाद
राजभाषा अधिकारी
पंजाब एण्ड सिंध बैंक, अंचल भोपाल

जल संरक्षण में मानव एवं संयंत्र की भूमिका

जल क्या है– सामान्य शब्दों में कहा जाए तो जल एक प्रकार का पेय पदार्थ हैं। जिसे ग्रहण करने पर हमें जीवन शक्ति मिलती हैं। और अगर विज्ञान के शब्दों में कहा जाये तो यह एक रासायनिक पदार्थ है जिसमें दो परमाणु हाइड्रोजन के और एक परमाणु ऑक्सीजन के सम्मिलित होते हैं। जिसका अणु सूत्र एचटूओ होता है।

"जल वह है जो मनुष्यों, पेड़ों एवं पशुओं की जीवनदायनी हैं"

जल का महत्त्व– विज्ञान के अनुसार पृथ्वी की सतह लगभग 71 प्रतिशत जल से भरी है। परन्तु इसका 96–97 अनुमानित प्रतिशत समुद्रों का जल है तथा पृथ्वी का केवल 1–2 प्रतिशत अनुमानित प्रतिशत जल ही पीने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है, और इसमें भी लगातार कमी आती जा रही है। इसी प्रकार वैज्ञानिकों के अनुसार मानव शरीर में लगभग 60–63 प्रतिशत जल होता है। इस सम्पूर्ण जल का 83 प्रतिशत जल मस्तिष्क में है, रक्त में 76 प्रतिशत जल होता है। तथा फेफड़ों में लगभग 80 प्रतिशत जल होता है। कुल मिला कर यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारे जीवन में जल अति महत्वपूर्ण है या यह भी कह सकते हैं की जल के बगैर जीवन संभव नहीं है। कहा गया है कि, जल ही जीवन है। जल प्रकृति के सबसे महत्वपूर्ण संसाधनों में से एक है। जिसकी महत्ता को हमें जानना और मानना होगा।

"जल ही ना हो तो किस प्रकार करोगे खान–पान के कर्म,
जल को संरक्षित करना हर मनुष्य का है धर्म"

जल के स्रोत– पीने वाले जल के स्त्रोतों की बात करे तो मात्र तीन ही स्त्रोत है, भू–गर्भ जल, हिमखंड जल एवं वर्षा जल। अभी के समय में कहा जाए तो जल का सबसे मुख्य स्त्रोत है वर्षा। वर्षा के जल का संरक्षण करना अत्यधिक महवपूर्ण हो गया है। वर्षा का जल हमारे द्वारा जितना संरक्षित किया जाएगा उतना हमें भूजल की, आवश्यकता कम पड़ेगी। और भूजल में बढ़ोतरी आएगी जिसका परिणाम आने वाले समय में उत्साहवर्धक होगा। इसके अलावा जैसा कि, हमें स्कूलों में पढ़ाया गया था कि, जल के स्त्रोत जलाशयों, कुंडों, तलाबों, नदियों और नहरों आदि–आदि हैं।

संरक्षक के रूप में संयंत्र की भूमिका– भिलाई जिसे छोटा भारत भी कहा जाता है इसे ग्रीन सिटी भी कहा जाये तो कोई आश्चर्य की बात न होगी। भिलाई इस्पात संयंत्र के 'नगर सेवाएँ' विभाग के कार्यो की बात की जाएँ तो मैं बहुत–बहुत धन्यवाद् देना चाहूंगा कि, पेड़–पौधों की देखभाल बड़ी ही गंभीरता से की है, आशा करता हूँ कि, यह कार्य और भी उन्नति की ओर अग्रसर हो। यही पेड़–पौधे जल संरक्षण का प्रतीक हैं। भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा जल संरक्षण हेतु बाँधों का निर्माण किया है जिसके द्वारा संयंत्र एवं आम जन तक जल की आपूर्ति कि जाती है ।

सेल चेयरमेन श्रीमती सोमा मंडल जी द्वारा 12 जून 2021 को भिलाई इस्पात संयंत्र के अपशिष्ट जल उपचार और रि–सायकलिंग प्लांट का उद्घाटन किया गया। यह रि–सायकलिंग प्लांट भिलाई इस्पात संयंत्र के आउटलेट–सी से निकलने वाले दूषित जल का शुद्धिकरण कर पुनः उपयोगी बनाएगा। इस प्लांट में लगभग 2400 क्यूबिक मीटर प्रति घंटा की दर से जल का उपचार किया जायेगा। इसी प्रकार आउटलेट–ए में लगभग 6200 क्यूबिकमीटर प्रति घंटा की दर से जल का शुद्धिकरण किया जाता है। एवं सेक्टर–5 में स्थित सीवेज रि–सायकलिंगएवं उपचार प्लांट से लगभग 1100 की दर से टाउनशिप के जल का उपचार किया जाता है। इस प्रकार और भी परियोजनाओं के तहत जल का उपचार कर उपयोग हेतु बनाया जाता है। हमारा भिलाई इस्पात संयंत्र कुल अपशिष्ट जल का 90 प्रतिशत से अधिक जल की रि–सायकलिंग करने में सक्षम हैं।

जलसंरक्षण में संयंत्र ने जल की महत्ता को दर्शाया है,
जल ही है जीवन, यह हमें संयंत्र ने ही सिखाया है।

मानव की भूमिका– मानव की भूमिका की बात की जाए तो मानव द्वारा ही सबसे अधिक जल का उपयोग किया जाता है। समय रहते ही इस पर किसी भी प्रकार का ठोस कदम ना उठाने पर हम अपने ही भविष्य की दुर्गति कर लेंगे। संरक्षण भी मानव द्वारा ही संभव है। ज़रूरत है तो सिर्फ ध्यान पूर्वक जल का उपयोग करने की। जिस प्रकार हम मूल्यवान वस्तुओं जैसे सोना, चाँदी, हीरा आदि की देखरेख में कोई कमी नहीं रखते ठीक उसी प्रकार हमें जल का उपयोग करना एवं संरक्षित रखना है।

जल की भूमिका है, जीवन में अपार,
जल ना हो तो जीवन चले केवल दिन चार।
जल ना हो तो जीवन चले केवल दिन चार।

निष्कर्ष– जल का संरक्षण करना मानव को अपने दिनचर्या के रूप में अति महत्वपूर्ण है। अगर कहीं भी जल की बर्बादी हो रही है तो आप उसे रोकने के अपूर्व प्रयास को अंजाम देना सीखना होगा। नलों में कहीं भी रिसाव हो रहा है, तो उसे भी रोकने का प्रयास हर इंसान को अपनी जिम्मेदारी समझ कर करना होगा। किसी कार्य में जल का उपयोग हो रहा है, तो यह सुनिश्चित करना होगा कि, जल का पूर्णतः उपयोग हुआ है या नहीं। पेयजल के महत्व को अब भी अगर न समझ पाऐगा इंसान तो वह दिन दूर नहीं जब पेयजल के लिए इंसान अपना जीवन घोर संकट में पाएगा।

मनोज कुमार
ओ.सी.टी., योजना(यांत्रिकी)
बार एवं रॉड मिल
भिलाई इस्पात संयंत्र, मो.–9407987280

आज़ादी का अमृत महोत्सव

क्यों है हमारी सोच में अंतर ?

उम्र कोई 70–75 साल उसके चेहरे पर हजारों झुर्रियाँ जो उम्र के हर उतार–चढ़ाव की कहानी सुनाती हैं। काली पड़ गई रंगत जो कितनी गर्मियों की तपिश बयाँ करती है, खुश्क होंठ, कठोर हाथ, मैले नाखून, हल्की सी झुकी हुई काया, लहराता बदन, उसमें ऐसा कुछ भी नहीं जो उसे किसी भी कोने से ख़ास बनाता हो, फिर भी उसकी अपनी खुद की पहचान है, जिसे बचाने के लिए वह सारा दिन गलियों में घूमता है– चिल्लाते हुए "काम है"– "काम है"– "काम है"। उसकी धीमी आवाज़ पता नहीं बंद पड़े कितने ही दरवाज़ों तक जाकर वापस लौट आती है, सिर्फ चंद लोग जो उसकी आवाज़ सुन पाते हैं, निकलकर बाहर आते हैं, कि कुछ काम करा लें, पर उसकी बूढ़ी काया देखकर किसी में इतनी हिम्मत नहीं होती कि, काम बता दें, सभी डरते हैं कि कहीं लेने के देने न पड़ जाएँ, लेकिन वह बेचारा सिर्फ अपनी खुद्दारी की दो रोटी के लिए चिलचिलाती धूप में घूमता रहता है। जब–जब उसे देखती हूँ तब–तब अंदर कुछ होता है जी मिचलाता है, घुटन सी पैदा होती है आखिर वह ऐसा क्या अंतर है– जो एक आदमी को ऊँचाइयों पर पहुँचा देता है और दूसरे को जमीन पर, कि लाख कोशिश करने पर भी नीचे वाला ऊपर उठ ना सके।

सर्दी के दिन हों, या झमाझम बरसते बादल या फिर चिलचिलाती धूप 'काम है' 'काम है' की आवाज़ नहीं थमती, कई बार लगता था कि, यह आदमी कुछ टोह लेने तो नहीं आता, भला इसकी कमाई ही कितनी होगी? कई बार शक्की मन अंदर ही अंदर अपना काम करता था और जब भी आवाज़ें आती– ''काम है– काम है,'' तो मैं पर्दे के पीछे से छुप–छुप कर उसे देखती, उसकी हरकतों को जानने की कोशिश करती।

आखिर मन शक्की क्यों ना हो, हर दिन सुबह सोकर उठने पर जो पहली खबर होती वह धमाकों की, उग्रवाद की, आगजनी की, किंतु शांति ढूँढने की लाख कोशिश करो तो भी शांति नहीं मिलती। छोटे–छोटे बच्चों को सड़कों पर इन जुलूसों की नुमाइंदगी करते देखा है, भविष्य में आगे दूर तक रोशनी दिखाई नहीं पड़ती तो भला यह मन शक्की क्यों ना हो। सामने खड़े हर आदमी पर शक जाता है कि, कहीं यह कुछ गलत तो नहीं करना चाहता। ऐसा एक भी आदमी नहीं दिखता कि उस पर विश्वास किया जा सके। आखिर इस शक्की मन ने आज जीवन की सबसे बड़ी गलती कर दी...

आज बादल सुबह से बरस रहे थे, रह–रह कर गरज भी रहे थे मैं बाजार से भीगती हुई घर आ रही थी, और तभी मैंने सड़क किनारे की झाड़ियों के पास उसी बूढ़े को गड्ढा खोदते हुए देखा मेरा शक्की मन फिर अपना काम करने लगा और मुझसे रहा नहीं गया, आखिर इस बारिश में वह बुड्ढा गड्ढा खोदकर क्या गाड़ रहा है? ऐसी क्या मजबूरी आन पड़ी थी कि वह बारिश बंद होने का इंतजार नहीं कर सका.. कहीं कोई बम तो नहीं? या फिर कोई हथियार या चोरी का कुछ सामान पता नहीं क्या था क्योंकि मेरी तरफ उसकी पीठ थी..... पर जो भी हो वह कुछ गलत कर रहा था... इसका मुझे पूरा विश्वास था और यही विश्वास मुझे खींचता हुआ थाने ले गया और मैंने रिपोर्ट दर्ज कराई।

एक 70 साल के बूढ़े कामगार मजदूर के खिलाफ आतंकवादी होने की रिपोर्ट आखिर मैं इस सभ्य समाज की ज़िम्मेदार नागरिक होने की कुछ तो जिम्मेदारी समझती हूँ हम सभी लोग बड़ी तेज़ी से उसी जगह पहुँचे जहाँ वह बूढा कुछ गाड़ रहा था, जब हम पहुँचे तब वह उस गड्ढे को बंद कर चुका था और उसके ऊपर मिट्टी डाल रहा था। पुलिस ने उसे चारों ओर से घेर लिया और लगभग चीखते हुए पूछा क्या कर रहे थे? इस गड्ढे में क्या छुपाया है? वह कुछ नहीं बोला.... खड़ा रहा और मुस्कुरा दिया, उसकी इस हरकत पर पुलिस और गुस्से में आ गई और उसको एक जोरदार चाँटा भी जड़ दिया वह फिर भी कुछ नहीं बोला आखिर पुलिस ने फैसला लिया कि गड्ढा खोदकर देखा जाए,सभी पीछे हो गए..... दो लोगों ने मिट्टी हटाई बस थोड़ी–थोड़ी... तो एक लीची की गुठली निकल आई और उसके बाद कुछ भी नहीं...सभी हैरान हो गए... मेरे काटो तो खून नहीं। मुझे लगा आज मैंने इंसानियत को शर्मसार कर दिया पर अपनी आँखों में आए सैलाब को रोककर एक ही बात पूछ पाई कि....''बाबा तुम्हारी जिन्दगी के कुछ ही दिन या साल हैं। भला तुम्हें इस पेड़ से क्या फायदा ?''

उसका जवाब सुनकर मैं शर्मिंदगी महसूस करने लगी उसने कहा "हर बात में फायदा या नुकसान देखना जरूरी नहीं, मुझे तो गुठली के बदले यह पेड़ दिखाई पड़ता है, इसकी हरियाली और इस पर लगे आम दिखाई पड़ते हैं, चिड़ियाँ और खेलते बच्चे दिखाई पड़ते हैं बस यही खुशियाँ तो मैं ढूँढ रहा था "इतना बोलकर वह अपनी दुर्बल काया लिए फावड़ा गैती उठाए चल पड़ा था, कि कल फिर पुकार सके– ''काम है.... काम है...काम है... ।''

मैं सिर्फ यही सोचती रही कि, आखिर ऐसा क्यों है कि हमारी सोच में इतना अंतर है वह पेड़ लगाना चाहते हैं भविष्य के लिए जिसकी छाया में वह कभी बैठ भी ना पाएंगे और हम उन पेड़ों को काटना चाहते हैं ताकि अपना आलीशान घर बनाकर अपना आज खूबसूरत बना सकें, इतनी उम्र बीत जाने पर भी उसे ही दिखाई देती है जीवन की खुशहाली, हरियाली और उत्सव। हम जैसे लोग जो आतंक और उग्रवाद के साए में पलते और बढ़ते हैं, हम हर तरफ सिर्फ विनाश की परिकल्पना कर पाते हैं, जो हमारे भीतर कहीं दर्द छुपा बैठा है, जो हर क्षण हमारा पीछा करता है, जो जीवन के हर जलसे को मातम में बदल देता है।

आखिर कब तक रहेगा हमारी सोच में यह अंतर....आखिर कब तक हम जैसे लोग इंसानियत को शर्मसार करते रहेंगे... आखिर कब तक... आखिर कब तक....

श्रीमती इंदरजीत कौर
स्वास्थ्य शिक्षिका, राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य सेवा केंद्र
चिकित्सा विभाग, भिलाई इस्पात संयंत्र, मो.नं.: 9691371590

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिन्दी दिवस समारोह की झलकियाँ

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नराकास वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नराकास वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नराकास वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

कोविड 19 का भारत में सामाजिक, तकनीकी और पर्यावरणीय प्रभाव

पिछले 2020 में कोरोनावायरस (कोविड–19) ने पूरी दुनियाँ को अपनी चपेट में ले लिया जिसके बाद से लेकर आज तक करोड़ों लोगों की वायरस से मौत हो चुकी है। चीन देश से आया हुआ यह वायरस आसानी से एक इंसान से दूसरे इंसान में फैलता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कोरोनावायरस यानी कोविड–19 को महामारी घोषित किया गया है। इस वायरस ने पिछले साल पूरी दुनियाँ को अपने चपेट में ले लिया था और अब तक करोड़ों लोगों की जान ले चुका है।

कोरोना वायरस का उदगम :–

यह बीमारी सबसे पहले 2019 में चीन में देखी गई थी। इसके बाद यह संक्रमण धीरे–धीरे पूरी दुनियाँ में फैल गया। इससे ना केवल लोगों की जान गई, साथ ही कई लोगों की आर्थिक स्थिति को भी बहुत नुकसान पहुँचा। वायरस का संक्रमण 2021 में और भी बढ़ गया है और साथ ही कोरोना के लक्षण भी बदल गए हैं। वायरस के संक्रमण फैलने से रोकने के लिए सभी देशों में कई सारे नियम लागू किए हैं जिसके मद्देनजर लॉकडाउन लगाया गया और भीड़ भाड़ करने की इजाज़त नहीं दी गई। इसके अलावा लोगों को स्वच्छता और सामाजिक दूरी का महत्व सिखाया गया और इम्यूनिटी मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

क्या है कोरोना वायरस :–

कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है। कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है वायरस अकोशिकीय अतिसूक्ष्म जीव है जो केवल कोशिका में ही वंश वृद्धि कर सकता है। ये नाभिकीय अम्ल और प्रोटीन से मिलकर गठित होते हैं,शरीर के बाहर तो ये मृत–समान होते हैं परंतु शरीर के अंदर जीवित हो जाते हैं। ये इतने सूक्ष्म होते है कि इन्हें सामान्य आँखों से नहीं देखा जा सकता। इन्हें देखने के लिए सूक्ष्मदर्शी की आवश्यकता होती है।

(कोरोना वायरस) कोविड–19 क्या है ?

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना का नाम कोविड–19 रखा है, जहाँ कोविड का अर्थ है कोरोना (कोविड–19), को का अर्थ है कोरोना, वि का अर्थ है वायरस डिसीस, और '19' का अर्थ है साल 2019 यानि जिस वर्ष यह बीमारी पैदा हुई।

कोरोना वायरस के लक्षणः–

कोविड–19, कोरोना वायरस में पहले बुख़ार होता है। इसके बाद सूखी खाँसी होती है और फिर एक हफ़्ते बाद साँस लेने में परेशानी होने लगती है। इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि आपको कोरोना वायरस का संक्रमण है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, साँस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, किडनी फ़ेल होना और यहाँ तक कि, मौत भी हो सकती है। बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी है उनके मामले में ख़तरा गंभीर हो सकता है। जुकाम और फ़्लू में के वायरसों में भी इसी तरह के लक्षण पाए जाते हैं।

कोरोना वायरस से कैसे बचें:–

मास्क पहनना ,कोरोना संक्रमित क्षेत्रों से बचना

सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना,किसी भी अनजान वस्तु को हाथ ना लगाना

हाथों को साबुन या हैंडवाश से साफ रखना, सैनिटाइजर का उपयोग करना

जितना हो सके घर में रहना, बाहर का खाना खाने से बचना, पौष्टिक आहार खाना

घर में अगर किसी को खाँसी या बुखार है तो उनसे दूरी बनाए रखना, खाँसते या छींकते समय मुँह पर रुमाल या टिशू पेपर रखना। सबसे अहम् बात यह है की, अपने खान–पान पर ध्यान दें और अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करें, इससे बचने का यही एक मात्र उपाय है। इसके साथ ही जो बचाव के उपाय बताऐ गए हैं इनका सख्ती से पालन करें। सतर्क रहें स्वास्थ्य रहें और कोरोना को दूर भगाएँ। सरकार द्वारा उठाये गए क़दमों का पालन करें और उनके दिशा निर्देशों का पालन सख्ती से करें।

कोरोना की भयावह स्थिति :–

कोरोना से अब तक पूरे विश्व में लाखों लोग प्रभावित हो चुके हैं और हजारों जानें भी जा चुकी हैं। दुनियाँ के कुछ प्रभावशाली देश जैसे की इटली, यूएस, इसकी चपेट में बुरी तरह आ चुके हैं। कोरोना ने

पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को हिला दिया है और भारत, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, इरान, आदि जैसे देश भी इसकी चपेट में आ चुके हैं। पूरे विश्व में इस विनाशकारी महामारी ने तबाही मचा रखी है। अफ़सोस की बात तो यह है कि इतनी उन्नति के बावजूद, अब तक इसकी कोई दवा नहीं मिल पायी है। लॉकडाउन हर जगह किया जा रहा हैं।

भारत में कोरोना :–

भारत में कोरोना की लहर बेहद भयावह रूप ले रही है दुनियाँ में इस समय भारत पाँच सबसे

ज्यादा कोरोना प्रभावित देशों की सूची में है।

भारत में सामाजिक प्रभाव :–

कोरोना ने भारत की सामाजिक सुरक्षा व्यवस्थाओं में खामियॉ उजागर कर दी हैं,

लॉकडाउन :– लॉकडाउन की वजह से ग्लोबल इकोनामी पर असर पड़ रहा है। हमे गंभीर मंदी आती दिख रही है। आर्थिक गतिविधियाँ ठप्प पड़ गयी है। अगर हम भविष्य की महामारियों के सामने टिके रहने की ताकत चाहते हैं, तो हमें एक ऐसा सिस्टम बनाना होगा जो कि, उत्पादन को इस तरह से कम करने में सक्षम हो जिसमें लोगों की आजीविकाओं पर बुरा असर नहीं पड़े।

अर्थव्यवस्था :– चीज़ें ख़त्म हो जाने का अर्थशास्त्र बेहद सीधा है। कारोबार होते ही मुनाफ़ा कमाने के लिए हैं। अगर वे उत्पादन नहीं करेंगे तो वे चीज़ें बेच नहीं पाएंगे। इसका मतलब है कि उन्हें मुनाफ़ा नहीं होगा। इसका मतलब है कि, उनके पास आपको नौकरी देने की कम गुंजाइश होगी।

भारत में तकनीकी प्रभाव :–

इस तकनीकी रूपांतरण से जो सबसे बड़ा बदलाव आने जा रहा है, वो है तकनीक और किसी समाज के बीच संबंध के रंग रूप में होने वाला संरचनात्मक परिवर्तन। पिछले दो दशकों में दो ऐसी मूलभूत धारणाएँ रही हैं, जिन्होंने तकनीक और समाज के बीच इस लगातार परिवर्तित होने वाले रिश्ते को परिभाषित किया है। पहली अवधारणा तो इक्कीसवीं सदी के पहले दशक के दौरान विकसित हुई थी। जिसके अनुसार, उभरती हुई तकनीकों में ये शक्ति है कि, वो लोगों को बहुत सी कुरीतियों और बुरे हालात से मुक्त करेंगी और साथ ही साथ इस धारणा के समर्थक ये कहते थे कि, लोग तकनीक के माध्यम से हो रहे इस परिवर्तन और उठा–पटक को सामाजिक रूप से स्वीकार करेंगे। इस विषय में दूसरा दृष्टिकोण, जो इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में विकसित हुआ, वो पहली धारणा के ठीक विपरीत था। इस धारणा के प्रतिपादकों को उभरती हुई तकनीक से सामाजिक परिवर्तन की अपेक्षाएँ नहीं, बल्कि उन पर संदेह होने लगा था। इस धारणा को मानने वालों का कहना था कि उभरती हुई तकनीकी दुनियाँ ने हमारे सामाजिक जीवन में सकारात्मक भूमिका नहीं निभाई। वो इन तकनीकों को शक की निगाह से देखने लगे थे। उन्हें लगता था कि, इन तकनीकों को विकसित करने वाली बड़ी बड़ी टेक्नोलॉजी कंपनियाँ और इनकी मदद से सशक्त हो रहे राष्ट्रों और उनके इरादों को शक की नज़र से देखने की आवश्यकता है।

भारत में पर्यावरणीय प्रभाव :–

कोविड–19 ने जहाँ एक ओर दुनियाँ भर में कई विकट चुनौतियाँ पैदा की हैं, वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक सौंदर्य के अद्भुत व जीवंत नज़ारे भी देखने को मिल रहे हैं। इतिहास गवाह है कि अतीत में जब–जब इस प्रकार की भयानक महामारियाँ आई हैं, तब–तब पर्यावरण ने सकारात्मक करवट ली है। यकीनन कोरोना संक्रमण काल में प्रकृति का यह रूप मानवीय जीवन के लिए भले ही क्षणिक राहत वाला हो, परंतु जब संक्रमण का खतरा पूरी तरह खत्म हो जाएगा, तब क्या पर्यावरण की यही स्थिति बरकरार रह पाएगी ?

जब सभी देशों के लिए विकास की रफ्तार को तेज़ करना न केवल आवश्यक होगा, बल्कि मजबूरी भी होगी, तब क्या ऐसे कदम उठाए जाएंगे जो प्रकृति को बिना क्षति पहुँचाए सतत विकास की ओर अग्रसर हो सकेंगे।आज कोरोना जैसी महामारी और पर्यावरणीय विसंगतियों को दूर करने के लिए आर्थिक स्तर पर मूलभूत संरचनात्मक बदलाव लाने होंगे।

कोरोना ने हमें यह अवसर दिया है कि स्थानीय और वैश्विक स्तर पर अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय राजनीति को पारिस्थितिकी सम्मान और न्याय की तर्ज पर फिर से परिभाषित किया जाए। भूमंडलीकरण के बरक्स स्थानीयकरण को बढ़ावा देने की भी चर्चा हो रही है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस बीमारी की तरह पर्यावरणीय समस्या भी वैश्विक है, इसलिए स्थानीय सेवाओं और रोजगार को बढ़ावा देने के साथ–साथ वैश्विक संस्थाओं में सहयोग और निवेश को भी मज़बूत किया जाना आवश्यक है। न केवल हरित

अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय–नवीनीकरण से जुड़े कार्यक्रमों को बढ़ावा देने की जरूरत है, बल्कि व्यक्तिगत, कानूनी व प्रबंधकीय स्तर पर भी परिस्थितिकी प्रबंधन व संरक्षण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इन तमाम प्रयासों, नवाचारों, पारदर्शिता, जवाबदेही और मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति के सहारे हम इस संकट से उबरने में कामयाब हो सकते हैं।

निष्कर्ष :–

जब हम सबको हरा सकते हैं तो ये कौनसी बड़ी बीमारी है। दूसरों के चक्कर में पड़ने से अच्छा है अपनी रक्षा करें, यही काफी है। कोविड–19 संक्रमण से भारत सहित आज दुनियाँ के लगभग 180 देशों से अधिक देश प्रभावित है, इस वायरस के लिए दुनियाँ भर के वैज्ञानिक स्वास्थ संगठन के साथ मिलकर इसकी इलाज करने के प्रयास मे लगे है। आज लगभग पूरा विश्व इस महामारी से ग्रसित है। इस जानलेवा बीमारी से घबराने की आवश्यकता नहीं है। विश्व स्वास्थ संगठन और स्वास्थ्य मंत्रालय के नियमों का पालन करके बचा जा सकता है। जितना हो सके दूसरे व्यक्तियों के संपर्क मे आने से बचें और स्वस्थ रहे।

नेहा साह
तकनीकी सहायक(यांत्रिकी)
राइटस लिमिटेड
मध्य क्षेत्र निरीक्षण कार्यालय, भिलाई
मोबाइलः 9827275431

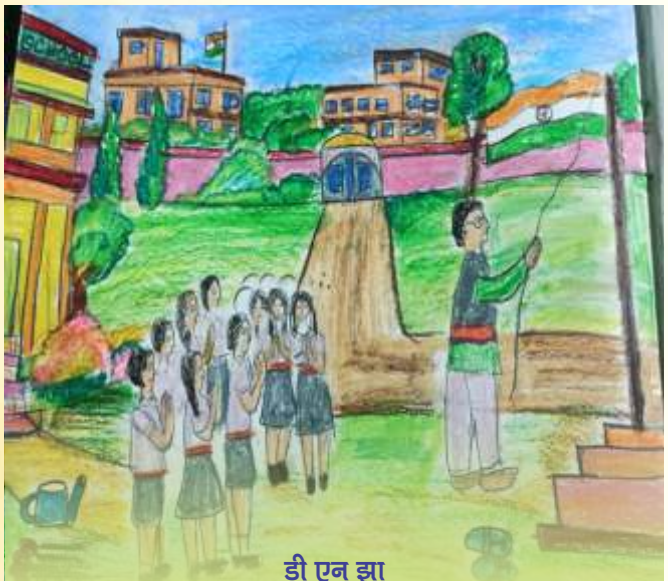

डी एन झा
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
फेरो स्क्रेप निगम लिमिटेड, राउरकेला यूनिट

रक्षक और भक्षक

मैं पर्यावरण का रक्षक हूँ, और मैं ही पर्यावरण का भक्षक हूँ।
एक तरफ मैं पर्यावरण बचाओ गाता हूँ... और दूसरी ओर प्रदूषण फैलाता हूँ।
एक ओर मैं पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ का नारा लगाता हूँ।
और दूसरी ओर उस पेड़ को काटकर उसकी पतंग उडाता हूँ।
एक ओर नदी के गंदे पानी को साफ़ करने की बात चलाता हूँ।
और दूसरी ओर शहर की गन्दगी उसी नदी में बहा आता हूँ।
जो सबको न दिख सके मैं वो तक्षक हूँ।
मैं ही पर्यावरण का रक्षक हूँ, और मैं ही पर्यावरण का भक्षक हूँ।

व्यंग्य ही लगता है, जब ये सुनते होंगे आप पर यही हक़ीक़त है।
कि ये मैं ही हूँ, जो फेंकता हूँ और मैं ही उसे समेटता हूँ।
मैं ही कूड़ा फैलाता हूँ और मैं ही कूड़ा दान सजाता हूँ।
मैं ही धरा की निर्मल गंगा को दूषित करता हूँ।
और मैं ही उसके शुद्धिकरण के लिए धरना धरता हूँ।
मैं ही एक तरफ अपने घर आँगन को स्वच्छ बनाता हूँ।
और वो मैल को बाहर फेंक कर जग अस्वच्छ बनाता हूँ।
मैं अपनी ही आड़ में छिपा द्विमुखी संरक्षक हूँ।
इसलिए मैं ही पर्यावरण का रक्षक हूँ, और मैं ही पर्यावरण का भक्षक हूँ।

पर्यावरण का सिर्फ एक शत्रु नहीं, प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष शत्रु अनेक हैं।
जल वायु धरा ध्वनि ये सब समस्त मानव जाति के लिए कितने नेक हैं।
निःस्वार्थ सेवा अनंत वर्षो से कर रहे हैं मेरी और एक मैं बेरहम हूँ।
कि आधुनिकता की अंधी दौड़ में डूबा मैं आस पास देखता कम हूँ।
भविष्य उन्नत हो सोचता ज़रूर हूँ पर वर्तमान देखने में ज़रा अक्षम हूँ।
सीख देता हूँ, पर सीखना नहीं चाहता पर हर सीख में मैं सक्षम हूँ।
चाह तो है मेरी कि बचा लूँ, इस अनमोल धरोहर को खुद से क्यूंकि
मेरे ही हाथ में सृजन लिखा है और मैं ही इसका विनाशक हूँ।
पर मैं अपना एकमात्र विकल्प हूँ मैं ही इतना दक्षक हूँ।
इसलिए मैं ही पर्यावरण का रक्षक हूँ, और मैं ही पर्यावरण का भक्षक हूँ।

रितेश कुमार कसारे
सहायक महाप्रबंधक
धमनभट्टी विभाग (विद्युत)
भिलाई इस्पात संयंत्र

सीनियर

जीवन के इस सफर में हम सभी को कभी न कभी कुछ खटटे–मीठे अनुभवों से गुज़रना पड़ता है। जो बातें हम स्कूल/कॉलेज में नहीं सीख पाते हैं, वह वक्त और अनुभव और ठोकरें सिखा देती हैं। संघर्ष में ही वास्तविकताओं से हमारी पहचान होती है। जीवन भी एक गणित की तरह लगता है, एक समस्या को हल करते हैं, दूसरी फिर मुँह बाए खड़ी हो जाती है और जो इन नई–नई चुनौतियों को स्वीकार कर धैर्य रखते हुए निरंतर आगे बढ़ता है मंजिलें भी उन्हीं को मिला करती हैं।

"इतनी परीक्षा ना ले ए "कुदरत", कि इंसा उदासी
को अपनी किस्मत समझ ले,
खुशी की जगह आँसुओं को ही "कुदरत" तेरा ही
दिया हुआ तोहफ़ा समझ ले"

मैंने जब से होश सँभाला है अपने माता–पिता के चेहरों पर उभरी हुई लकीरों को पढ़ने की कोशिश ज़रूर की। बाबूजी ने बताया कि उन्होंने कहीं पढ़ा है कि –

"सलीके से हवाओं में जो खूशबू घोल देते हैं,
अभी भी कुछ लोग बाकी हैं, जो मीठा बोल देते हैं ।

''आज की बचत कल की सुरक्षा'' लेकिन आज की पीढ़ी आज ही कमा और आज ही खर्च कर, कल की चिंता न कर । बड़े–बूढे बरगद के पेड़ की तरह होते हैं, जीवन के सारे तूफ़ानों को झेलकर अपनी नई पीढ़ी को नित्य नई ऊँचाईयों पर पहुँचाना चाहते हैं । यदि हम स्वयं अपने अंदर झाँककर देखें, सी–नियर तो कई अनसुलझे प्रश्नों का हल मिलने शुरू हो जाएंगे । सीनियरर्स का केवल उम्र के आधार पर हम उनका आकलन न करें ।

"अपनी उम्र को यू हीं उँगलियों पर न गिना करो दोस्तों, ये तो कुदरत का अनमोल तोहफ़ा है हर पल मुस्कुराकर जिया करो दोस्तों"

इंसान को जन्म दो बार मिलता है एक माँ के गर्भ से और दूसरा यदि वह नौकरी करता है तब, ऐसा इसलिए कि "माँ से संस्कार और नौकरी में कई तरह के चमत्कार" हर बार नई–नई चुनौतियों का सामना करते हैं, सब कुछ अपनी मर्जी का नहीं होता, यदि आप में विनम्रता है और सीखने की ललक है तो आप नौकरी में सफल हैं अन्यथा फिर तो समय पास है और यही समय पुनः लौटकर नहीं आता इसलिए कोशिश की जाए कि, जब भी उलझने का मौका आए, तो किसी सीनियर का सहारा लें । भीतर से यदि सुलझे हुए हैं, तो बाहर जो भी बीमारी आएगी, आप समझदारी से उसका सामना कर सकेंगे । आज लोगों की जो जीवनशैली है, उसमें शरीर के बीमार होने के अनेक अवसर हैं ।

बेहतर यही है कि, बाहर जो भी सावधानियाँ रखें, पर भीतर से पहले ही उस बीमारी को रोक लिया जाए ।

मेरे अपने एक उच्च अधिकारी द्वारा उदधृत पंक्ति,

"खोल दे पंख मेरे, कहता है परिंदा,
अभी और उड़ान बाकी है,
ज़मीन नहीं है मंज़िल मेरी,
अभी पूरा आसमान बाकी है ।
कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा ।
अर्जुन के तीर सा साध लक्ष्य कभी,
मरूस्थल से भी जल निकलेगा ।
ज़िन्दा रख दिल में उम्मीदों को,
समंदर में गंगाजल निकलेगा"।

प्रवीण कुमार रघुवंशी
आशुलिपिक
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भोपाल

''तुम मुझे खून दो
मैं तुम्हें आजादी दूंगा''
– सुभाषचंद्र बोस

स्वामी दयानन्द के स्वतंत्रता विषयक विचार

महर्षि दयानन्द ने परतन्त्रता का विरोध किया और सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि ''कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत–मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परन्तु भिन्न–भिन्न भाषा, पृथक–पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय (देश में स्वराज्य, अज्ञान व अन्धविश्वास रहित वैदिक धर्म का पालन) सिद्ध होना कठिन है।'' इससे पूर्व महर्षि दयानन्द ने भारत में विदेशी शासन का कारण बताते हुए लिखा है कि ''अब अभाग्योदय से, और आर्यों के आलस्य–प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यावर्त्त में आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है, सो भी विदेशियों के कारण हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र है। दुर्दिन जब आता है, तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है।''

स्वामी दयानन्द ने प्रमाद को ही सम्पूर्ण दुखों का जनक माना है। वे देशवासियों को पुरुषार्थी बनकर प्राचीन वैभव की प्राप्ति के लिए प्रेरित करते रहे। अपने संस्कार विधि ग्रन्थ में भी उन्होंने मानव निर्माण की योजना प्रस्तुत की है।

सन् 1857 में भारत का प्रथम स्वतंत्रता युद्ध लड़ा गया और सन् 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ। इस क्रांति के प्रचार में तत्कालीन साधु संन्यासियों का बहुत बड़ा योगदान था। साधुओं के द्वारा नाना साहब पेशवा ने अपनी योजना का सन्देश सर्वत्र पहुँचाया था। तीर्थ यात्रा के मिशन से नाना साहब ने लगभग समस्त उत्तर भारत का भ्रमण कर तात्कालिक स्थिति का अवलोकन किया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नाना साहब तथा अन्य क्रांतिकारियों का सहयोग किया था तथा छद्मरूप से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था ऐसा कुछ इतिहासकारों का मानना है।

स्वामी दयानन्द सन् 57 के अन्त तक कानपुर से इलाहाबाद और फर्रूख़ाबाद तक गंगा के किनारे विचरण करते रहे थे, और इन वर्षो के बारे में अपने जीवन की घटनाओं को लिखते समय वे सर्वथा मौन रहा करते थे। यह बात 'हमारा राजस्थान' के पृष्ठ 275 से विदित होती है।

इस क्रांति के विफल हो जाने पर महर्षि दयानन्द ने तात्कालिक परिस्थिति के अनुसार अपना मार्ग बदलकर भाषण और लेख द्वारा सर्वविध क्रांति प्रारम्भ की। महर्षि दयानन्द ही वह पहले भारतीय हैं जिन्होंने अंग्रेजों के साम्राज्य में सर्वप्रथम स्वदेशी राज्य की मांग की थी। वे अपने अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में लिखते हैं –''कोई कितना ही करे जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि, उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता–माता के समान कृपा, न्याय एवं दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायी नहीं है।''

महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ आर्याभिनिय में लिखा है ''अन्य देशवासी राजा हमारे देश में न हों, हम लोग पराधीन कभी न रहें।'' इससे पता लगता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की क्या भावना थी।उन्होंने राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया था। राष्ट्र के संगठन के लिए जाति–पाँति के झंझटों को मिटाकर एक धर्म, एक भाषा और एक समान वेष भूषा तथा खान–पान का प्रचार किया । आज हिन्दी भारत राष्ट्र की राजभाषा बन चुकी है। किन्तु पूर्व में जब हिन्दी का कोई विशेष प्रचार न था, उस समय महर्षि दयानन्द ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की घोषणा की, स्वयं गुजराती तथा संस्कृत के उद्भट विद्वान होते हुए भी उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' आदि ग्रन्थों की हिंदी में रचना की थी। हिंदी के प्रचार प्रसार में भी स्वामी जी का अमूल्य योगदान है।

दीर्घकालीन दासता के कारण भारतवासी अपने प्राचीन गौरव को भूल गये थे। इसलिए महर्षि दयानन्द ने उनके प्राचीन गौरव और वैभव का वास्तविक दर्शन करवाया और सप्रमाण सिद्ध कर दिया कि, हम किसी के दास नहीं अपितु गुरु हैं। सन् 1857 के पश्चात की क्रांति के जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके शिष्य पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा जो क्रांतिकारियों के गुरु थे। प्रसिद्ध क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, सेनापति बापट, मदनलाल धींगड़ा इत्यादि शिष्यों ने स्वाधीनता आंदोलन में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इंग्लैण्ड में भारत के लिए जितनी क्रांति हुई वह श्याम जी कृष्ण वर्मा के ''इण्डिया हाउस'' से ही हुई। अमेरिका में जो क्रांति भारत की स्वाधीनता के लिए हुई, वह भाई परमानन्द के प्रयत्नों के कारण हुई। पंजाब में श्री जयचन्द्र विद्यालंकार क्रांतिकारियों के गुरु रहे हैं। आप डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर में इतिहास और राजनीति के प्रोफेसर थे। सरदार भगत सिंह और उनके क्रांतिकारी साथी इनसे राजनीति की शिक्षा ग्रहण करते थे। सरदार भगत सिंह तो जन्म से ही आर्य समाजी थे। इनके दादा जी सरदार अर्जुन सिंह विशुद्ध आर्य समाजी थे और इनके पिता श्री किशन सिंह भी आर्य समाजी थे।

सांडर्स को मारकर भगत सिंह आदि पहले तो लाहौर के डी.ए.वी. कॉलेज में ठहरे, फिर योजनाबद्ध तरीके से कलकत्ता जाकर आर्य

समाज में शरण ली और आते समय आर्य समाज के चपरासी तुलसीराम को अपनी थाली यह कहकर दे आये थे कि 'कोई देशभक्त आये तो उसको इसी में भोजन करवाना।' दिल्ली में भगत सिंह, वीर अर्जुन कार्यालय में स्वामी श्रद्धानंद और पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति के पास ठहरे थे, क्योंकि उस समय ऐसे लोगों को ठहराने का साहस केवल आर्य समाज के सदस्यों में ही था।

गांधी जी जब अफ्रीका से लौटकर भारत आये तब उनको ठहराने का किसी में साहस न था। लाला मुंशीराम स्वनाम धन्य नेता स्वामी श्रद्धानंद ने ही उनको गुरुकुल कांगड़ी में ठहराया था और गांधी जी को महात्मा गांधी की उपाधि से सुषोभित भी स्वामी श्रद्धानंद जी ने ही किया था।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लगभग सभी स्थानों में ऐसी स्थिति थी कि कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ताओं को यदि कहीं आश्रय, भोजन, निवास आदि मिलता था, तो वह किसी आर्य के घर में ही मिलता था। प्रायः दूसरे लोग इनसे इतने भयभीत थे कि, उनमें इनको आश्रय देने का साहस ही न हो पाता था। हैदराबाद दक्षिण में निजाम सरकार के विरुद्व (सत्याग्रह चलाकर जनता के हितों की रक्षा केवल आर्यों ने ही की है। वहॉ पर आर्य समाज के प्रति जनता की जितनी श्रद्धा है उतनी किसी अन्य के प्रति नहीं है।

अमृतसर (पंजाब) में कांग्रेसी का अधिवेशन करवाने का साहस अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी में ही था। उस समय की स्थिति को देखकर किसी भी कॉंग्रेसी में इतना साहस न था जो सम्मुख आता और कॉंग्रेस का अधिवेशन करवा सकता। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता थे उनकी देशभक्ति किसी से तिरोहित नहीं।

राजस्थान केसरी कुँवर प्रताप सिंह वारहट, पं. राम प्रसाद बिस्मिल और उनके साथी आर्य समाज के अनुयायी थे, इनके सम्बन्ध में श्री मन्मथनाथ गुप्त ने ने साप्ताहिक हिन्दुस्तान के 13 जुलाई 1858 के अंक में लिखा था। इसी प्रकार के और भी अनेक उदाहरण मिलते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई में आर्य समाज ने बढ़–चढ़कर हिस्सा ही नहीं लिया, अपितु नेतृत्व भी किया है। स्वदेशी प्रचार, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार अछूतों को गले लगाने का प्रचार, गोरक्षा, शिक्षा –प्रसार, स्त्री शिक्षा, विधवा उद्दार आदि सभी श्रेष्ठ कार्यों में आर्य समाज अग्रणी रहा है।

आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद जी के विषय में महापुरुषों द्वारा व्यक्त किये गए विचार द्रष्टव्य हैं – "मुझे स्वाधीनता संग्राम में सर्वाधिक प्रेरणा महर्षि के ग्रंथों से मिली है।"–दादा भाई नैरो जी। "मैंने राष्ट्र, जाति और समाज की जो सेवा की है उसका श्रेय महर्षि दयानंद को जाता है।"–श्याम जी कृष्ण वर्मा। स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। मैने संसार में केवल उन्हीं को गुरु माना है, वे मेरे धर्म के पिता हैं और आर्यसमाज मेरी धर्म की माता हैं, इन दोनों की गोदी में मैं पला हूँ, मुझे इस बात का गर्व है कि, मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया। –पंजाब केसरी लाला लाजपत राय। गांधी जी राष्ट्र–पिता हैं, पर स्वामी दयानन्द राष्ट्र–पितामह हैं।"– पट्टाभि सीतारमैया।

आर्यसमाज दौड़ता रहेगा तो हिन्दू समाज चलता रहेगा। आर्यसमाज चलता रहेगा, तो हिन्दू समाज बैठ जाऐगा। आर्य समाज बैठ जायेगा तो हिन्दू समाज सो जायेगा। और यदि आर्य समाज सो गया तो हिन्दू समाज मर जायेगा। पंडित मदन मोहन मालवीय "महर्षि दयानंद इतनी बड़ी हस्ती हैं कि, मैं उनके पाँव के जूते के फीते बाँधने लायक भी नहीं।"– ए .ओ. ह्यूम। महर्षि दयानंद स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा थे।"–वीर सावरकर।

डॉ. थानसिंह हिरवानी
स्नातकोत्तर शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय दुर्ग

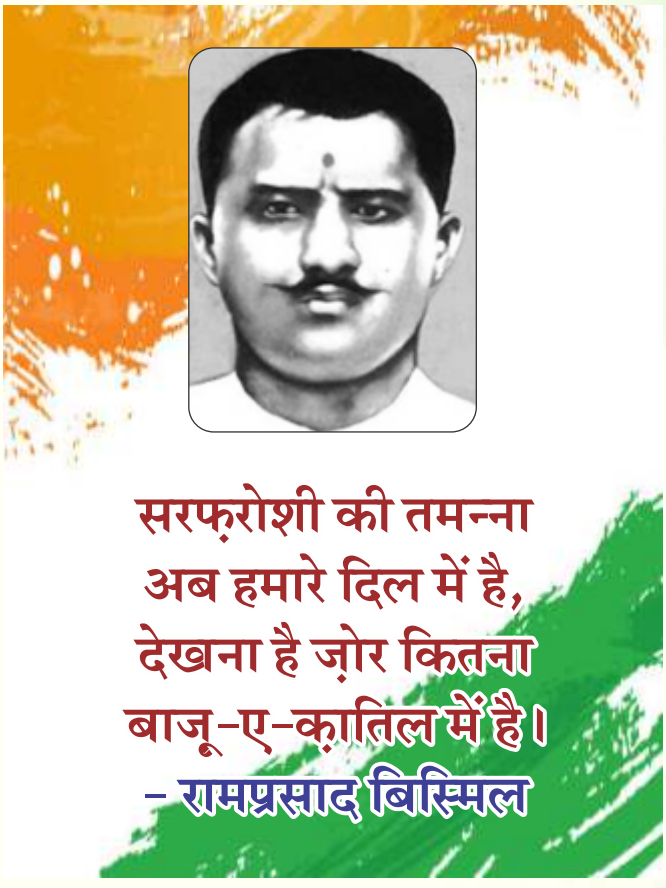

आज़ादी की मशाल जलाने वाले संत

आज़ादी के आंदोलन में साधु संतों ने भी भाग लिया था । भारतीय संत समाज यह मानता था कि, आज़ादी या स्वतंत्रता ईश्वर प्रदत्त अधिकार है। वर्तमान में इसी अधिकार को मौलिक अधिकार की श्रेणी में लाया गया है। भगवान श्री राम अयोध्या से श्रीलंका गए। श्रीलंका में उन्होंने रावण का वध किया। विभीषण को लंका का राज्य सौंपा। विभीषण ने श्री राम से लंका में ही बस जाने और लंका का आधिपत्य स्वीकार करने हैं की प्रार्थना की थी। उसके उत्तर में श्री राम ने जो कहा था वह स्वतंत्रता और जन्म भूमि के प्रति कर्तव्य, प्रेम तथा निष्ठा की अद्‌भुत व्याख्या करता है। श्री राम ने कहा था–

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते ।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥

हे लक्ष्मण ! लंका भले ही सोने की हो किन्तु मेरी इसमे कोई रुचि नहीं है क्योंकि जननी (माता) एवं जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक महान है।"

रामायण की यह उक्ति हम सबको देश प्रेम सिखाती है। अनेक साधु संतों ने रामायण गीता और महाभारत से प्रेरणा प्राप्त करके स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। यहाँ उन प्रेरक संतों की एक झलक प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

आज़ादी के लगभग 180 साल पहले ही संतों ने संघर्ष शुरू कर दिया था। इस संघर्ष में अंग्रेज़ों के विरुद्ध सन् 1763 से 1773 तक चला संन्यासी आंदोलन सबसे प्रबल आंदोलन था। आदिगुरु शंकराचार्य के दसनामी संप्रदाय ने एकजुट होकर भारतीय धर्म और संस्कृति को बचाने के लिए शस्त्र युद्ध का बिगुल बजाया। इतिहास प्रसिद्ध इस विद्रोह की स्पष्ट जानकारी बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास, आनंदमठ में मिलती है। इस विद्रोह को कुचलने के लिए वारेन हेस्टिंग्स को कठोर कार्रवाई करनी पड़ी थी। उसने बेरहमी से संन्यासियों और हिन्दू जनता का कत्लेआम किया। इस आंदोलन के बाद देश का संन्यासी आक्रोशित होकर जागृत हो गया।

भारतीय संतों ने देश को स्वतंत्र कराने और यहाँ की धर्म, संस्कृति और सभ्यता को पुनः जागृत करने के लिए देशभर में घूम–घूमकर प्रचार किया। लोगों की सुप्त देशभक्ति को जगाने का कार्य किया था। उन्होंने देश की जनता को एक करने के लिए सबसे पहले बल इस बात पर दिया कि, धार्मिक और सांस्कृतिक आधार पर देश के लोगों के विचार एक होना चाहिए। यही सोचकर उन्होंने वैदिक ज्ञान पर बल दिया और भारतीय इतिहास के गौरवपूर्ण पलों को लोगों के सामने रखा। वे मानते थे कि भारत सम्पूर्ण विश्व का गुरु है। हमारी संस्कृति विश्व की श्रेष्ठ संस्कृति है, हमे कोई पददलित नहीं कर सकता।

दयानंद सरस्वती : स्वराज्य की प्रथम घोषणा

कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले पट्टाभि सीता रमैया ने लिखा है कि, आज़ादी के आंदोलन में 80 प्रतिशत से अधिक लोग आर्य समाज के विचारों से प्रभावित थे। स्वामी दयानंद सरस्वती ने स्वराज्य का उद्‌घोष किया था। अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में उन्होंने 'स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है' यह लिखा। उन्होंने भारतीय धर्म संस्कृति की गौरवशाली परंपरा को जनमानस के सामने रखा। वैदिक संस्कृति को विश्व की श्रेष्ठतम उदात्त संस्कृति के रूप में व्याख्या की। उनके पुणे प्रवचन तथा 'सत्यार्थ प्रकाश' में व्यक्त विचारों ने भारतीय क्रांतिकारियों को प्रेरणा दी थी। गुलामी से मुक्ति का उपाय संपूर्ण भारतीयों की एक ही सोच हो और वह हो वेदों पर आधारित। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती आधुनिक भारत के महान चिंतक, समाज सुधारक और देशभक्त थे। स्वामी दयानंद ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन की 1857 में हुई क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वामी दयानंद सरस्वती का मूल नाम मूलशंकर था। स्वामी विवेकानंद के 20–25 वर्ष पहले ही उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन की क्रांति को चिंगारी बता दी थी। भगतसिंह, आज़ाद भी स्वामीजी से प्रेरित थे। लोकमान्य तिलक ने भी उन्हें स्वराज का पहला संदेशवाहक कहा था। स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 में गुजरात के मोरबी में हुआ और निर्वाण 31 अक्टूबर 1883 को राजस्थान के अजमेर में हुआ था। उनकी मूल रचनाएँ 'सत्यार्थ प्रकाश', आर्योद्देश्य रत्नमाला, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु, स्वीकारपत्र आदि हैं।

आर्य समाज की स्थापना का मूल उद्‌देश्य ही समाज सुधार और देश को गुलामी से मुक्त कराना था। उन्होंने धर्मांतरित हो गए हज़ारों लोगों को पुनः वैदिक धर्म में लौट आने के लिए प्रेरित किया और वेदों का सच्चा ज्ञान बताया। स्वामीजी जानते थे कि वेदों को छोड़ने के कारण ही भारत की यह दुर्दशा हो चली है इसीलिए उन्होंने वैदिक धर्म की पुनःस्थापना की। उन्होंने मुंबई के काकड़बाड़ी में 7 अप्रैल 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर हिन्दुओं में जातिवाद, छुआछूत की समस्या मिटाने का भरपूर प्रयास किया। गांधीजी ने भी आर्य समाज का समर्थन किया था। उन्होंने कहा भी था कि मैं जहाँ–जहाँ से गुज़रता हूँ, वहाँ–वहाँ से आर्य समाज पहले ही गुज़र चुका होता है। आर्य समाज ने

लोगों में आज़ादी की अलख जगा दी थी। आर्य समाज के कारण ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर स्वदेशी आंदोलन का प्रारंभ हुआ था।

लोक मान्य तिलक के अनुसार "स्वराज्य और स्वदेशी का सर्वप्रथम मन्त्र प्रदान करने वाले जाज्वल्यमान नक्षत्र थे दयानंद।" नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का मानना था कि "आधुनिक भारत के निर्माता तो दयानंद ही थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरूषों में से थे जिन्होने स्वराज्य की प्रथम घोषणा करते हुए, आधुनिक भारत का निर्माण किया। हिन्दू समाज का उद्धार करने मे आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है।

स्वामी श्रद्धानंद : स्वदेशी शिक्षा के प्रवर्तक

स्वामी श्रद्धानंद ने महात्मा गांधी जी के साथ कार्य किया था। वे पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष भी थे। वर्ष 1919 में रोलेक्ट एक्ट के विरुद्ध उन्होंने अपनी आवाज बुलंद की थी। अंग्रेज़ सिपाहियों के सामने उन्होंने अपनी छाती खोलकर चुनौती दी थी। उनके नेतृत्व में ही रोलेट एक्ट के खिलाफ जुलूस निकला था। अकेले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने वैदिक मंत्रों के साथ मस्जिद से अपना प्रवचन दिया था। वे मानते थे कि, शिक्षा किसी भी संस्कृति या परंपरा का मूल आधार है। किसी भी देश या समाज को खोखला करने के लिए शिक्षा को बदलना जरूरी होता है। वैदिक शिक्षा के अभाव में ही भारतीय समाज अपने गौरव तथा आत्म सम्मान से विमुख हो गया है। स्वामी श्रद्धानंद ने आर्य समाज के नेतृत्व में तथा कांग्रेसी के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़कर भाग लिया था।

स्वामी श्रद्धानंद का जन्म 22 फरवरी 1856 को पंजाब के जालंधर में हुआ था और उनका निर्वाण 23 दिसंबर 1926 को दिल्ली के चांदनी चौक में हुआ था। स्वामी श्रद्धानंद का मूल नाम मुंशीराम था। वे भारत के महान राष्ट्रभक्त संन्यासियों में अग्रणी थे।

स्वामी श्रद्धानंद ने देश को अंग्रेज़ों की दासता से छुटकारा दिलाने और दलितों को उनका अधिकार दिलाने के लिए अनेक कार्य किए। पश्चिमी शिक्षा की जगह उन्होंने वैदिक शिक्षा प्रणाली पर जोर दिया। इनके गुरु स्वामी दयानंद सरस्वती थे। उन्हीं से प्रेरणा लेकर स्वामीजी ने आज़ादी और वैदिक प्रचार का प्रचंड रूप में आंदोलन खड़ा कर दिया था जिसके चलते गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई थी।

धर्म, देश, संस्कृति, शिक्षा और दलितों का उत्थान करने वाले युगधर्मी महापुरुष श्रद्धानंद के विचार आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं। उनके विचारों के अनुसार स्वदेश, स्व–संस्कृति, स्व–समाज, स्व–भाषा, स्व–शिक्षा, नारी कल्याण, दलितोत्थान, वेदोत्थान, धर्मोत्थान को महत्व दिए जाने की ज़रूरत है, इसीलिए वर्ष 1901 में स्वामी श्रद्धानंद ने अंग्रेजों द्वारा जारी शिक्षा पद्धति के स्थान पर वैदिक धर्म तथा भारतीयता की शिक्षा देने वाले संस्थान 'गुरुकुल' की स्थापना की। हरिद्वार के कांगड़ी गाँव में 'गुरुकुल विद्यालय' खोला गया जिसे आज 'गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय' नाम से जाना जाता है। शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक के रूप में भी उन्हें जाना जाता है।

स्वामी विवेकानंद : हिन्दू जागरण का शंखनाद

स्वामी विवेकानंद युवाओं के सच्चे आदर्श हैं। उन्होंने, गुलामी के दिनों में शिकागो में जो भाषण दिया था, वह आज भी विश्व भर में चर्चित है। स्वामी जी ने यह कहा था कि भारतीय भूखे मरना पसंद करेंगे लेकिन अपने धर्म पर हस्तक्षेप करना किसी का भी पसंद नहीं करते। उन्होंने उपनिषद गीता तथा सनातन धर्म के मूल्यों से संपूर्ण विश्व को परिचित कराया। भारतीयों के मन में भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा जागृत किया। वैचारिक रूप से भारतीय समाज को प्रबुद्ध करने में स्वामी जी का अमूल्य योगदान है।

स्वामी विवेकानंद ने 1892 में अपने भारत भ्रमण के दौरान यह जाना कि, कोई भी राष्ट्र किसी गुलाम देश से शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकता इसलिए नियति द्वारा भारत के लिए निर्धारित, मानवतावादी भूमिका को निभाने के लिए 'भारत की स्वतंत्रता' एक आवश्यकता थी, लेकिन यह स्वतंत्रता तब तक संभव नहीं हो सकती, जब तक कि, भारत वैचारिक और आध्यात्मिक रूप से एक नहीं हो जाता।

स्वामीजी ने अपने भारत भ्रमण के दौरान यह भी जाना कि, ब्रिटिश शासन की शोषक नीतियों के कारण हमारे देश के किसानों और व्यापारियों की दशा दयनीय हो गई है इसीलिए उन्होंने भारत का आह्वान करते हुए कहा था– भारत जागो! विश्व जगाओ... ।'

स्वामीजी ने सिर्फ 39 वर्ष 5 महीने और 24 दिन के छोटे–से जीवन में अपने अथक प्रयास के माध्यम से भारत ही नहीं, संपूर्ण विश्व में वेदांत के अध्यात्म का परचम लहराकर देश को यह संदेश दिया ''ज़रूरत है कि, हम अपने मूल ज्ञान की ओर अब लौट आएँ। दुर्भाग्य है कि, भारत की आज़ादी के बाद आज भी भारत आध्यात्मिक रूप से एक नहीं है। ऐसा कोई हिन्दू नहीं है जो वेद के मार्ग पर चलता हो। ब्रह्म को जाने जो बगैर, उपनिषदों को पढ़े बगैर यह संभव नहीं हो सकता है कि, भारत वैचारिक रूप से एक हो। इस अखंडित विचारधारा के कारण ही भारत गुलाम बना था और आज इसी के कारण भारत में ढेर सारी जातिवादी, वामपंथी, तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी, प्रांतवादी, देशद्रोही समस्याएँ खड़ी हुई हैं।

भारत का राष्ट्रवाद 'आध्यात्मिकता और सनातन धर्म' ही है।

वामपंथ और तथाकथित धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के चलते भारत दीनहीन होकर पुनः गड्ढे में गिरने लगा है। सर्वधर्म समभाव और वसुदेव कुटुम्बकम् की विचारधारा ज़रूरी है। हिन्दुओं के विभिन्न संप्रदायों में भेदभाव निराशाजनक रूप से परस्पर–विरोधी प्रतीत होते थे। जातिवादी व्यवस्था ने देश को लगभग पुनः तोड़ दिया है।

भारत में हिन्दुत्व के पुनरुद्धार के बिना कोई राष्ट्रीय आंदोलन संभव नहीं था। स्वामी विवेकानंद ने ठीक यही किया, उन्होंने हिन्दुत्व का पुनरुद्धार किया। उन्होंने कहा, 'प्रत्येक राष्ट्र के जीवन की एक मुख्य धारा होती है, भारत में धर्म ही वह धारा है। इसे शक्तिशाली बनाइए और दोनों ओर का जल स्वतः ही इसके साथ प्रवाहित होने लगेगा। (खंड 372)। सच्चा धर्म मनुष्यों की शिक्षाओं से या पुस्तकों के अध्ययन से नहीं आता; यह तो हमारे भीतर स्थित आत्मा को जागृत करने से आता है, जिसके परिणामस्वरूप शुद्ध और वीरतापूर्ण कार्य किए जा सकते हैं। इस विश्व में जन्म लेने वाला प्रत्येक शिशु अपने साथ पूर्व जन्मों के संचित अनुभव भी लेकर आता है और इन अनुभवों की झलक उसके मन और शरीर की संरचना में दिखाई देती है। किंतु हम सभी में मौजूद स्वतंत्रता की भावना यह दर्शाती है कि, मन व शरीर से परे भी कुछ है। हम पर शासन करने वाली आत्मा स्वतंत्र है और वही हमारे भीतर स्वतंत्रता की इच्छा जगाती है। यदि हम स्वतंत्र न हों, तो हम इस विश्व को बेहतर बनाने की आशा कैसे कर सकते हैं? हम यह मानते हैं कि मनुष्य की प्रगति उसकी आत्मा के कार्यों का परिणाम है। विश्व जैसा भी है और हम आज जो भी हैं, वह आत्मा की स्वतंत्रता के कारण है।'

स्वामी विवेकानंद ने देश के नागरिकों को सभी स्तरों पर स्वतंत्रता प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने वह सब कुछ त्यागने का उपदेश दिया, जो उन्हें कमजोर बनाता हो, जैसे जातिवाद, प्रांतवाद, भाषावाद, दलगत राजनीति आदि। सभी को वक्त रहते वेदों की ओर लौट आना चाहिए अन्यथा देश को खंड–खंड होने में समय नहीं लगेगा। स्वामी जी के उपदेश आज भी विश्व तथा भारतीय समाज का मार्ग दर्शन कर रहे हैं।

महर्षि अरविंद : आध्यात्मिक क्रांति की चिंगारी

योगीराज अरविंद के नाम से विख्यात इस संत ने वैदिक ज्ञान विज्ञान के माध्यम से भारतीय युवाओं को देश के लिए समर्पित होने की प्रेरणा दी। वह स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रभावित थे। उन्होंने भारत तथा भारतीय मूल के विदेशियों को भारत की अटूट अद्वितीय सांस्कृतिक परंपरा से जोड़ने में अमूल्य योगदान दिया।बंगाल के महान क्रांतिकारियों में से एक महर्षि अरविंद देश की आध्यात्मिक क्रांति की पहली चिंगारी थे। उन्हीं के आह्वान पर हज़ारों बंगाली युवकों ने देश की स्वतंत्रता के लिए हँसते–हँसते फाँसी के फंदों को चूम लिया था। सशस्त्र क्रांति के पीछे उनकी ही प्रेरणा थी। अरविंद ने कहा था कि चाहे सरकार क्रांतिकारियों को जेल में बंद करे, फाँसी दे या यातनाएँ दे, पर हम यह सब सहन करेंगे और यह स्वतंत्रता का आंदोलन कभी रुकेगा नहीं। एक दिन अवश्य आएगा, जब अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान छोड़कर जाना होगा। यह इत्तिफ़ाक नहीं है कि, 15 अगस्त को भारत की आज़ादी मिली और इसी दिन उनका जन्मदिन मनाया जाता है।

महर्षि अरविंद पहले एक क्रांतिकारी नेता थे, लेकिन बाद में वे अध्यात्म की ओर मुड़ गए, क्योंकि उन्होंने यह जाना कि, आध्यात्मिक उत्थान के बगैर भारत की स्वतंत्रता के कोई मायने नहीं, इसीलिए उन्होंने भारत को आध्यात्मिक रूप से एक करने के लिए भारतीय ज्ञान की पताका विश्व भर में फैलाई, ताकि भारतीयों में अपने ज्ञान के प्रति गौरव–बोध जाग्रत हो। गौरव–बोध के बगैर आज़ादी और स्वतंत्रता की अलख जगाना मुश्किल था। हमें अपने धर्म और ज्ञान पर गौरव होना चाहिए। यह गौरव–बोध तब आता है, जब हम वेद, उपनिषद और गीता को पढ़ें।

महर्षि अरविंद ने गीता और अवतारवाद के विज्ञान को समझाया। क्रांतिकारी महर्षि अरविंद का जन्म 15 अगस्त 1872 को कोलकाता में हुआ था। उनके पिता के.डी. घोष एक डॉक्टर तथा अंग्रेज़ों के प्रशंसक थे। पिता अंग्रेजों के प्रशंसक लेकिन उनके चारों बेटे अंग्रेज़ों के लिए सिरदर्द बन गए।

कोलकाता में उनके भाई बारिन ने उन्हें बाघा जतिन, जतिन बनर्जी और सुरेन्द्रनाथ टैगोर जैसे क्रांतिकारियों से मिलवाया। उन्होंने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के साथ कांग्रेस के गरमपंथी धड़े की विचारधारा को बढ़ावा दिया।

सन् 1906 में जब बंग–भंग का आंदोलन चल रहा था तो उन्होंने बड़ौदा से कलकत्ता की ओर प्रस्थान कर दिया। जनता को जागृत करने के लिए अरविंद ने उत्तेजक भाषण दिए। उन्होंने अपने भाषणों तथा 'वंदे मातरम् में प्रकाशित लेखों द्वारा अंग्रेज सरकार की दमन नीति की कड़ी निंदा की थी। अरविंद का नाम 1905 के बंगाल विभाजन के बाद हुए क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ा और 1908–09 में उन पर अलीपुर बमकांड मामले में राजद्रोह का मुकदमा चला, जिसके फलस्वरूप अंग्रेज सरकार ने उन्हें जेल की सज़ा सुना दी। जब सजा के लिए उन्हें अलीपुर जेल में रखा गया तो जेल में अरविंद का जीवन ही बदल गया। वे जेल की कोठरी में ज्यादा से ज्यादा समय साधना और तप में लगाने लगे। वे गीता पढ़ा करते और भगवान श्रीकृष्ण की आराधना किया करते। ऐसा कहा जाता है कि अरविंद जब अलीपुर जेल

में थे, तब उन्हें साधना के दौरान भगवान कृष्ण के दर्शन हुए। कृष्ण की प्रेरणा से वे क्रांतिकारी आंदोलन छोड़कर योग और अध्यात्म में रम गए। जेल से बाहर आकर वे किसी भी आंदोलन में भाग लेने के इच्छुक नहीं थे। अरविंद गुप्त रूप से पांडिचेरी चले गए। वहां उन्होंने योग को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। 5 दिसंबर 1950 को महर्षि अरविंद का देहांत हुआ।

स्वामी सहजानंद सरस्वती : दलित चेतना के मंत्रदाता

स्वामी सहजानंद सरस्वती (मूल नाम नौरंग) का जन्म 22 फरवरी 1889 को उत्तरप्रदेश के गाज़ीपुर में महाशिवरात्रि के दिन हुआ और उनका निर्वाण 25 जून 1950 को पटना में हुआ। 'किसान आंदोलन' के जनक स्वामीजी आदि शंकराचार्य संप्रदाय के 'दसनामी संन्यासी' अखाड़े के दंडी संन्यासी थे। 1909 में उन्होंने काशी में दंडी स्वामी अद्वैतानंद से दीक्षा ग्रहण कर दंड प्राप्त किया और दंडी स्वामी सहजानंद सरस्वती बने। काशी में रहते हुए धार्मिक कुरीतियों और बाह्याडंबरों के खिलाफ मोर्चा खोला।

स्वामीजी को मूल रूप से किसान आंदोलन और जमींदारी प्रथा के खिलाफ किए गए उनके कार्यों के लिए जाना जाता है। महात्मा गांधी ने चंपारण के किसानों को अंग्रेज़ी शोषण से बचाने के लिए आंदोलन छेड़ा था, लेकिन किसानों को अखिल भारतीय स्तर पर संगठित कर प्रभावी आंदोलन खड़ा करने का काम स्वामी सहजानंद ने ही किया। इस आंदोलन के माध्यम से वे भी भारतमाता को गुलामी से मुक्त कराने के संघर्ष में कूद पड़े।

महात्मा गांधी के अनुरोध पर वे कांग्रेस में शामिल हो गए। 1 साल के भीतर ही वे गाजीपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए और कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में शामिल हुए। अगले साल उनकी गिरफ्तारी और 1 साल की कैद हुई। महात्मा गांधी के नेतृत्व में शुरू हुए असहयोग आंदोलन के दौरान बिहार में घूम–घूमकर उन्होंने अंग्रेजी राज के खिलाफ लोगों को खड़ा किया। बाद में वे किसानों को लामबंद करने की मुहिम में जुट गए।

17 नवंबर 1928 को सोनपुर (बिहार) में उन्हें बिहार प्रांतीय किसान सभा का अध्यक्ष चुना गया। उन्होंने जमींदारों के शोषण से किसानों को मुक्ति दिलाने और जमीन पर रैयतों का मालिकाना हक दिलाने की मुहिम शुरू की। अप्रैल 1936 में कांग्रेस के लखनऊ सम्मेलन में 'अखिल भारतीय किसान सभा' की स्थापना हुई और स्वामी सहजानंद सरस्वती को उसका पहला अध्यक्ष चुना गया।

उनकी बढ़ती सक्रियता से घबराकर अंग्रेजों ने उन्हें जेल में डाल दिया । कारावास के दौरान गांधीजी के कांग्रेसी चेलों की छल और प्रपंच से प्राप्त सुविधाभोगी प्रवृत्ति को देखकर स्वामीजी हैरान रह गए। स्वामीजी का कांग्रेस से मोहभंग हो गया। तब उन्होंने कांग्रेस के समाजवादी धड़े से हाथ मिलाकर किसानों के लिए कार्य किया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के साथ भी वे अनेक रैलियों में शामिल हुए। आज़ादी की लड़ाई के दौरान जब उन्हें गिरफ्तार किया गया तो नेताजी ने पूरे देश में 'फॉरवर्ड ब्लॉक' के जरिए हड़ताल करवाई थी।

स्वामी सहजानंद ने पटना के समीप बिहटा में सीताराम आश्रम स्थापित किया, जो किसान आंदोलन का केंद्र बना तथा वहीं से वे पूरे आंदोलन को संचालित करते रहे। जमींदारी प्रथा के खिलाफ लड़ते हुए स्वामीजी 26 जून 1950 को मुजफ्फरपुर (बिहार) में महाप्रयाण कर गए। राष्ट्रकवि 'दिनकर' के शब्दों में– 'दलितों का संन्यासी चला गया।'

स्वामी जी ने अंतिम वंचित व्यक्ति को न्याय दिलाने का प्रयास किया था। वर्तमान भारत के निर्माण में उनका अमूल्य योगदान है।

डॉ. अजय आर्य
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग
9300540698

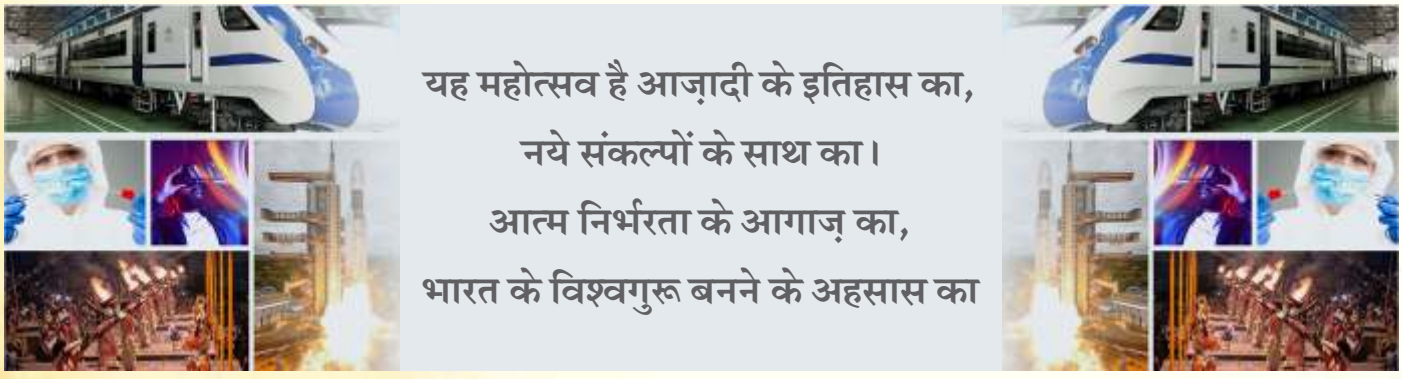

क्रैश हेल्मेट

मैं हूँ क्रैश हेल्मेट
हूँ मैं तुम्हारा, शुभचिंतक,
बनूंगा भी तुम्हारा सेवक
बनूंगा भी तुम्हारा मददगार
यदि अपनाओगे तुम
मुझे, दुपहिया चलाते,
हर बार ।।

रक्षा करूंगा
तुम्हारे सिर की
खा कर स्वयं पर चोट
नहीं करता मैं कभी,
मुझे अपनाने वाले से,
कोई खोट ।

क्या नहीं है तुम्हें अपने
सिर की परवाह
मुझे न अपनाकर क्या
नहीं हो गये हो तुम
बेपरवाह ?

विजय कुमार वर्मा
प्रबंधक, रिक्लेमेशन शॉप
भिलाई इस्पात संयंत्र
वै.सं. – 150443
मो. 9407984380

राजभाषा हिंदी के विकास बिन

संत कबिरा को ज्ञान, जायसी को प्रेमपंथ
सूर बालपन की मिठास रह जाएगी।
मीरा को दिवानो प्रेम, तुलसी को भक्तिभाव,
महादेवी उर की उसास रह जाएगी।

भूषण की वीरता, बिहारी को सिंगार,
घन आनंद के प्रेम की पियास रह जाएगी।
बच्चन को हालावद, केशव की रासलीला,
सीखें रहिमन की निराश रह जाएंगी।

वर्णन प्रकृति का करे हैं नागार्जुन जो,
'प्रसाद' अश्रुधारा सब व्यर्थ बह जाएगी।
क्रांति का बिगुल था जो फूँका 'हीरानंद' जी ने,
प्रीति रसखान की महत्व नहीं पाएगी।

भारतेंदु नागरी प्रचारिणी सभा प्रचार,
प्रकृति निराला की निःश्वास रह जाएगी।
राजभाषा हिंदी के विकास बिन गुप्त पंत,
दिनकर कविता उदास रह जाएगी।

सौरभ सिंह
सहायक प्रबंधक (यांत्रिकी), राइटस लिमिटेड
मध्य क्षेत्र निरीक्षण कार्यालय, भिलाई
मोबाइलः 7210788193

वतन मेरा सबसे प्यारा

देश यह मेरा, वतन मेरा सबसे प्यारा।
करूँ मैं इस पर अर्पण अपना तन मन धन सारा।
कभी उस दूर पश्चिम से फिरंगी एक आया था।
खून की बूँद दे दे कर उसे हमने भगाया था।
वीरों ने खून से सींचा जिसे भारत है वह माटी।
भगत के ख्वाब सी प्यारी हमें गढ़नी है यह माटी।
देश यह मेरा वतन मेरा सबसे प्यारा।

यहाँ हर डाल पर चिड़िया सुबह जब चहचहाती है।
लगे हर ओर से जैसे मोहब्बत गुनगुनाती है।
समंदर प्यार का गहरा हिमालय का सजा सेहरा।
यहाँ हर धर्म हर मजहब है वंदे मातरम कहता।
देश यह मेरा वतन मेरा सबसे प्यारा।
करूँ मैं इस पर अर्पण अपना तन मन धन सारा।

प्रशांत जैन
सहायक महाप्रबंधक, यूनिवर्सल रेल मिल अनुभाग - विद्युत
वैयक्तिक संख्या 401945, मोबाइल 9407982661

हिंदी है – राजभाषा हमारी

हम सब की अपनी, लगती सबसे न्यारी,
पूरब से पश्चिम, कश्मीर से कन्याकुमारी,
सबके दिल में बसती, व्यक्ति की अभिव्यक्ति,
ई–मेल – ट्वीटर, फेसबुक, के चक्कर में उलझी,
फाइलों में धूल खाती, सम्मान की अधिकारी,
क्यूँकि हिंदी है....., राजभाषा हमारी।।

बचपन के किस्से, कहानियाँ भी सारी,
कविता इसी से, साहित्य की फुलवारी,
हीन भावना रगों में, इस कदर घुल चुकी है,
ग्रन्थ– काव्य सारे, गीता– रामायण हमारे,
हिंदी में सुनी फिर, शर्म और डर क्यों है भारी ?
क्यूंकि हिंदी है....., राजभाषा हमारी।।

कहने को हिंदी, जन–जन की है दुलारी,
प्रयास हुआ बहुत, अब प्रण लेने की है बारी,
हिंदी पखवाड़े में, नाकामी छिपायँ या दिखाएँ ?
पढ़े – बढ़े, सीखें, सिखायें, सब नारे खोखले हैं,
कोशिशों से बढ़ आगे, अभ्यास में लाने की तैयारी,
क्यूँकि हिंदी है....., राजभाषा हमारी।।

जीत कर भी सबकुछ, लगती जैसे हारी,
अंग्रेज़ी के लिए जब, कोई नियम नहीं सरकारी,
इंग्लिश डे नहीं जब, हिंदी दिवस क्यूँ मनाना,
बोलचाल में रची फिर, अधिनियमों में क्यूँ फँसी है?
सर्वोपरि बने हिंदी, हम सबकी ज़िम्मेदारी,
क्यूंकि हिंदी है....., राजभाषा हमारी।।

सरल और सुगम है, नहीं किसी से कम है,
संस्कृत से उपजी, लिपि देवनागरी,
पाठ्यक्रम अंग्रेज़ी में सारा, वैकल्पिक हिंदी क्यूँ है?
उपेक्षित है फिर भी, धड़कन है हमारी,
समय आ गया अब, ये पहचान बने हमारी,
क्यूँकि हिंदी है....., राजभाषा हमारी।।

तिमाही– छमाहि रिपोर्ट, क्षेत्र 'क–ख–ग' में विभाजन,
नरकास व् समितियों का, शासकीय आयोजन,
चिंतन करें मिलकर, इलाज है या बीमारी ?
शासन डोर छोड़े तब, पतंगें उड़ेगीं ढेर सारी,
अंग्रेज़ों को भगाया, अंग्रेज़ी से जंग जारी
क्यूँकि हिंदी है....., राजभाषा हमारी।।

नियमों की ज़ंजीर तोड़, जब जनांदोलन बनेगा,
आज़ाद होगी हिंदी, तभी राष्ट्रभाषा का दर्ज़ा मिलेगा,
शब्दों में धनी है, फिर लिखने में क्यूँ कमी है ?
माथे की बिंदी, आत्मा बनेगी फिर हिंदी,
सब गर्व करेंगे इसपर, दुनियाँ करेगी उजियारी,
क्यूँकि हिंदी है....., राजभाषा हमारी।।

राकेश श्रीवास्तव
वरिष्ठ उप महाप्रबंधक (यांत्रिकी)
राइट्स लिमिटेड
मध्य क्षेत्र निरीक्षण कार्यालय, भिलाई

**प्रार्थना माँगना नहीं है,
यह आत्मा की लालसा है, यह हर रोज
अपनी कमजोरियों की स्वीकारोक्ति है ।
प्रार्थना में बिना वचनों के मन लगाना,
वचन होते हुए मन ना लगाने से
बेहतर है ।**

**भले ही आप अल्पमत में हो,
पर सत्य तो सत्य है आप अकेले
होने पर भी सत्य का साथ
मत छोड़ना**

– महात्मा गांधी

आसान है सरकारी कर्मी को, भ्रष्ट बोल देना

जन्मे तो अस्पताल, और प्रमाण पत्र सरकारी था ,
पोलियो ड्रॉप जो पिलाई, वो तंत्र सरकारी था,
जहाँ चटाई पर बैठ, खड़िया स्लेट पर चलाई,
वो प्राइमरी और सेकंडरी, स्कूल भी सरकारी था,
सस्ते में राशन वाला, कार्ड सरकारी था,
आधार और जनधन, खाता सरकारी था,
बिजली जो आती थी, पानी के टैंकर भी,
नहाते थे जिस पर, वो हैण्ड पंप सरकारी था,
फिर आम आदमी का चोला ओढ़, सब करते क्यूँ शोर हैं ?
बाकी सब ईमानदार, बस सरकारी कर्मी चोर हैं !!

मुनाफाखोरी व्यापारी की, सीना ज़ोरी उसी की,
मिलावटखोरी दलालों की, जोराज़ोरी उसी की,
काम जिनके हुए वो कहते, भई ले–दे के हुआ है,
जिनके नियमों में अटके, कहते रिश्वत के लिए रुका है,
सब काम करवा के, बिन सोचे मुँह खोल देना,
आसान है सरकारी कर्मी को, भ्रष्ट बोल देना।

छात्रवृत्ति सरकारी थी, मुफ्त शिक्षा सरकारी थी,
कच्चा पक्का जो मिलता, वो अक्षयपात्र सरकारी था,
पढ़ते थे रातों में, जब जाग जाग कर हम,
दीये और ढिबरी का, मिट्टी तेल सरकारी था,
सड़क पुल सरकारी थे , बूढ़े पिता की पेन्शन सरकारी थी,
खाद, बीज, मंडी और, न्यूनतम मूल्य सरकारी था,
कर्ज़ माफ़ी सरकारी, टैक्स फ्री इन्कम भी पाई,
धरना करने की आज़ादी, धरना स्थल भी सरकारी था,
फिर आम आदमी का चोला ओढ़, सब करते क्यूँ शोर हैं ?
बाकी सब ईमानदार, बस सरकारी कर्मी चोर हैं !!

बिन हेलमेट, बिन सीट बेल्ट, तेज़ गाड़ी चलाना,
सिगनल तोड़ ट्रैफिक, नियमों को धता बताना,
गलत काम सारे, आम आदमी बन करना
सूचना के अधिकारों का, दुरुपयोग करना,
रसूख दिखाकर, केस–फाइल निपटवा लेना,
आसान है सरकारी कर्मी को, भ्रष्ट बोल देना।

सी.ए.ए. पर जाम की, वो हाइवे सरकारी था,
सुरक्षा मिली थी, वो भी सरकारी थी,
राष्ट्र को भरमाया, धार्मिक उन्माद भड़काया,
जली दिल्ली दंगों में, वो संपत्ति सरकारी थी,
सतर्कता आयोग, ई.डी, सी.ए.जी. और ए.सी.बी.,
सरकारी कर्मी पर लागू, सब नियम सरकारी,
तबादले में उलझा, चार्ज शीटों में दबकर,
हर पल सेवाएँ देता, सब सह कर चुप रहता,
फिर आम आदमी का चोला ओढ़, सब करते क्यूँ शोर हैं ?
बाकी सब ईमानदार, बस सरकारी कर्मी चोर हैं !!

बढती जनसंख्या, सीमित होते संसाधन,
हर विभागों में होता, कर्मचारियों का नियोजन,
शिक्षा, पुलिस, आयकर, और आबकारी,
हर दफ्तर पर है, आज दबाव भरी,
अपनी नाकामियों का ठीकारा, दूसरों पर फोड़ देना,
आसान है सरकारी कर्मी को, भ्रष्ट बोल देना।

इतनी सारी बेड़ियाँ, डिजिटलीकरण की जंजीरें,
पारदर्शी प्रक्रिया, समयबद्ध फैसले की लकीरें,
लंच में अपना डब्बा भी, नहीं खोल पाता,
उस पर भी सरकारीकर्मी, भ्रष्टाचारी कहलाता,
चौतरफा घिरा है, हर ओर बरछी भाले
अपना महकमा, आयोग, और पूरा मंत्रालय,
किसी की भी उठी उंगली, तो स्पस्टीकरण मांग डाले,
विश्वास छलनी कर, कर्मी कि इज्ज़त उछाले,
फिर आम आदमी का चोला ओढ़, सब करते क्यूँ शोर हैं ?
बाकी सब ईमानदार, बस सरकारी कर्मी चोर हैं !!

राष्ट्र प्रगति पथ पर, कैसे बढता जाता,
इसरो डी.आर.डी.ओ., जौहर कैसे दिखता,
सबसे बड़ा नेटवर्क, रेलवे कैसे चलता,
तरक्की देख हमारी, चीन–पाक कैसे जलता,
कुछ चंद की गलतियों पर, भ्रांति गलत फैला देना
आसान है सरकारी कर्मी को, भ्रष्ट बोल देना।

राकेश श्रीवास्तव
वरिष्ठ उप महाप्रबंधक (यांत्रिकी)
राइटस लिमिटेड
मध्य क्षेत्र निरीक्षण कार्यालय, भिलाई

पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव

सपने और हकीकत, कुछ खट्टी– मीठी यादें,
वीरों की कुर्बानी, गोड्से और गाँधी,
कितने ही किस्से, कई अनसुनी कहानी,
भगतसिंह की जवानी, नेताजी की रवानी,
हँस के फाँसी चढ़े, झूले वतन के लिये,
जीना–मरना था जिनका, मादरे–हिंद के लिये,
जश्ने आज़ादी, तिरंगे का उत्सव,
पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव ।

बटवारे का दंश, हुआ मुल्क का विभाजन,
बिछड़े अपनों से कितने, उजड़ा कितनों का आँगन,
महाराजा हरिसिंह,कश्मीर पर पाक का वार,
राष्ट्रीयकरण रेल का, मिला वोट का अधिकार,
कुछ अनकही बातें, भूले बिसरे नग़में,
मिल्खासिंह की दौड़ें, सत्यजीत रे की फिल्में,
जश्ने आज़ादी, तिरंगे का उत्सव,
पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव ।

बाबा साहेब, संविधान और गणतन्त्र,
नेहरु को गद्दी, चुनाव और प्रजातंत्र,
सरदार पटेल ने, भारत को सँवारा,
जय जवान, जय किसान, लाल बहादुर का नारा,
नाभिकीय रियक्टर, पहला था एशिया में,
'मदरइंडिया' चलचित्र, नामांकित हुआ ऑस्कर में,
जश्ने आज़ादी, तिरंगे का उत्सव,
पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव ।

साठ के दशक में, हरित क्रांति हुई थी,
खाद्य सुरक्षा मिली, गेहूँ–चावल की उपजा बढ़ी थी,
हिंदी–चीनी भाई–भाई, दगाबाजी का वो मंज़र,
चीन ने पीठ पर बासठ में, उतारा था खंजर,
राष्ट्रीय बैंक उन्सठ में, अस्तित्व में था आया,
श्वेत क्रांति सत्तर की, दूध के लिए सहकारी बनाया,
जश्ने आज़ादी, तिरंगे का उत्सव,
पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव ।

इकहत्तर में नापाक, कोशिश जो की थी,
वीर जवानों ने, रावलपिंडी की कमर तोड़ दी थी,
पं. रविशंकर, प्रफुल्लसेन, विश्वशिखर पे छाये,
आज़ाद भारत के लिए, सम्मान लाए,
बांग्लादेश बना, हुआ शिमला समझौता,
वन बचाने को चमोली में, 'चिपको' आंदोलन चला था,
जश्ने आज़ादी, तिरंगे का उत्सव,
पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव ।

पहला नाभकीय परीक्षण, हुआ पोखरण में,
भ्रष्टाचार के खिलाफ छात्र, जुड़े जे.पी. आन्दोलन में,
आर्य–भटट् नाम था, देश के पहले उपग्रह का,
पचहत्तर में इंदिरा ने, आपातकाल लगाया,
मोरारजी देसाई और, मंडल कमीशन,
सतहत्तर से शुरू हुआ, शिक्षा में आरक्षण,
जश्ने आज़ादी, तिरंगे का उत्सव,
पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव ।

स्वर्ण मंदिर में आतंकी, आपरेशन'ब्लू स्टार',
इंदिरा की हत्या, चौरासी के दंगों में नरसंहार,
विश्व कप क्रिकेट में, कपिलदेव ने जिताया,
राकेश शर्मा ने अंतरिक्ष में, तिरंगा लहराया,
भोपाल की गैस त्रासदी, राजीव गाँधी का समय था,
शाहबानो केस में पलटा, उच्चतम न्यायालय का फैसला था,
जश्ने आज़ादी, तिरंगे का उत्सव,
पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव ।

छियासी में बोफोर्स, भागलपुर के दंगे ना भूले,
मंडल के खिलाफ, नब्बे में आत्मदाह के शोले,
अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण, बम धमाके से दहला,
प्रधानमंत्री की हत्या, लिट्टे का आत्मघाती हमला,
बाबरी मस्ज़िद गिरी, टूटा राम मंदिर का ताला,
मुंबई में बम धमाके, हर्षद स्टाम्प का घोटाला,
अटल आये सत्ता में, शक्ति परीक्षण पोखरण में,
चली दिल्ली–लाहौर बस, जो रुकी कारगिल में,
जश्ने आज़ादी, तिरंगे का उत्सव,
पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव ।

हाई जैकिंग निन्यानबे में, मैच फिक्सिंग की झलक,
भारत माला सड़क, गोधरा कांड तलक,

दो हज़ार चार में सुनामी, सूचना का अधिकार,
ओलंम्पिक में स्वर्ण, मनरेगा से रोज़गार,
लश्कर ने मुंबई को, आतंक से दहलाया,
बैलिस्टिक पनडुब्बी, शिक्षा का अधिकार पाया,
जश्ने आज़ादी, तिरंगे का उत्सव,
पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव ।

कॉमन वेल्थ खेल में, जीते सौ– सौ पदक,
धोनी फिर ले आया, दूसरा विश्वकप,
जन लोकपाल, मंगल आर्बिटर मिशन,
पोलियो मुक्त भारत, तेलंगाना का गठन,
नोट्बंदी, जी.एस.टी, जी.पी.एस. सिस्टम,
तीन तलाक पर रोक, तेजस ने दिखाया दम,
जश्ने आज़ादी, तिरंगे का उत्सव,
पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव ।

चन्द्रयान की कोशिश, धारा–370 खतम,
सर्जिकल स्ट्राइक में, किये आतंकी दफ़न,
ये था भारत का सफ़र, मंजिल खुद थी डगर,
महामारी कोरोना थी, ढूंढा आपदा में अवसर,
राम मंदिर का निर्माण, हुआ अब शुरू,
एक सपना भारत, बने फिर विश्व गुरू,
जश्ने आज़ादी, तिरंगे का उत्सव,
पचहत्तर बरस और अमृत महोत्सव ।

सूनी है कुर्सी, सूना बिछौना

छड़ी भी खड़ी, राह तकती सी मानों,
मफलर भी तकिये के, सिरहाने रखा है,
तुम यूँ गये कि, गई सारी रौनक,
कैसे रोके हैं अश्कों को, हमसे ना पूछो,
टूटा हो जैसे कोई, सपना सलोना,
सूनी है कुर्सी, सूना बिछौना,
सूना पड़ा, घर– आँगन का कोना ।

बादल, धरती, हवा भी वही है,
संग सब हैं हमारे, बस वो ही नहीं हैं,
आहट से जिसकी, थे हम घबराते,
उन चहल कदमियों की, राह देखते हैं,
कोई गर्म पानी की, उनकी थैली भरोना,
सूनी है कुर्सी, सूना बिछौना,
सूना पड़ा, घर– आँगन का कोना ।

दाँतों का सेट, चश्मा भी रखा है,
ताँबे की गिलास में, पानी भर ढँका है,
वो डाटें, वो बातें, सब सँजोई हुई हैं,
सब सीखा–जाना, जो भी तुमने सिखाया,
अब पथराईं आँखों को, सिखाओ ना रोना,
सूनी है कुर्सी, सूना बिछौना,
सूना पड़ा, घर– आँगन का कोना ।

खामोशी है पसरी, यहाँ से वहाँ तक,
कानों को जिसकी, आदत नहीं थी,
डरते थे जिसकी, आवाज़ से ही,
चिल्लाऐं कहीं से, इंतज़ार अब भी,
कोई हम से ना पूछो, क्या होता है खोना,
सूनी है कुर्सी, सूना बिछौना,
सूना पड़ा, घर– आँगन का कोना ।

खुशियाँ थी सारी, तुमसे हमारी,
जब हम लड़खड़ाए, उंगली थी तुम्हारी,
काँधे पर खिलाया , उड़ना सिखाया,
मुश्किलों में सर से, ना हाथ हटाया,
कुछ बोलो या डाँटो, इकबार फिर से लड़ोना,
सूनी है कुर्सी, सूना बिछौना,
सूना पड़ा, घर– आँगन का कोना ।

राकेश श्रीवास्तव
वरिष्ठ उप महाप्रबंधक (यांत्रिकी)
राइटस लिमिटेड
मध्य क्षेत्र निरीक्षण कार्यालय, भिलाई

मौन सब, फिर शोर क्यों है ?

भीड़ या, दो गज की दूरी,
मास्क था, कितना ज़रूरी,
खोया सब, दूसरी लहर में,
टला नहीं, खतरा अभी तक,
जान कर, फिर अंजान क्यों है?
मौन सब, फिर शोर क्यों है,
हर महाबली, कमज़ोर क्यों है ?

कैसी है, ये आपदा और,
कैसा यह, आपदा प्रबंधन,
हर किसी का, उजड़ा जहाँ है,
मुफ्त है, पर टीका कहाँ है,
बंद सब, फिर दौड़ क्यों है?
मौन सब, फिर शोर क्यों है,
हर महाबली, कमज़ोर क्यों है ?

छिन गया, कितनों का बचपन,
अब तक बिलखते, कितने ही मन,
दिल भी टूटा, साथ छूटा,
सिंदूर–बिंदिया, बाप–भाई,
मची हुई, फिर होड़ क्यों है?
मौन सब, फिर शोर क्यों है,
हर महाबली, कमज़ोर क्यों है ?

दर्द बाकी, आँसू भी,
ग्लानि थोड़ा, क्रोध भी,
मजबूरी ज़रा, लाचारी भारी,
मौत सामने, यम बन खड़ी,
कर रहे, फिर विरोध क्यों है?
मौन सब, फिर शोर क्यों है,
हर महाबली, कमज़ोर क्यों है ?

कमियों का, मंथन ज़रूरी,
संयम,या थी लापरवाही,
शासन या अनुशासन हीनता,
बचत की, वो ही धनी था,
फ़िक्र नहीं, फिर परेशान क्यों है?
मौन सब, फिर शोर क्यों है,
हर महाबली, कमज़ोर क्यों है ?

तरक्की–तकनीकी, के क्या मायने जब,
ना संभला कोई, ना कुछ संभाल पाया,
छोड़ गाँव की माटी, भटकता शहर में,
जीने को साँसे, भी ना खरीद पाया,
रोज होता, फिर ये पलायन क्यों है?
मौन सब, फिर शोर क्यों है,
हर महाबली, कमज़ोर क्यों है ।

मुफ़्त बिजली–पानी, राशन की चाहत,
पोषण की छतरी, शोषण की बारिश,
भ्रष्टतंत्र यंत्र, प्रार्थना– मंत्र सब,
व्यवहार– व्यापार, लालच– ख्वाहिश,
चुनाव रैलियों में, फिर भीड़ क्यों है?
मौन सब, फिर शोर क्यों है,
हर महाबली, कमज़ोर क्यों है ।

ना अपना बचा, ना कोई पराया,
लुटा जो भी, चपेट में आया,
संक्रमण रोक लेते,गर सजग होते,
नज़रंदाज़ कर, गलियों में ना निकलते,
आज इतना, फिर अफ़सोस क्यों है?
मौन सब, फिर शोर क्यों है,
हर महाबली, कमज़ोर क्यों है ।

राकेश श्रीवास्तव
वरिष्ठ उप महाप्रबंधक (यांत्रिकी)
राइटस लिमिटेड
मध्य क्षेत्र निरीक्षण कार्यालय, भिलाई

कोविड 19 का भारत में सामाजिक, तकनीकी और पर्यावरणीय प्रभाव

आज भारत समेत पूरा विश्व एक ऐसी समस्या का सामना कर रहा है, जिसका न तो किसी को प्रारम्भ पता लग पाया है ना ही कोई इसके अंत का अनुमान लगा पा रहा है। ऐसी सर्वव्यापी महामारी ने जब जब पृथ्वी पर अपने पैर पसारे हैं तब–तब वह अपना एक गहरा प्रभाव पूरे मानव प्रजाति पर छोड़ गई है । भारत संग समूचा विश्व ने एक साथ इस रोग से जंग लड़ी। इस जंग को सरलता से इस प्रकार समझा जा सकता है।

समाज बना समाज का रक्षक, हथियार बना 'तकनीक'।

बना पर्यावरण हमारा संरक्षक, सीखी अमूल्य 'सीख'।

भारतीय समाज

भारतीय समाज पर इसके प्रभाव को समझने के लिए हमें पहले भारतीय समाज को समझना होगा। भारत सामाजिक रूप से सक्रिय देश है। यहाँ हम सुख व दुःख सब मिलकर मनाते हैं चाहे वह विवाह हो, कोई त्यौहार हो या किसी की अंतिम विदाई। सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो यह कहना गलत नहीं होगा कि, भारतीयों ने विश्व के सबसे बड़े और कठोर सामूहिक बंद का सामना किया। पूरे देश की रौनक पर जैसे ग्रहण सा लग गया था । देश की सामाजिक व आर्थिक नींव हिली ज़रूर परंतु इसके कई अनदेखे फायदे भी हुए। समाज के स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता पर रखा गया। इस दौरान भारतीयों ने बहुत से परिवर्तन – कुछ सुखद कुछ दुखद अनुभव किये।

सामाजिक व्यवहार

किसी भी समस्या से लड़ने के लिए ज़रूरी है कि, सर्वप्रथम समाज को स्वयं में बदलाव लाने पड़ते हैं । समाज को अपने रवैये और मनःस्थिति में बदलाव लाने पड़ते हैं। समाज को एकजुट होकर अनुशासन को स्वीकारना पड़ता है। यही कोविड के साथ लड़ाई का मूल मंत्र भी बना । निजी हो या सार्वजनिक सभी स्थानों पर कोविड नियंत्रण – सरकारी निर्देशों का सख्ती से पालन किया गया। सामाजिक व्यवहार जैसे आपसी अभिवादन बिना हाथ मिलाए, उचित दूरी बनाए रखना, मुँह– नाक को ढकना, अनावश्यक छूने से बचना, स्वयं व बाहरी वस्तुओं को साफ रखना, आदि शामिल हुए। यह अब हमारी दैनिक आदतों में शामिल हो गया है।

सामाजिक कार्यक्रम होने बंद से हो गए। विवाह हो या अंतिम विदाई कम से कम लोगों के साथ किया गया। पढ़ाई हो या शारीरिक व्यायाम या फिर दफ्तर का काम सबने घर से ही किया। आइसोलेशन के चलते कई लोगों ने अकेलेपन का सामना भी किया । इससे उनके मानसिक अवस्था पर भी काफी असर पड़ा। अवसाद जैसे लक्षण में बढ़ोतरी होने लगी, परिणाम स्वरूप आत्महत्या दर में वृद्धि दिखी।

गरीबी पर हमला

वैसे तो कोविड ने समाज के हर हिस्से हो प्रभावित किया, परंतु हर आपदा की भाँति, भारत के आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग को इसकी एक भारी कीमत चुकानी पड़ी। गरीबी से बेबस, पहले ही ज़िन्दगी से जंग लड़ रहे थे कि अब एक नई चुनौती उनके सामने खड़ी थी । कई मध्यमवर्गीय परिवार गरीबी रेखा से नीचे आ गए।

सामूहिक बंद के चलते लोगों की जीविका पर भारी असर पड़ा। दैनिक आय पर निर्भर लोगों की ज़िन्दगी तो जैसे थम सी गई थी। मासिक किराए व किश्तें देने में लोगों को परेशानी झेलनी पड़ी। कैसे कोई भूल सकता है उन प्रवासी श्रमिकों का दर्द जो लॉकडाउन से परेशान, अपना पेट भरने के लिए पैदल ही कई मीलों की यात्रा पर निकल पड़े थे। अब न तो उनके पास पर्याप्त भोजन था, न ही भोजन कमाने का साधन, उनकी उम्मीद बस अब उनके अपने गाँव की खेती ही थी। बाजार की आपूर्ति श्रृंखला जैसे थम गई। यह देश की आर्थिक व्यवस्था के लिए बड़ा झटका साबित हुआ, निवेश की कमी से नई परियोजनों पर अंकुश सा लगता दिखा, जिससे देश में बेरोजगारी बढ़ती दिखी।

नई चुनौतियाँ

बढ़ती बेरोजगारी ने सामाजिक कुरीतियों को जन्म दिया। कई प्रांतों में बाल विवाह के जरिए मिले दहेज़ को लोगों ने नए कमाई के साधन के रूप में देखा। साइबर धोखे के नए आयाम देखने को मिले। लंबे समय घर में रहने से मनोवैज्ञानिक असर भी दिखे – लोग हताश हुए जिससे आपसी मतभेद भी बढ़े। महिलाओं पर अत्याचार व घरेलू हिंसा भी बढ़ी।

इन असमाजिकताओं को काबू में करने के लिए ज़रूरी था हमारी कानून व न्यायिक व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहे । जहाँ एक तरफ पुलिस लोगों को कोविड निर्देशों को पालन कराने में व्यस्त थी तो दूसरी ओर न्यायालय भी बंद थे। कारागार में एक ही स्थान पर कैदियों की बड़ी संख्या सरकार के सामने चुनौती बनकर उभरी।

न्यायपालिकाओं ने उन्हें भी जमानत दी परन्तु तब भी कैदियों को भीड़ से भरे जेल में ही अपना निर्वाह करना पड़ा।

समाज की दौलत – परंपरा

इस संकट की घड़ी में भारत का बरसों से कमाया परंपरागत ज्ञान बहुत काम आया और समाज ने उसे पूरे मन से स्वीकारा।

आज हिंदुस्तानी घरेलू औषधि को अपना रहा था, जैसे तुलसी, गिलोय, अश्वगंधा, लौंग, काली मिर्च, हल्दी, जैसे घरेलू उपयोग में आने वाले मसालों से बने काढ़े का उपयोग शारीरिक और मानसिक संतुलन बनाए रखने के लिए योगासन। कोविड से हुई श्वास लेने में तकलीफ को अनुलोम–विलोम, प्राणायाम जैसे योग की सहायता से कम किया गया। अब भारतीयों ने योग की शक्ति को और बेहतर ढंग से पहचाना। भारतीय समाज अब बिना कुछ विरोध किए इसे अपना रहा था।

समाज का हथियार – तकनीक

कोरोना महामारी से जंग में सबसे बड़ी ताकत यदि मानव के पास थी तो वह तकनीक थी। आज यही वो भरोसेमंद साधन बचा था जिसने हमें कोरोना से तो बचाया, पर हमारे रोजमर्रा के कार्यों को भी आसान बनाया। तकनीकी क्षेत्र में भारत बहुत सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ा। कोविड के दौरान भारत ने कई देशों को अमूल्य औषधि प्रदान कर विश्व में एक अलग पहचान बनाई। अतः भारत को दुनियाँ की फार्मेसी कहा जाने लगा । यही नहीं भारत के वैक्सीन मैत्री कार्यक्रम ने भी खूब सुर्खियाँ बटोरी। स्वतंत्र भारत में ऐसा पहली बार हुआ, जब किसी संक्रमित रोग के खिलाफ मात्र एक ही साल के अंदर स्वदेशी टीके का निर्माण कर, विश्व के सबसे बड़े और व्यापक टीका कार्यक्रम को प्रारम्भ किया गया। यहाँ भी भारत को जीत तकनीक की मदद से मिली। आज आरोग्य सेतु जैसे मोबाइल ऐप से हर भारतवासी बस एक बटन से अपने आस पास फैली बीमारी का जायजा घर बैठे ही ले सकता है , इतना ही नहीं हमारा पूरा टीका कार्यक्रम कोविन ऐप की सहायता से इतने सरल रूप में सफल हो रहा है। तकनीक का असर हमारे पढ़ने एवं सीखने पर भी दिखा। विद्यालयों का लम्बे समय बंद होने से हमारी शिक्षा में हुए नुक्सान को भी तकनीक की मदद से भरा गया। आज हर भारतीय घर बैठ कर पढ़ाई तो कर ही सकता है, साथ ही उसका आकलन भी अब घर बैठे होना मुमकिन हो पाया। हमारी संचार तकनीक से ही ज़रूरी प्रबंधन मुमकिन हो पाए हैं फिर वो सरकारी निर्देशों को आम जनता तक पहुँचाना हो या स्वास्थ्य परामर्श या खरीदारी सब घर में बैठकर संभव हो पाया । जल्द ही ऑनलाइन अदालतों को प्रारंभ किया गया । आज उच्च अदालतों की कार्यवाही को घर बैठ कर किया व देखा जा सकता है।

हालाँकि, यह सब महामारी से पहले भी मौजूद था परन्तु इसका आम नागरिकों द्वारा इतने बड़े पैमाने पर पहली बार इस्तेमाल हुआ, हाँ अभी भी बहुत से ऐसे गाँव थे जहाँ पर इसकी पहुँच नहीं है, पर इस दिशा में भी भारत सरकार पूरे जोर–शोर से लगी हुई है। भारतीय समाज ने बिना छुए चलने वाले उपकरणों पर भी अपना भरोसा बढ़ाया है। ऐसे उपकरणों को सामूहिक स्थलों पर रखा गया। बिन छुए हाथ साफ करना, तापमान नापना, मुख पहचान हाज़िरी लगाना , आँखों की पुतली से पहचान करना शामिल है। राशन वितरण को आधार से जोड़ कर इस तकनीक का उपयोग किया गया। पैसों को भी इलेक्ट्रॉनिक लेन देन के जरिए ही लिया व प्रदान किया गया। कार्यालयों में इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज व डिज़िटल हस्ताक्षर को बढ़ावा मिला।

तकनीकी विभाजित समाज

आज एक तकनीकी विभाजन, समाज में साफ देखा जा सकता है। कुछ लोग जो पढ़े लिखे सक्षम है उनके लिए मोबाइल से सभी चीजें बहुत सरल हो गई हैं परन्तु बहुत से भारतीय आज भी अनपढ़ व गरीब हैं , उनके पास मोबाइल फोन जैसी सुविधा उपलब्ध नहीं है। इससे समाज के अमीर गरीब की दूरी और बढ़ रही है। सक्षम लोगों की हर स्थान पर पहुँच और आसान हो गई परन्तु गरीब असक्षम लोग जो पहले ही जीने के लिए संघर्ष कर रहे थे, उनके लिए यह अब एक और संघर्ष बन गया।

समाज का संरक्षक – पर्यावरण

अजैविक घटक – पर्यावरण पर कोरोना का कुछ हद तक सकारात्मक प्रभाव पड़ा। सामूहिक बंद के कारण प्रदूषण में भारी कमी आई। महानगर प्रदूषण मुक्त हवा का आनंद ले तो पाए परंतु यह आनंद चंद दिनों का ही मेहमान था । जैसे जैसे बंद खुलने लगा शुद्ध हवा में प्रदूषण का स्तर बढ़ना प्रारंभ हो गया। कोविड के चलते लोगों ने सामूहिक परिवहन से परहेज़ करना शुरू कर दिया। लोग आज अपने निजी वाहनों से जाना ही पसंद कर रहे थे, जिसके कारण हवा में प्रदूषण तेजी से बढ़ा।

वहीं जैविक प्रदूषण का खतरा भी बढ़ने लगा। अपनी स्वच्छता तो ध्यान में रखते हुए लोग मास्क, दस्ताने पहनते तो थे, परंतु उन्हीं को खुले में सड़क पर फेंक देते थे जिससे कीटाणु का फैलने का ख़तरा और

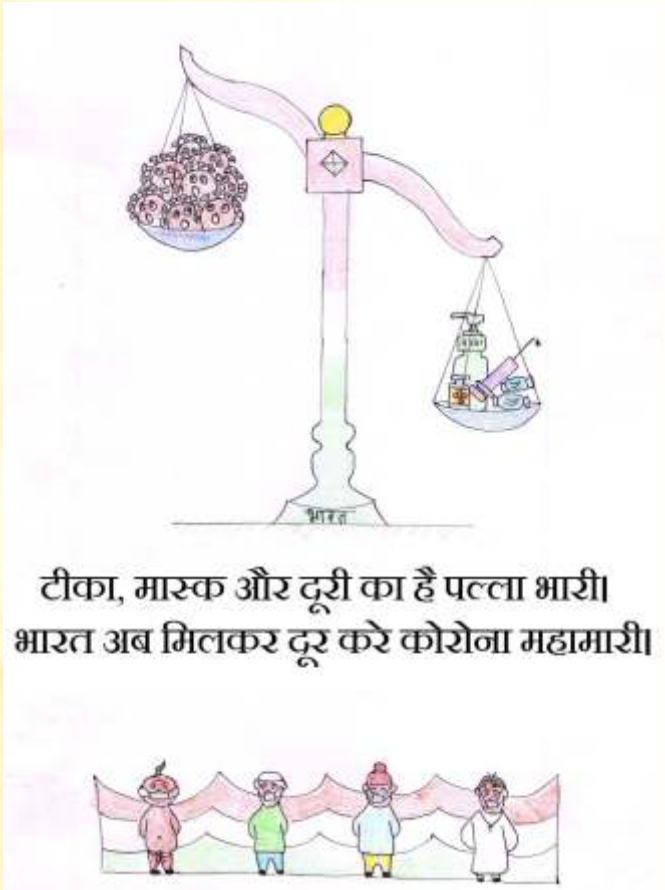

भी बढ़ गया। इतना ही नहीं इससे धरती पर प्रदूषण भी बढ़ा। पुनः इस्तेमाल जैसे रुक सा गया। लोग बार– बार अपने हाथों को धोते, जिससे साबुन की मात्रा पानी में भी बढ़ रही थी।

जैविक घटक – अन्य जीव जंतुओं पर भी कोरोना का असर पड़ा, ऐसे काफी उदहारण हमारे सामने हैं जिसमें चिड़िया घर में बंद जानवरों में भी कोरोना संक्रमण पाया गया, गली के जानवर जो समाज द्वारा दिए खाने पर निर्भर थे, उन्हें भी इस बंद की मार झेलनी पड़ी। लम्बे समय से बंद के कारण समाज का कुछ दुर्लभ प्रजातियों को एक बार फिर से देख पाना संभव हुआ। बंद की कीमत पालतू पशुओं को भी चुकानी पड़ी, उनकी सैर से लेकर चिकित्सा सेवाएँ सब प्रभावित हुए।

समाज का मित्र – समाज

आज़ाद भारत ने पहली बार इतनी बेबसी का सामना किया। परन्तु एक वो चीज, जिससे हम भारतीयों ने इस आपदा का सामना किया वह थी हमारी एकता। फिर चाहे एक साथ थाली बजाकर कोविड कार्यकर्ताओं की हौसला अफजाई हो, या दिया जला कर एक दूसरे का मनोबल बढ़ाना हो। भारतीय समाज का उदार रूप भी सामने आया । सभी ने अपनी ज़िम्मेदारी समझी, किसी ने अपनी एक दिन की आय से सहायता की, तो किसी ने अन्न दान दिया, तो वहीं किसी ने श्रम दान कर बेसहारों को खाना देकर सेवा की। सरकारी और गैर सरकारी संगठनों ने भी अपनी भूमिका निभाई – विकलांग हो या मानसिक रोगी, गरीब हो या आदिवासी। समाज ने ही समाज की मदद की। अंत दो पंक्तियों के साथ करना चाहूंगा।

यह आपदा समस्या नहीं, "नए अवसरों" की दिशा दिखा गया ।
समाज को निर्बलता नहीं, "एकता की शक्ति" का पाठ पढ़ा गया।

शिवम् कृष्णात्रेय
सहायक प्रबंधक यांत्रिकी
राइटस लिमिटेड
मध्य क्षेत्र निरीक्षण कार्यालय, भिलाई

ज़िन्दगी मुझे जीना सिखा दे

ऐ ज़िन्दगी मुझे जीना सिखा दे
थक गया हूँ यूँ चलते–चलते,
तू मेरी मंजिल तक पहुँचा दे
ऐ ज़िन्दगी मुझे जीना सिखा दे।

जी रहा हूँ ग़म–ए–ज़िंदगी
मुझे वो खुशी के पल दिला दे,
मेरे चेहरे पर मुस्कान के वो पल ला दे
ऐ ज़िन्दगी मुझे जीना सिखा दे।

जी रहा हूँ कठपुतली वाली ज़िन्दगी
मेरी हकीक़त से रूबरू करा दे,
मेरे चेहरे से मुखौटा हटा दे
ये ज़िन्दगी मुझे जीना सिखा दे।

अपनों की भीड़ में खुद को भूल गया
खुद की आँखों से भी धोखा मिल गया,
मुझको मेरी पहचान करा दे
ऐ ज़िन्दगी मुझे जीना सिखा दे।

अमन सिंह
अभियंता, राइटस लिमिटेड
मध्य क्षेत्र निरीक्षण कार्यालय, भिलाई
मोबाइलः 9752771759

शाम हो चली है।

कुछ सुबह के साथ की
कुछ शामों के आगाज़ की
अक्सर टूटी हुई नींदों के बाद की
हर उम्मीदों की
शाम हो चली है।

छुपता हुआ मैं बादल के पीछे
गिरता हुआ ज़मीन से नीचे भी
थोड़ा थका मैं थोड़ा टूटा हुआ
घबरा के आँखे भींचे भी
मेरी आधी खुली बंद मुट्ठी से
बस फिसलती हुई हिम्मत की
अब शाम हो चली है .....

संभाल के रखते हुए चलता आया
कुछ कहानियाँ उधेड़बुन के किश्तों की
बचपन से लेकर बचपन की यादों तक
कुछ साफ कुछ धुंधले से रिश्तों की
देखो .... शाम हो चली है।

शोर से खामोशी की तरफ दौड़ती
उजाले से अंधेरे की ओर बहने की,
ऐसा नहीं की कुछ रहा नहीं मेरी नज़रों में देखने को
पर बातें बहुत थी तुमसे कहने की,
मजबूत बहुत था मैं अंदर से अंतर तक
भीगी आँखें और बंद मुट्ठी कर सहने की
शाम हो चली है।

कुछ इकट्ठी लकड़ियों के ठीक ऊपर
तने हुए शरीर को बिछाए हुए
भावमुक्त चेहरे का हुनर सीख सीख
सारे गिले शिकवे बखूबी छिपाए हुए
कुछ अंदर से तो कुछ बाहर से जलता हुआ
कुछ स्थिर सा वहीं तो कुछ बिलकुल पिघलता हुआ
कुछ राख के बीच ही दम तोड़ गया
और कुछ गंगा में बहता हुआ ही छोड़ गया
एक बहुत लंबे समय से ढलते प्रहर की
जीवन चक्र के अनिश्चित अनोखे सफ़र की
अब .... शाम हो चली है।

अलंकार समद्दार
वित्त एवं लेखा, भिलाई इस्पात संयंत्र

जन गण मन हम सब मिलकर समवेत स्वर में गाएँ

आजादी का अमृत महोत्सव भारतवासी मनाएँ,
जन गण मन हम सब मिलकर समवेत स्वर में गाएँ।

मातृभूमि की स्वर्ण ध्वजा,
हम सब मिलकर लहराएँ,
स्वतंत्रता सेनानियों की,
गौरव गाथा सुनाएँ।

आज़ादी के दीवानों का गौरव इतिहास बताएँ,
जन गण मन हम सब मिलकर समवेत स्वर में गाएँ।

मातृभूमि वसुंधरा की,
महिमा मिलकर गाएँ,
शहीदों की पुण्य स्मृति में,
मिलकर दीप जलाएँ।

आज़ादी के रखवालों का चिंतन बोध बताएँ,
जन गण मन हम सब मिलकर समवेत स्वर में गाएँ।

सुभाष, भगत, बाबा साहब के,
पदचिन्हों पर चलते जाएँ,
गाँधी, वीर सावरकर का,
संदेश जन–जन तक पहुँचाएँ।

आज़ादी के रखवालों का चिंतन बोध बताएँ,
जन गण मन हम सब मिलकर समवेत स्वर में गाएँ।

हम सब भारतवासी मिलकर,
राष्ट्रीयता का अलख जगाएँ,
आओ हम सब एकजुट होकर,
आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँ।

आज़ादी के रखवालों का चिंतन बोध बताएँ,
जन गण मन हम सब मिलकर समवेत स्वर में गाएँ।

छगन लाल नागवंशी
राजभाषा अधिकारी,
फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड, भिलाई

भिलाई औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण का अद्भुत संगम

मध्य भारत स्थित छत्तीसगढ़ का दिल कहा जाने वाला नगर– भिलाई। इस नगर की विशेषता कुछ इस प्रकार कही जा सकती है :–

पर्यावरण है मित्र, विविधता और अनेक औद्योगिक इकाई।

छत्तीसगढ़ का दिल, शिवनाथ के किनारे है अपना भिलाई।

शहरी क्षेत्र का एक अपवाद

जहाँ एक तरफ औद्योगिक प्रबलता है तो वहीं दूसरी तरह प्राकृतिक नीरवता, जहाँ एक तरफ कारखानों से निकलती झिलमिल रौशनी का दृश्य हैं तो वहीं दूसरी ओर बगीचों में सुसज्जित विभिन्न पुष्पों का दृश्य है, जहाँ एक तरफ सूर्य के तेज सा बढ़ता औद्योगीकरण है तो वहीं दूसरी ओर चन्द्रमा की शीतलता सी फैलती प्रकृतिकरण। यहाँ तेजी से विकसित होते औद्योगिक व्यवसाय हैं तो फुर्सत से शांत उद्यान भी। भिलाई को एक संतुलित नगर कहना गलत नहीं होगा। यहाँ आकर्षित करता मैत्री बाग है तो चकित करता भिलाई इस्पात संयंत्र, हरा–भरा सुनीति उद्यान है तो उर्जित एन.एस.पी.सी.एल. भी, दिलकश शहीद उद्यान है तो जे.पी. सीमेंट उद्योग भी।

प्रकृति की गोद में औद्योगिक इकाइयाँ :

दोनों तरफ दौड़ते तेज़ रफ्तार वाहनों के बीच गर्व से खड़े वृक्ष पुष्प बिखेरते हुए मानों आपका स्वागत कर रहे हों। यहाँ मनुष्य ने प्रकृति के साथ सौहार्द्र में रहना बखूबी सीख लिया है। आम शहरों से अलग यहाँ प्रकृति की गोद में अनेक औद्योगिक इकाइयाँ हैं। भिलाई विकास की नींव कहे जाने वाले इस्पात के जनक, मजबूत बुनियाद को अंजाम देने वाले सीमेंट के निर्माता, देश को रौशन करती बिजली के उत्पादक के रूप में उभरा है। इसके साथ ही अन्य विभिन्न इकाइयॉ जैसे– दुग्ध उद्योग, कृषि उद्योग, चावल मिल, खाद्य तेल, पत्थर क्रशर, वायर ड्राइंग इकाई, आदि शामिल हैं।

सबसे अनमोल संपत्ति–जल

प्रकृति ने मानव को जल एक अनमोल संपत्ति के रूप में सौंपा है। ऐसे में इसका उचित उपयोग हमारी जिम्मेदारी बनती है। इस जिम्मेदारी को भी भिलाई ने बखूबी निभाया। भिलाई ने जल को बर्बाद न करके इसका सटीकता के साथ प्रयोग कर अपने औद्योगिक विकास को और भी आबाद किया है। यहाँ की इकाइयों ने प्रयुक्त हुए जल को पुनः चक्रित कर पुनः उपयोग किया जिससे यहाँ की नदियों से कम जल लेकर ही काम हो गया है। साफ पानी की खपत भी कम हुई है। भिलाई द्वारा प्रदूषित जल को उचित उपचार के बाद ही नदियों में छोड़ा जाता है जिससे पर्यावरण में जल स्वच्छ बना रहता है।

आकाश से बरसती अमृत रूपी – वर्षा

आकाश से बरसती अमृत रूपी वर्षा की एक–एक बूँद कीमती है और इसकी महत्ता को समझते हुए भिलाई प्रशासन ने कई सामूहिक स्थानों पर वर्षा जल संचयन प्रणाली को लगाया है। इकाइयों एवं विद्यालयों की छतों ने वर्षा जल एकत्र करने का काम किया। इस जल को कई उपयोग जैसे पेय जल, खाना बनाने हेतु या भू जल बनाए रखने के तौर पर प्रयोग किया जा रहा है। भिलाई इस्पात संयंत्र के प्लेट मिल की छतों से एकत्रित जल को मरोदा 1 जलाशय तक भेजने को योजनार्गत तरीके से अंजाम दिया जा रहा है। भिलाई में कई जल संग्रहण क्षेत्र भी बनाए गए हैं जो वर्षा जल को जमा रखते हैं। इससे प्रकृति द्वारा प्रदान किये गए मुफ्त शुद्ध जल का तो उपयोग होगा ही साथ में गिरते भूजल स्तर में बढ़ोतरी भी होगी।

सूर्य नमस्कार :–

किसी भी विकास के लिए ज़रूरी है – ऊर्जा, भिलाई के औद्योगिक विकास के सामने भी यही एक चुनौती थी एक तरफ विकास जिसके लिए ज़रूरी था ऊर्जा का प्रबंधन तो दूसरी ओर उसके पर्यावरण की रक्षा। परन्तु भिलाई ने मध्य पथ को चुना, अपनी ऊर्जा आपूर्ति तो की ही साथ ही प्रकृति पर आँच भी न आने दी। यह रास्ता था सौर ऊर्जा का। सूर्य गर्मी और रौशनी का स्त्रोत ही नहीं बल्कि ऊर्जा का भी एक अच्छा माध्यम बना। भिलाई में निकटतम चरोदा रेल्वे स्टेशन पर सौर ऊर्जा का संयंत्र लग रहा है, साथ ही कई इकाइयों ने अपनी छत पर सौर पैनल लगा कर ऊर्जा उत्पादन की नई प्रणाली की नींव रख दी है जिससे पर्यावरण को क्षति भी नहीं पहुँच रही है।

मिट्टी की सेहत – भिलाई की सेहतः

मिट्टी, जिससे पर्यावरण का आधारभूत अंग माना जाता है, उसकी सेहत सर्वाधिक ज़रूरी होती है। किसी स्थान के पेड़–पौधे, खेती, मनुष्य एवं पशुओं का रहन सहन सभी वहाँ की मिट्टी पर सबसे अधिक आश्रित होता है। यदि मिट्टी की सेहत अच्छी है तो उस स्थान

पर फल फूल रही प्रकृति की सेहत भी अच्छी होगी परन्तु औद्योगीकरण का बोझ भूमि पर सबसे अधिक पड़ता है और इसी बोझ को कम करने की दिशा में अग्रसर होकर भिलाई ने अपनी मिट्टी की उचित निगरानी कर अनेक कदम उठाए जिसके परिणाम स्वरूप आज भिलाई की मिट्टी का पी एच तटस्थ/न्यूट्रल स्थिति में है। नाइट्रोजन मध्यम तथा जैविक कार्बन की मात्रा अच्छी है परिणाम स्वरूप वृक्षों/फसलों के विकास के लिए पूरे क्षेत्र की मिट्टी की उर्वरकता बनी हुई है।

औद्योगिक उप–उत्पाद एवं अपशिष्ट प्रबंधन

यहाँ एक इकाई का अपशिष्ट दूसरी इकाई के लिए संसाधन बन जाता है। औद्योगिक उप–उत्पादन प्रबंधन के अनेक उदाहरण भिलाई में देखने को मिलते हैं जैसे – कोयले से निकली राख का प्रयोग सीमेंट या ईंट बनाने में होना, कोयले की टार से नैप्थेलिन की गोलियों का निर्माण, स्लैग का उपयोग सड़क बनाने में, चावल के भूसे से खाद्य तेल के उत्पादन में आदि इत्यादि।

वायु उत्सर्जन प्रबंधन –

वायु के बिना एक पल भी जीवन संभव नहीं है। औद्योगिक विकास में प्रदूषित वायु उत्सर्जन एक बाधा के रूप में सामने आता है। परन्तु यदि इसका प्रबंधन सही ढ़ंग से किया जाए तो पर्यावरण को बिना क्षति पहुँचाए विकास गति बनाए रखना संभव है। ऐसा ही कुछ भिलाई में देखने को मिला, यहाँ के उद्योग ने वायु प्रदूषण नियंत्रण के उद्देश्य से कई आधुनिक तकनीकों को अपनाया जैसे– शुष्क इलेक्ट्रॉनिक प्रेसिपिटेटर, ब्लास्ट फर्नेस में कोल इस्ट इंजेक्शन, गैस क्लीनिंग सिस्टम। भिलाई इस्पात संयंत्र में कोक ओवन एवं सिंटरिंग प्लांट वायु प्रदूषण की रोकथाम में अहम् भूमिका अदा करते हैं। इकाइयों ने डस्ट उत्पादक स्थानों का शुद्धिकरण डस्ट एक्सट्रैक्टिंग प्रणाली से किया जिससे भिलाई क्षेत्र के वायुमंडल की शुद्धता तय सीमा में रही।

ध्वनि प्रदूषण :–

आज ध्वनि को भी सीमित किया गया है। क्योंकि औद्योगिकी के विकास के रास्ते में अनेक यंत्रों की आवश्यकता होती है, जो कि ध्वनि विसर्जन का मूल कारण बनते है। यही नहीं औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए परिवहन सेवा भी आवश्यक होती है जिसने भी ध्वनि निकलती है। यह ध्वनि मनुष्य ही नहीं बल्कि अन्य पशु पक्षियों में भी अशांति पैदा करती है। इन बाधाओं को भिलाई ने भली भांति समझा और शहर व औद्योगिक क्षेत्रों में ध्वनि नियंत्रण यंत्र लगा कर निगरानी तो की ही साथ ही ध्वनि स्त्रोत यंत्रों के चारों ओर साइलेंसर, कम्पन आइसोलेटर और कम ध्वनि वाले आधुनिक यंत्रों का प्रयोग भी किया। इकाइयों के चारों ओर हरित पट्टी (ग्रीन बेल्ट) लगाया गया जिसने ध्वनि अवशोषण का काम किया और ध्वनि को तय सीमा में रखा।

पशु–पक्षी का संरक्षण:

भिलाई ने पशु पक्षियों के संरक्षण हेतु मैत्री बाग नामक चिड़िया घर भी बनाया है। वह आज कुछ दुर्लभ प्रजाति जैसे सफेद शेर सहित कई अन्य जातियों के लिए एक सुरक्षित घर के रूप में देखा जाता है। विभिन्न प्रकार के वन्य प्राणियों का मानव के साथ अद्भुत अभिसरण होता है। भिलाई ने औद्योगिक क्षेत्र में जीव जंतुओं का संरक्षण कर एक अलग पहचान प्राप्त की है। ताल पुरी जलाशय के किनारे वृक्षारोपण कर उस क्षेत्र को विभिन्न प्रजातियों के प्रवासी पक्षियों हेतु सुरक्षित एवं संरक्षित किया गया है।

नए अवसर – नया सवेरा:

भिलाई अभी भी नए औद्योगिक आयाामें में अवसर तलाश रहा है। इनमें गैर प्रदूषणकारी उद्योग जैसे सूचना प्रौद्योगिकी है। ठोस कचरा प्रबंधन को भी प्रशासन ने लागू किया। यहाँ के उद्योगों ने पुनर्चक्रण पर अपना भरोसा जताया। उपयुक्त वाष्प के ताप का भी उपयोग कर उर्जा की नई दिशाएँ देखी जा रही हैं। मूर्ति विसर्जन हेतु जलाशय निर्धारित किये गए हैं तथा मूर्तियों में जैविक रंगों का प्रयोग जलाशय को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए एक सराहनीय प्रयास है। आज हम सब साक्षी हैं किस प्रकार भिलाई के उद्योगों ने विकास मानकों के साथ साथ अंत में दो पंक्तियाँ कहना चाहूंगा–

औद्योगिक विकास हो रहा पर्यावरण संग,
यह अनूठा संगम बना आज भिलाई का रंग।

शिवम् कृष्णात्रेय
सहायक प्रबंधक यांत्रिकी
राइटस लिमिटेड
मध्य क्षेत्र निरीक्षण कार्यालय, भिलाई

छत्तीसगढ़ी संस्कृति एवं आम लोक जीवन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है एवं समाज के संस्कृति व रीति रिवाजों के मध्य पालन – पोषण से बड़ा होता है। वह अपने चारों तरफ मौजूद सांस्कृतिक गतिविधियों से ज्ञात – अज्ञात तथ्यों को समझता बुझता है। विकास और समय के निरंतरता में मानव समूह और संगठन में रहकर विविध कलाओं में निपुण होता है। समय के क्रमिक विकास के साथ मनुष्य अनुभवी और परंपरा गत सुधारवाद से मज़बूत होकर अनवरत पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी उन्नत संस्कृति, रीति रिवाजों को अविरल नदी समान प्रवाहित करते रहता है। प्रकृति के सानिध्य में मानव के चेतन और अवचेतन मन से नव निर्माण प्रक्रिया के जो भाव बहते हैं,वहीँ से ही लोक संस्कृति का जन्म होता है। इसी लोक संस्कृति में लोक जीवन के इतिहास की परतें और भविष्य की धुंध भी संलग्न होती है।

यह लोक रचित साहित्य एक अथाह सागर है। लोक साहित्य वह युग युगीन संस्कृति व साहित्य है, जो सदियों से मौखिक परंपरा से प्राप्त होती रही है। इसकी रचना और रचनाकारों का पता ही नहीं होता और समस्त लोक ही उन्हें अपनी कृतियाँ मानता है। इनमें सामान्य लोक समूह की वाणी समाहित रहती है,जो समाज में प्रचलित संस्कृति व परम्पराओं में क्रमशःक्रियाशील होती है और लोक साहित्य की रचना होती है। लोक साहित्य उतना ही पुराना है जितना मानव सभ्यता, लोक साहित्य में प्रत्येक अवस्था, वर्ग, समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित है,क्योंकि इसमें सदियों की छाप अन्तर्निहित है।

छत्तीसगढ़ राज्य के लिए छत्तीसगढ़ी अस्मिता और साहित्य ही प्राण है॰ छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान उसकी अपनी भाखा– बोली, पहनावा, खानपान, परंपरा एवं गाँव की जीवंत संस्कृति है। छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य में जन्म संस्कार से लेकर मृत्यु संस्कार तक सारी सामाजिक परम्पराओं को प्रमुखता दी गयी है। लोक साहित्य के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ संपन्न है। छत्तीसगढ़ प्रागैतिहासिक काल से ही जंगलों , नदियों और पहाड़ियों में बसे होने के कारण हमेशा से ही सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक कालीन महत्त्व का केंद्र रहा है। आदिकाल के सामाजिक संरचना के मौजूदगी का प्रमाण विद्यमान है साथ में प्रागैतिहासिक कालीन समय के जनजातीय एवं जन संस्कृति में प्राचीन लोक साहित्य भी विद्यमान है। यहाँ के लोक साहित्य तथा आम जनजीवन पर श्री रामानन्दाचार्य, महाप्रभु वल्लभाचार्य और संत कबीर दास जी के भक्ति दर्शन एवं छत्तीसगढ़ के प्रथम संत शिरोमणि गुरुघासीदास जी के वाणी का अमिट प्रभाव है। जिसका प्रयोग समय दर समय लोक साहित्य सृजन में अनवरत होता रहा है। छत्तीसगढ़ी लोक जीवन के वाचिक परंपरा जैसे लोक गीत, लोक गाथा, लोक कथा, लोक नृत्य,बुझौल,पर्व त्यौहार, ग्राम देवता, मेला मडई के साथ साथ मूर्ति कला – काष्ठ व् मिट्टी , गुदना , लोक रंजन .खेल आदि संस्कृति के धरोहर है।

लोक गीत में प्रचलित विधायें एवं संस्कृति लोक द्वारा स्वयं रचित एवं लोक के रचे गए गीतों को लोक गीत कहा जाता है। यह विभिन्न समुदायों में प्रचलित परंपरागत गीत होती है, जिसे एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा लोक समाज अपनाता है, लोक गीत मौखिक , कंठस्थ और कर्णप्रिय होने से पीढ़ी दर पीढ़ी तक बरकरार रहता है। लोक गीत दिल से निकली सुरीली आवाज है, लोक गीत अशिक्षित समाज की अमूल्य धरोहर है, इसमें जीवन के अनुभव की सच्चाई और सादगी झलकती है। छत्तीसगढ़ के लोक गीतों में सरस जीवन की छाप प्रतिबिम्बित होता है। छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में सरल जीवन गाथा होता है। सप्तरंगी प्रकृति छटा की मोहक गुंज , जनों की कर्ण प्रिय राग की झंकार, पुलक, प्रसन्नता, लोरी की आवाज सदैव सुनाई पड़ती है॰ छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में संस्कार गीत (सोहर, जनम, लोरी, विवाह और मृत्यु) पर्व गीत(फाग, करमा, गौरा – गौरी , जंवारा– भोजली छेर – छेरा ,डंडा नाच, सुआ, बांस, पंथी पंडवानी), खेल गीत(अटकन– बटकन, फुगड़ी, डंडी, कबड्डी, गेड़ी) तथा दर्द गीत और ददरिया प्रमुख है।

लोक कथा से तात्पर्य किसी भी क्षेत्र विशेष में जनश्रुतियों के जरिये चली आ रही कथाएँ होती हैं। लोक कथाएँ हमें मानव की परंपरागत वसीयत के रूप में प्राप्त होता है। चौपालों में इसका निर्माण कब, कहाँ, कैसे और किसके द्वारा हुआ यह बताना असंभव है। लोक कथा की भाषा गद्य होती है। यह कौतूहल और बौध्दिक जिज्ञासा का ही कारण है, जिसमें समाज की प्रचुर मौखिक साहित्य की ज्ञान का पता चलता है। लोक कथाएँ जातीय ज्ञान को सदैव सुरक्षित रखती है,तथा आत्मविश्वास और मूल्य शक्ति का भंडार को भरती है। लोक नाट्यों का लोक जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। यही कारण है कि लोक से सम्बंधित उत्सवों, अवसरों तथा मांगलिक कार्यों में स्वतः अभिनय किया जाता है। यह सदियों से लोक जीवन में रंग घोलता है, इससे ज़िन्दगी की तकलीफों को कुछ देर भुला दिया जाता है। छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य में नाचा ,रहस और गम्मत की परंपरा जीवंत उदाहरण है। लोक नाट्य नाचा छत्तीसगढ़ के लोक जीवन की विशद एवं सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम है। लोक जीवन एक ऐसे मौके हैं ,जो अपनी माटी से लिपटकर सांस्कृतिक परम्पराओं को जीवंत बनाये रखता है,क्योंकि लोक जीवन में पग–पग पर लोक संस्कृति के दर्शन होते हैं। लोक जीवन की आत्मा सर्वसाधारण वह आम जनता जो नगरों से दूर गाँवों ,वन प्रान्तों में निवास करती है,जो सभी जन समुदाय सहज भाव और प्रेम से प्रतीक्षारत किसी भी पर्व,उत्सव ,तीज त्यौहार एवं शुभ मांगलिक कार्यों में खुशी से नाच गाकर अनंत इच्छाओं को तृप्त करते हैं।

पुरेन्द्र कुमार ठाकुर
आर.डी.सी.आई.एस., भिलाई

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कन्स्ट्रक्शन लिमिटेड Hindustan Steelworks Construction Limited

(भारत सरकार का एक उद्यम) एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड की एक सहायक कम्पनी, निर्माण भवन, भिलाई–490001, जिला–दुर्ग (छ.ग.)
वेब साईट web site : www.hscl.co.in ई–मेल E-mail : hsclbhilai.unitsectt@hscl.co.in सिन CIN : U27310WB 1964 GOI 026118

AN ISO 9001-2008 COMPANY

Creating Infrastructure with a difference

स्थल सृजन को एक पहचान देना

हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कन्स्ट्रक्शन लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम) एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड की एक सहायक कम्पनी,निर्माण भवन, भिलाई–490001, जिला–दुर्ग (छत्तीसगढ़)

HINDUSTAN STEELWORKS CONSTRUCTION LIMITED

(A Government of India Undertaking), A subsidiary of NBCC (India) LimitedNirman Bhavan, Bhilai- 490001, Distt- Durg(C.G.) दूरभाष Phone 2223878,2276625, 2355242
वेब साईट web site : www.hscl.org ई–मेल E-mail: hscl_bhilai18@gmail.com
पंजीकृत कार्यालय – पी 34/ए, गरियाहाट रोड (दक्षिण), कोलकता (पं. बंगाल) 700031
Registered ofice : P-34/A, Gariahat Road (South) Kolkata (W.B.) 700031

हमारी विशेषज्ञता

इस्पात संयंत्रो का निर्माण एवं रखरखाव, औद्योगिक संयंत्रो, भव्य इमारतों, अस्पतालों एवं विश्वविद्यालयों का निर्माण, पूर्वोत्तर इलाकों का निर्माण, राजमार्गों एवं पुलों का निर्माण, देश की हर तरह की अधोसंरचनों का निर्माण, प्रधान मंत्री ग्राम सडक योजनांतर्गत सडकों का निर्माण, इत्यादी ।

''हिंदी'' हमारा गौरव है. आइए, हम सब मिलकर सभी कार्य हिंदी में करें.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सेल SAIL

सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

इस्पात हेतु रिफ्रैक्ट्री...

हमारे उत्पाद

Magnesite Bricks

Magnesia Carbon Tape Hole Sleeve

DRY Ramming Mass

Mag - Chrome Bricks

Silica Bricks

Magnesia Carbon Bricks

L.D. Gunning Mass

आज़ादी का अमृत महोत्सव

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

घर बैठे
आसानी से ऋण पाएं

वैयक्तिक ऋण सिर्फ 3 आसान क्लिक में, 24X7.

bob World

आपकी दुनिया में
हम हैं सदा आपके साथ.

अभी डाउनलोड करें

www.bobworld.com

ऋण लें • खरीददारी करें • बचत करें • निवेश करें